ISSN: 2249-894X Impact Factor : 5.7631(UIF)
Volume - 8 | Issue - 7 | April - 2019
REVIEW OF RESEARCH
UGC APPROVED
International Online Multidisciplinary Journal Journal No.: 48514

मिथकीय नाट्य-काव्य-सूतपुत्र

Dr.Rajashree Tirvir
Dr.Rajashree Tirvir

प्रस्तावना : मिथक से सामान्यत: ऐसी कथाओं का अर्थ लगाया जाता है जो अलौकिक तथा अद्भूत होती हैं। इनमें कल्पना और यथार्थ का मेल होता है। ....

Editor - In - Chief - Ashok Yakkaldevi

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur-591302 Dist. Belgaum

International Online Multidisciplinary Journal

Review of Research

Save Tree. Save Paper. Save World

ISSN NO:- 2249-894X Impact Factor : 5.7631(UIF) Vol.- 8, Issue -7, April -2019

Content

Sr. No.	Title and Name of The Author (S)	Page No.
1	भारत– अमेरिकी सम्बन्धों में ईरान एक मुद्दे के रूप में इन्दु	1
2	मिथकीय नाट्य – काव्य – 'सूतपूत्र Dr.Rajashree Tirvir	9
3	Male Crisis In Anita Nair's The Better Man Dr Maria Jennivan Suganya A	17
4	A Study On The Influence Of Personality Traits On The Leadership Behaviour Of Individuals- A Study With Reference To Employees Of Various Levels Working In Chennai City Dr. K. Shanthi	21
5	Socio Economic Impact Of Tourism Sector In Tamilnadu Dr. N. Palanivelu and Prof. T. Kanagavel	27
6	A Statistical Modeling On Women Empowerment Ofself Help Groups In Thanjavur District Tamilnadu State, India. Dr.A. C. Deepa and Dr. P.Gurusamy	35
7	A Study On The Financial Performance Of Milk Producers' Co-Operative Societies In Kanyakumari District G. Anusha and Dr. Anisha Shainnie Thangam	41
8	Competency Of Teachers To Use Mobile Technology At High School Level Mr. S. Rajesh and Dr. N. Ramakrishnan	47
9	Management Of Working Capital And Its Impact On Profitability: An Analytical Study Of Select Oil Companies In Public Sector In India S. Narmadha Devi and Dr. M. Dhanusu	55

Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur-59 302 Dist. Belgaum

REVIEW OF RESEARCH

IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X

VOLUME - 8 | ISSUE - 7 | APRIL - 2019

... नाट्य–काव्य–'सूतपुत्र

... Tirvir

... –

...थक से सामान्यतः ऐसी कथाओं का अर्थ लगाया जाता है जो अलौकिक तथा अद्भूत होती हैं। इनमें ... और यथार्थ का मेल होता है। इन कथाओं को अतीत की घटनाओं से जोडा जाता है किंतु इनके ... होने के प्रमाण असंदिग्ध है, क्योंकि इनका संबंध प्राकृत मनुष्यों से न होकर अप्राकृत तथा दैविक ... है। इसलिए इन कथाओं को कपोल कल्पना समझा जाता था। प्राचीन काल से साहित्य मिथ का आधार ... है। क्योंकि इसके भीतर संपूर्ण सामाजिक अनुभव संचित होते हैं और साहित्य भी इन्हीं अनुभवों की ... का माध्यम है। साहित्य की सभी विधाओं में मिथक का प्रयोग सार्थक सिद्ध होता आया है। आधुनिक ... रचनाकारों ने मिथ में नया अर्थ भरते हुए, नये संदर्भ के साथ प्रस्तुत कर, जनजीवन को नई दिशा प्रदान ... प्रयास किया हैं। मिथकों का आश्रय लेकर समग्र जीवन की व्याख्या प्रस्तुत की गई है।

...नोद रस्तोगी द्वारा लिखित 'सूतपुत्र' नाट्य–काव्य का प्रकाशन काल १९७४ रहा है। इसका कथानक ... पर आधारित है। महाभारत के पात्रों में एक अंगारक पात्र कर्ण है और लेखक ने इस रचना में कर्ण के ... को उभारते हुए कर्ण के माध्यम से आज के युग की बात कहने का प्रयास किया है। इसका कथानक ... में, छः दृश्यों में विभाजित है।

पहले अंक के प्रथम दृश्य में कर्ण और राधा के मध्य वार्तालाप होता है। राधा को माँ, माँ पुकारते हुए ... के आँगन में आ जाता है और वहाँ पर राधा से पांडुपुत्र और कौरव शस्त्र प्रदर्शन कर अपनी शक्ति, साहस और शौर्य का परिचय देंगे कहते हुए स्वयं भी अपने अस्त्र–शस्त्र का कौशल दिखाने की बात ... तो राधा इस प्रदर्शन को राज–कुल तक सीमित बताकर, एक सूतपुत्र उनकी समानता कैसे कर सकता है ... का प्रयास करती है। किंतु कर्ण अपनी बात पर अडे रहता है और उस प्रदर्शन में भाग लेने के लिए ... माँगता है तो राधा भी विजयी होने का आशिर्वाद दे देती है।

दूसरा दृश्य रंग–स्थल का है, जहाँ पर द्रोणाचार्य, भीष्म, धृतराष्ट्र, विदूर आदि के समक्ष अर्जुन, दुर्योधन ... अस्त्र–शस्त्र प्रदर्शन को देखकर द्रोणाचार्य अपने परिश्रम को सफल मानते हैं। किंतु कर्ण उन राजकुमारों ... को साधारण कहते हुए वह खेल स्वयं भी दिखाने की बात कहता है। और अर्जुन को द्वंद्व युद्ध के लिए ... है। द्रोणाचार्य उसे शब्द वापस लेने को कहते हैं। कर्ण द्रोणाचार्य को अर्जुन को विश्व का श्रेष्ठतम ... के ध्येय से एकलव्य को दिक्षा दिये बिना ही गुरू दक्षिणा के रूप में उससे दाहिने हाथ का अंगूठा ... के प्रसंग का स्मरण करवाता है और अर्जुन की करतब को साधारण कहता है। इससे दुर्योधन के मन को ... है, वह प्रसन्न हो जाता है। किंतु अर्जुन को इस बात से क्रोध आ जाता है और वह कर्ण को द्वंद्व युद्ध

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College

करने के लिए ललकारता है। मगर भीष्म उसे शांती बनाये रखने को कहते हैं। द्रोण अर्जुन राजपुत्र है कहकर कर्ण
से उसका परिचय देने को कहते हैं, क्योंकि युद्ध और प्रेम केवल समान कुल में होते हैं। यह सुनकर तुरंत दुर्योधन
कर्ण को अंगदेश का राज्य देकर अंगराज बनाता है। फिर भी अर्जुन कर्ण के माता–पिता, उसके वंश का पता पूछता
है तो दुर्योधन पांडवो की जन्म–कथा की याद दिलाता है। और कर्ण सूतपुत्र न होकर अंगराज हो गया है तो द्वंद्व
युद्ध से अर्जुन को आपत्ती क्यों है पूछता है। कर्ण भी अपने जन्म की कथा बताकर जन्म देनेवाली नारी अवश्य
उच्च कुल की होगी जिसने लोक लाज वश उसे नदी में बहा दिया होगा कहता है।[३] यह सुनकर वहाँ उपस्थित
कुंती मूर्छित हो जाती है। अर्जुन उसे सूतपुत्र कहकर अपने पिता अधिरथ से रथ हांकने को सीखने की बात
कहकर चला जाता है। सब प्रस्थान करते हैं। केवल कर्ण और दुर्योधन रह जाते हैं। कर्ण स्वयं को सूतपुत्र कहकर
घृणा का पात्र समझता है तो दुर्योधन उसे अपना मित्र बनाना चाहता है। यह देख कर्ण उसे सुख–दुःख में साथ देने
का वचन देकर पांडु–पुत्रों का दर्प–मान चूर करने का प्रण लेता है।

तीसरा दृश्य अधिरथ और राधा के गृह का आंगन का है, जहाँ राधा और कर्ण के बीच का वार्तालाप है।
राधा दुर्योधन द्वारा लाक्षागृह में कुंती के साथ पांडु पुत्रों का दाह करवाने के कार्य को दुष्कर्म बताकर मानव धर्म को
श्रेष्ठ बताती है। उसी समय कर्ण दुर्योधन के साथ पांचाल जाने के लिए आज्ञा मांगता है, जहाँ द्रुपदसुता का
स्वयंवर होनेवाला था। राधा भी उसे द्रोपदी के साथ आने का आशीष देती है।

चौथा दृश्य भी उसी आँगन का है और तीसरे दृश्य की तरह राधा और कर्ण के मध्य का संवाद है। कर्ण
को आया देख राधा हर्ष से द्रोपदी कहाँ है, स्वयंवर में क्या हुआ पूछती है। कर्ण स्वयं को अभागा, अपमानित,
दुत्कारा गया हूँ कहकर स्वयंवर की घटना को बताता है कि शिशुपाल, जरासंध, शल्य जैसे महाबली–वीर धनुष्य
की प्रत्यंचा चढा न पाये तो सुयोधन के कहने पर कर्ण उठकर प्रत्यंचा चढाकर लक्ष्य–वेधने ही वाला था, उसी
समय द्रोपदी ने सूतपुत्र को कदापि न वरने की बात की। यह कहकर स्वयं को अपमानित मानता है। तथा पांडव
जीवित है और विप्र वेश में आये पांडवों में से अर्जुन ने लक्ष्य–वेध कर द्रौपदी को पाया है यह बताता है। तथा
द्रोण ने हमसे छल किया है, अर्जुन को पूर्ण विध्या दी है तथा औरों को अधूरी। भृगुवंशी मुनि परशुराम को गुरु
बनाकर दिव्यास्त्र पाऊंगा, चाहे उसके लिए छल का भी आश्रय लेना पडे तो लूंगा पर रण में अर्जुन को हराऊंगा
आदि अपनी माँ राधा के सम्मुख कहता है।

पाँचवाँ दृश्य मुनिश्रेष्ठ परशुराम के आश्रम का है। कर्ण और परशुराम के मध्य हुए वार्तालाप से यह स्पष्ट
होता है कि कर्ण ने स्वयं को ब्राह्मण–कुमार बताकर परशुराम से ब्रह्मास्त्र विद्या का ज्ञान प्राप्त किया है। किंतु जब
परशुराम विश्राम करने हेतु कर्ण के अंक में सिर रखकर सो जाते हैं तो कुछ समय के पश्चात् परशुराम निद्रा से
उठकर देखते हैं कि कर्ण की जंघा पर कीट के काटने से व्रण हुआ है तथा कीट मांस को कुतर–कुतर कर अंदर
धंसता गया है। यह देखकर परशुराम उस कीट को न हटाने का कारण पूछते हैं तो कर्ण बताता है कि अगर वह
कीट को हटाने का प्रयास करता तो परशुराम के विश्राम में बाधा पड जाती। कर्ण की इतनी सहनशीलता, आवेग
पर अधिकार तथा क्रोध पर विजय पाने की चेष्टा पर परशुराम को कर्ण के विप्र–सूत होने पर संदेह उत्पन्न हो जाता
है और वे कर्ण से उसके कुल–वंश के बारे में पूछते हैं तो कर्ण सूतपुत्र होने की बात बता देता है। इससे परशुराम
क्रोधित होकर कर्ण को शाप देते हैं कि वह अंतिम समय में तू ब्रह्मास्त्र विध्या भूल जायेगा।[४] तथा उसे पुत्रवत
मानने के कारण स्नेहवश यह भी बता देते हैं कि जब तक तेरे हाथ में अस्त्र– शस्त्र रहेंगे, अर्जुन क्या काल भी
तेरे सम्मुख नहीं टिकेगा। कर्ण भविष्य के बारे में पूछता है तो परशुराम कौरव–पांडवों के मध्य महाभारत युद्ध
अनिवार्य है बताते हैं।

छटे दृश्य से पता चलता है कि द्यूत–क्रीडा में पराजित होकर पांडव वनवास भोग रहे हैं तथा दुर्योधन की
ओर से कर्ण दिग्विजय करके लौट चुका है और यज्ञ के पश्चात् वह अर्जुन का वध करने की प्रतिज्ञा भी कर चुका
है। यह सुनकर राधा कर्ण से पांडु–पुत्रों

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur-591 302 Dist. Belgaum

देने को कहती है। द्वेष पांडवों–कौरवों में है कहकर कर्ण को प्रजा–पालन करने की सलाह देता
अपने अपमान, अत्याचार पर मौन नहीं रहना चाहता। उसके विरूद्ध विद्रोह करने की बात करता है।
के प्रस्थान के पश्चात् कर्ण अपनी उपासना में मग्न हो जाता है। उसी समय कर्ण के पिता सुर्यदेव
को संकट से सावधान करने हेतु आ जाते हैं और बताते हैं कि अर्जुन की सुरक्षा के ध्यान से उसके
बन तुझसे कवच–कुंडल माँगने आ जायेंगे। ऐसी विकट परीक्षा की घड़ी में भी कर्ण सफल होने
अपने पिता को आश्वस्त करता है। सुर्यदेव कर्ण को आशीष देकर चले जाते हैं।
के पश्चात् विप्र वेश में आये इंद्र दान–वीर कर्ण से कवच–कुंडल माँगते हैं। कर्ण तुरंत उसे
देता है। इससे इंद्रदेव प्रसन्न हो जाते हैं और कर्ण को वर के रूप में एकघ्नी शक्ति दे देते हैं,
से मानव और देव क्या महाकाल तक भस्म हो सकता है। किंतु इसका प्रयोग केवल एक बार कर
चले जाते हैं। इस तरह नाट्य–काव्य का एक अंक खत्म हो जाता है।
अंक भी छः दृश्यों में विभक्त है। पहला दृश्य कौरव सभा का है, जहाँ धृतराष्ट्र, विधूर, भीष्म, द्रोण,
और कर्ण आसनों पर बैठे हैं और कृष्ण पांडवों का दूत बनकर शांति संदेश बताते हैं तथा
पांडवों को आधा राज्य देने को कहते हैं। इसको दुर्योधन स्वीकार नहीं कर रहा है यह देख कृष्ण
की मांग करते हैं। किंतु दुर्योधन बिना युद्ध के सूत भर भी भूमि देने से इन्कार करता है। भीष्म
दुर्योधन को समझाने का प्रयास करते हैं। किंतु कर्ण दुर्योधन का पक्ष लेकर बोलता है। अंत में कृष्ण
जाते हैं। दुर्योधन युद्ध का प्रधान सेनापति भीष्म को बनाकर सैन्य–संचालन का कार्य सौंपता है तो
दित्व को तो स्वीकार करते हैं, मगर उनके नायकत्व में सूतपुत्र कर्ण युद्ध करें यह वे स्वीकार नहीं
सुनाते हैं। कर्ण भी उस निर्णय को स्वीकारते हुए युद्ध में भीष्म धराशायी होने तक अस्त्र–शस्त्र
से दूर रहने को राजी हो जाते हैं।
दृश्य कर्ण के आवास में कृष्ण और कर्ण के मध्य हुए संवाद का है। कृष्ण कर्ण की उसके जन्म की
बताकर पांडवों के अग्रज होने के नाते उनके पक्ष में आने को कहते हैं। पांडवों के शिविर में उसे
सम्मान, यश–कीर्ति, वैभव ही नहीं मिलेगा, बल्कि विश्व–सुंदरी द्रौपदी भी तुम्हारी अंकशायिनी बनेगी
किंतु कर्ण इस प्रस्ताव को अस्वीकार करते हुए अपने मित्र दुर्योधन का ही साथ देने के निर्णय पर
है।

दृश्य कर्ण और कुंती का सरिता तट पर वार्तालाप का प्रसंग है। कुंती कर्ण जन्म का रहस्य बताती
लाज वश उसे सरिता में बहा देने के अपराध को भी स्वीकार करते हुए, उसका परिष्कार करने हेतु
से स्वीकार कर पांडव सेना का नेतृत्व करने का प्रस्ताव रखती है। कर्ण यह अपना दुर्भाग्य समझता है
होकर भी सूतपुत्र कहलाया वह अपने माता–पिता एवं मित्र को त्यागने से इन्कार करता है यह देख
बनकर कर्ण से पांडु पुत्रों का प्राण–दान माँगती है। कर्ण अर्जुन के अतिरिक्त अन्य पांडु–पुत्रों का
उसे वचन दे देता है।
दृश्य में कर्ण और भीष्म का संवाद है। भीष्म कुरूक्षेत्र में धराशायी होकर शर–शय्या पर लेटे हुए हैं।
के समय कर्ण उनके पास आकर अस्त्र–शस्त्र धारण कर अर्जुन से प्रतिशोध लेने की भीष्म से आज्ञा
है। भीष्म को कर्ण के जन्म की कथा ज्ञात थी। इसी कारणवश वे स्वजनों में रक्तपात नहीं करवाना
इसलिए वे कर्ण को हमेशा हतोत्साहित करते थे यह बताते हैं। तथा निर्भय होकर युद्ध करने की प्रेरणा

पाँचवा दृश्य दुर्योधन के शिविर में दुर्योधन, कर्ण और मंद्रराज शल्य का वार्तालाप प्रसंग है। यह महाभारत
होती है। जयद्रथ, द्रोणाचार्य, भूरिश्रवा जैसे महारथी वीरगति प्राप्त कर चुके हैं। दुर्योधन पराजय
से आशंकित होता है तो कर्ण उसे धीरज देता है। शल्य को अपने रथ का सारथ्य स्वीकारने को कहता

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur 591 302 Dist. Belgaum

है, जैसे कृष्ण अर्जुन का सारथी है। दुर्योधन और कर्ण के अनुरोध पर वह सारथ्य स्वीकार करता है। किंतु एक शर्त भी रखता है कि अश्वों की वल्गायें हाथ में लेते ही वह मनचाही बात करेगा मगर कर्ण उसे प्रत्युत्तर नहीं करेगा। इस शर्त को कर्ण स्वीकार करता है।

छटा दृश्य महाभारत के सातवें दिन का है। कर्ण और अर्जुन के मध्य हुए युद्ध का प्रसंग है। जहाँ शल्य धर्मराज के कहने पर कर्ण को खरी-खोटी सुनाकर उसके मन को विचलित करने का प्रयास करता है। जब रथ का वाम-चक्र भुमितल में धंसता है तो कर्ण स्वयं धंसे चक्र को उठाने चला जाता है तो कृष्ण के कहने पर अर्जुन निशस्त्र कर्ण पर बाण चलाता है। कर्ण अर्जुन से धर्म-न्याय की बात करता है तो कृष्ण उसे अभिमन्यु की हत्या, पांचाली का अपमान, लाक्षागृह को भस्म करना आदि बातों का स्मरण करवाता है। फिर भी शल्य और अर्जुन अपने कुकृत्य पर कर्ण से क्षमा की याचना करते हैं। अंत में कर्ण कृष्ण की अनुमति से सूर्यलोक चला जाता है। इस तरह कर्ण की मृत्यु से नाट्य-काव्य समाप्त होता है।

कथात्मक आधार-

'सूतपुत्र' नाट्य-काव्य का कथानक 'महाभारत' के उन्हीं स्थलों से प्रभावित है, जहाँ कर्ण के जीवन से संबंधित घटनाएँ हैं। 'सूतपुत्र' के प्रथम अंक में से प्रथम, तृतीय, चतुर्थ तथा छटा दृश्य पूर्णतः कवि कल्पित है, जिसमें कर्ण और राधा के मध्य का वार्तालाप है। दूसरा दृश्य आदिपर्व के अध्याय १३४, १३५, १३६ पर आधारित है। पाँचवें दृश्य की कथा कर्ण पर्व का अध्याय ४२ से ग्रहित है। छटे दृश्य का एक प्रसंग वन पर्व में कुंडलाहरण पर्व के अध्याय ३००, ३०१, ३०२ पर आधारित है। दूसरे अंक का पहला दृश्य उद्योग पर्व के अनेक अध्यायों से संक्षिप्त रूप में ग्रहण किया गया है। दूसरा दृश्य भी उद्योग पर्व के अध्याय १४०-१४१ पर आधारित है। तीसरे दृश्य की कथा उद्योग पर्व के अध्याय १४५-१४६ से गृहित है। चौथा दृश्य भीष्म पर्व अध्याय १२२ पर आधारित है। पाँचवा दृश्य कर्ण पर्व के अध्याय ३२ और ३५ पर आधारित है। अंतिम छटे दृश्य की कथा कर्ण पर्व अध्याय ३६ से ३७ तक, ८९ से ९१ तक पर आधारित है।

परिवर्तन-परिवर्धन-

'सूतपुत्र' का कथानक महाभारत के संक्षिप्तीकरण के रूप में प्रस्तुत किया गया है। यथासंभव संपूर्ण घटनाओं को महाभारत के अनुकूल ही चित्रित किया है। किंचित् भावों को ही कवि ने परिवर्तित किया है। कथानक में कर्ण के जीवन से संबंधित स्थलों को ही चुना है। अनावश्यक प्रसंग को छोड दिया है।

i. राधा-कर्ण का वार्तालाप प्रसंग-

महाभारत में कर्ण का पालन-पोषण करनेवाली माँ राधा के साथ कर्ण का कहीं पर भी संवाद प्रसंग नहीं है। कर्ण केवल अपनी माता राधा का नाम उल्लेख जरूर करता है।[७] किंतु सूतपुत्र में ऐसे तीन दृश्य हैं, जहाँ राधा और कर्ण के मध्य वार्तालाप का प्रसंग हैं। राधा कर्ण को अस्त्र-शस्त्र प्रदर्शन को राज-कुल तक सीमित होना बताकर वहाँ जाने से रोकने का प्रयास करती है तो दूसरी जगह कर्ण को द्रौपदी स्वयंवर में जाकर द्रौपदी से विवाह करने का आशिर्वाद दे देती है। यह प्रसंग कवि की मौलिक उद्भावना है।

ii. अस्त्र-शस्त्र प्रदर्शन-प्रसंग-

'सूतपुत्र' में रंगभूमि में राजकुमारों द्वारा अस्त्र-शस्त्र प्रदर्शन किया जाता है तब कर्ण वहाँ पर उपस्थित होकर अर्जुन के करतब को साधारण बताकर स्वयं भी अस्त्र कौशल प्रकट करने को उद्यत हो जाता है। किंतु द्रोणाचार्य, भीष्म तथा अर्जुन उसे सूतपुत्र कहकर अपमानित करते हैं। द्रोण उसके कुल का परिचय पूछते हैं। किंतु

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur-591 302 Dist. Belgaum

[illegible] द्रोण वहाँ पर उपस्थित अवश्य होते हैं। किंतु कुछ बोलते नहीं हैं। किंतु 'सूतपुत्र' में द्रोण का हा [illegible] अपमानित करते हुए चित्रित किया है। यह देख कर्ण उन्हें एकलव्य प्रसंग की याद दिलाकर अर्जुन [illegible] मोह को बताता है। महाभारत में यह प्रसंग नहीं है। 'महाभारत' में कृपाचार्य कर्ण के शौर्य को [illegible] की आड लेकर हतप्रभ करते हैं। इसका उत्तर कृपाचार्य को दुर्योधन देता है। किंतु 'सूतपुत्र' में [illegible] ने कुल गोत्र को व्यर्थ कहकर पौरूष को ही वास्तविक गुण माना है।

[illegible] कर्ण को शाप देने का प्रसंग–

[illegible]–काव्य में रंगस्थल में अपमानित कर्ण दिव्यास्त्र का ज्ञान पाने हेतु परशुराम के पास जाता है और [illegible] बनकर छल से परशुराम से दिव्यास्त्र विद्या प्राप्त कर लेता है। किंतु जब परशुराम विश्राम हेतु उसके [illegible] रखकर सो जाते हैं। उस समय एक कीट आकर कर्ण की जंघा को कुतरते हुए अंदर धंसने से रक्त–[illegible] है। फिर भी गुरू के विश्राम में बाधा न पडे इसलिए कर्ण उसे हटाने की चेष्टा नहीं करता। [illegible] नींद से उठकर रक्त–स्त्राव देखते हैं। उन्हें कर्ण विप्र–पुत्र होने की शंका उत्पन्न होती है। यह देख कर्ण [illegible] भेद खोल देता है। इससे रूष्ट होकर परशुराम उसे अंतिम समय में ब्रह्मास्त्र विद्या भूल जाने का [illegible] है। महाभारत में राजकुमारों द्वारा शस्त्र प्रदर्शन के पश्चात् कर्ण का परशुराम से विद्या ग्रहण करने का [illegible] नहीं है। किंतु महाभारत युद्ध में संतप्त कर्ण शल्य को परशुराम द्वारा प्राप्त हुए शाप की कथा सुनाता [illegible] अर्जुन का हित चाहनेवाले इंद्र ने कर्ण के कार्य में विघ्न डालने हेतु कीडे के रूप में आकर जाँघ को [illegible] करने का वर्णन है।[९]

[illegible] कर्ण को सावधान करवाना–

[illegible] में कर्ण के समक्ष स्वयं सूर्यदेव आकर सावधान कराते हुए कहते हैं कि इंद्रदेव अपने पुत्र अर्जुन [illegible] ध्यान से भिक्षुक बन तुझसे अभेध्य कवच–कुंडल मांगेंगे तथा सूर्यदेव देव–कुल की इस प्रवंचना [illegible] प्रकट कर चले जाते हैं। किंतु महाभारत में सूर्यदेव कर्ण को ब्राह्मण वेश में स्वप्न में दर्शन देकर इंद्र [illegible]–कुंडल न देने के लिए सचेत करते हैं। फिर भी दानवीर कर्ण आग्रहपूर्वक कवच–कुंडल देने का निश्चय [illegible] देख सूर्य कर्ण को कवच–कुंडल देकर इंद्र की अमोघ शक्ति मांगने की सलाह दे देते हैं।[१०]

[illegible] कर्ण से कवच–कुंडल माँगने का प्रसंग–

[illegible] में विप्र वेश में आये इंद्र कर्ण से याचक बनकर कवच–कुंडल माँगते हैं तो कर्ण तत्क्षण वह [illegible] दे देता है। कर्ण अपनी सुरक्षा, अजेयता के उपकरण को भी दान में दे रहा है यह देख इंद्र प्रसन्न हो [illegible] और कर्ण को एकघ्नी शक्ति दे देते हैं। 'महाभारत' में ब्राह्मण के छद्मवेश में छिपकर आये इंद्र कर्ण से [illegible]–कुंडल माँगते हैं तो सर्वप्रथम कर्ण कवच–कुंडल देने से इन्कार करते हुए उसके बदले में घर बनाने के [illegible] सुंदर तरूण स्त्रियाँ, बहुत सी गौएँ, खेत आदि देने की इच्छा प्रकट करता है।[११] किंतु इंद्र उसे [illegible] केवल कवच–कुंडल माँगते हैं। कर्ण भी बदले में कुछ लेकर ही कवच–कुंडल देना चाहते हैं यह [illegible] इंद्र अपने वज्र के अतिरिक्त अन्य कोई भी आयुध माँगने को कहते हैं। तब कर्ण इंद्र की अमोघ शक्ति [illegible] और शर्त के अनुसार दोनों उन वस्तुओं का विनिमय करते हैं।

vi. श्रीकृष्ण शांति दूत बनकर पांडवों के लिए पाँच ग्राम माँगने का प्रसंग–

'सूतपुत्र' में श्रीकृष्ण कौरव सभा में शांति दूत के रूप में प्रस्तुत होकर वनवास से लौटे पांडवों को आधा राज्य देकर उन्हें फिर स्वीकारने को कहते हैं। किंतु दुर्योधन उनका अधिकार देने से इन्कार कर रहा है यह देखकर श्रीकृष्ण केवल पाँच ग्राम उनके लिए माँगते हैं। फिर भी दुर्योधन बिना युद्ध के सूत भर भी भूमि देने से इन्कार करता है। 'महाभारत' में श्रीकृष्ण पांडवों को उनका राज्य प्रसन्नतापूर्वक लौटा देने को कहते हैं। पाँच ग्राम माँगने का प्रसंग महाभारत में नहीं है।

vii. कृष्ण–कर्ण के मध्य का संवाद प्रसंग–

'सूतपुत्र' में कृष्ण कर्ण के आवास में आकर कर्ण को पांडव पुत्र बताकर पांडवों के पक्ष से युद्ध करने को कहते हैं। किंतु कर्ण अपने बंधुओं से बढ़कर भी मित्र दुर्योधन है बताते हुए कौरवों के पक्ष में ही रहकर युद्ध करने का निर्णय बताता है।[१२] कृष्ण कर्ण को पांडव पक्ष से मान–सम्मान, यश, कीर्ति, वैभव का प्रलोभन देते हुए द्रौपदी भी तुम्हारी अंकशायिनी होगी बताते हैं। मगर कर्ण स्वयं को भोगी–विलासी न होकर एक पत्नी–व्रत हूँ बताता है।[१३] महाभारत में कृष्ण द्वारा कर्ण को समझाने का प्रसंग कर्ण के आवास में न होकर श्रीकृष्ण कर्ण को रथ पर बिठाकर हस्तिनापुर से बाहर ले जाते हैं। तब कृष्ण कर्ण को पांडव पक्ष में आ जाने के लिए समझाते हैं।[१४] तथा कृष्ण द्वारा कर्ण की अंकशायिनी द्रौपदी भी बनेगी बताने का इस तरह का प्रस्ताव प्रसंग 'महाभारत' में नहीं है। सूतपुत्र में कर्ण स्वयं को एक पत्नी–व्रत हूँ बताता है। किंतु 'महाभारत' में उसका सूतजाति की कई कन्याओं से विवाह कर उनसे पुत्र और पौत्र भी पैदा होने की बात बताई गई है।[१५]

viii. सरिता तट पर कर्ण–कुंती संवाद प्रसंग–

'सूतपुत्र' में महाभारत में वर्णित प्रसंग के समान सरिता तट पर कुंती कर्ण को अपना प्रथम पुत्र बताकर उससे पांडव पक्ष में आने का अनुरोध करती है। किंतु कर्ण अस्वीकार करता है। उसकी अवहेलना करता है। तब कुंती याचिका बन पांडु–पुत्रों का प्राण–दान माँगती है। कर्ण अर्जुन के अतिरिक्त अन्य पांडु–पुत्रों का वध न करने का वचन देता है। 'महाभारत' में कर्ण पांडव पक्ष में आने से इन्कार करते हुए कुंती ने उसके पास आने का जो कष्ट उटाया उसके लिए वह स्वयं अर्जुन के अतिरिक्त अन्य पांडु–पुत्रों का वध न करने का निर्णय बताता है।[१६]

ix. कर्ण–भीष्म संवाद प्रसंग–

कुरूक्षेत्र में आधी रात में शर शय्या पर भीष्म सो रहे होते हैं तब उनसे मिलने कर्ण वहाँ पर उपस्थित हो जाता है। इस तरह का प्रसंग महाभारत में भी देखा जाता है। केवल उनके संवादों में कवि ने परिवर्तन किया है जैसे 'सूतपुत्र' में भीष्म कर्ण को सुयोधन से बात कर शांति–स्थापना करने की बात कहते हैं। कर्ण युद्ध की अनिवार्यता बताता है तो भीष्म सैन्य–संचालन करने को कहते हैं। किंतु कर्ण द्रोण के रहते नायक बनने से इन्कार करता है तथा उनके नेतृत्व में युद्ध करने के लिए भीष्म से आशिष माँगता है। 'महाभारत' में भीष्म कर्ण को पांडव उसके सगे भाई है बताकर उनसे मिल जाने को कहते हैं।[१७] कर्ण इसे अस्वीकार करता है तो उसे स्वर्गप्राप्ती की इच्छा से युद्ध करने की आज्ञा देते हैं।

x. कर्ण की मृत्यु का प्रसंग–

'सूतपुत्र' में शल्य के सारथ्य में जब कर्ण अर्जुन से युद्ध कर रहा होता है तब रथ का चक्र भूमितल में धंस जाता है तो कर्ण शल्य से धंसा चक्र भूमितल से निकालने को कहता है तो शल्य उसे उसका दास नहीं कहकर इन्कार करता है तो कर्ण स्वयं रथ से उतरकर धंसा चक्र निकालने का प्रयास करते हैं। 'महाभारत' में कर्ण शल्य से न कहकर स्वयं ही रथ से उतरकर धंसा चक्र निकालने का प्रयास करते हैं ... में निशस्त्र कर्ण

Principal, ... Mandal's Arts & Commerce College Khanapur 591 302 Dist. Belagum

चलाता है, तब कर्ण प्राण त्याग करते समय अर्जुन के उस कृत्य पर निंदा करते हुए धर्म-न्याय की है तब कृष्णा भीम को हलाहल देना, लाक्षागृह को भस्म कर पांडवों को मारने का प्रयास करना, तथा अभिमन्यु की मृत्यु आदि बातें बताकर कौरवों द्वारा किये गये अन्याय की याद दिलाते हैं। यह संवाद कर्ण पर अर्जुन बाण चलाकर मारने से पहले घटित होता है। नाट्य-काव्य में कर्ण प्राण-शल्य तथा अर्जुन कर्ण से अपने कुकृत्य पर लज्जा प्रकट करते हुए क्षमा की याचना करते हैं। शल्य तथा अर्जुन द्वारा क्षमा-याचना का प्रसंग नहीं है।

में कवि ने कर्ण की महानता के प्रति अन्याय किया है। विनोद रस्तोगी ने 'सूतपुत्र' नाट्य-से कर्ण का चित्र भारतीय जनता के हृदय में मित्रता, नैतिकता, दानशीलता तथा वीरता के प्रतीक क्रिया है। महाभारतकार ने सत्य की रक्षा करते हुए भी पांडवों के प्रति पक्षपात किया है। किंतु ने बड़ी निर्भिकता तथा निष्पक्षता से कर्ण के वास्तविक चरित्र को प्रस्तुत किया है। कवि ने कर्ण के का महत्व उसकी जाति, वंश अथवा गोत्र पर निर्भर न होकर उसके सत्कर्मों पर निर्भर होता है प्रयास किया है। प्रस्तुत नाट्य-काव्य का कथ्य प्रासंगिकता की दृष्टि से उल्लेखनीय है।

-

- एक पुरूष और, पूर्वकथन (प्रथम संस्करण की भूमिका)
मिश्र - महाभारत का काव्यार्थ - पृ सं - १३
अवश्य उच्च कुल की
दिया अवांछित रूप से-
समाज और वंश की;
-अपवाद से बचने को-
में मुझको बहा दिया
बना" - सूतपुत्र - पृ सं - २७
को लेकर तू आया था
नहीं!
ब्रह्मास्त्र-विध्या
अंतिम समय में।" - सूतपुत्र - पृ सं - ४६
द्रौपदी भी बनेगी-
यिनी
हो,
पर समान अधिकार है"-सूतपुत्र - पृ सं - ८०
ने प्रसन्न हो सेवा से-
मंत्र
कर सकती थी देवों का
आवाहन किया सूर्य का
मुझको-
किया;
-पुत्र बन तू जन्मा" -सूतपुत्र - पृ सं - ८७
धिरथिः कर्णस्त्वानभिवादये।"

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 10, October-2019, ISSN 2230-7540

The Globalisation of Indian Economy

Prof. J. B. Anchi*

M.M. Degree College, Belgavi, Karnataka

Abstract – Globalization (or globalization) describes a process by which regional economies, societies, and cultures have become integrated through a global network of communication, transportation, and trade. The term is sometimes used to refer specifically to economic globalization: the integration of national economies into the international economy through trade, foreign direct investment, capital flows, migration, and the spread of technology. Globalization as a spatial integration in the sphere of social relations when he said "Globalization can be defined as the intensification of worldwide social relations which link distant locations in such a way that local happenings are shaped by events occurring many miles away and vice – versa." Globalization generally means integrating economy of our nation with the world economy. The economic changes initiated have had a dramatic effect on the overall growth of the economy. It also heralded the integration of the Indian economy into the global economy. The Indian economy was in major crisis in 1991 when foreign currency reserves went down to $1 billion. Globalization had its impact on various sectors including Agricultural, Industrial, Financial, Health sector and many others. It was only after the LPG policy i.e. Liberalization, Privatization and Globalization launched by the then Finance Minister Man Mohan Singh that India saw its development in various sectors.

----------X----------

The concept of globalization was first introduced by Adam Smith, the father of modern economics in the year 1776 through the book titled, "The wealth of the nations", and since then the globalization has been liked yo-yo. In the days of yore, British, Chinese used to sell silk to the world and buy dynamites. The British used to come to India to buy condiments and in return India used to buy ammunities. So, the point is that globalization is not a new concept. In the good old days, globalization was even more prevalent because Indian spices, silk handicrafts, gold and silver jewellery etc., were ubiquitous everywhere in Europe. In the past, globalization meant quid pro quo i.e., one thing for another. But in the early 20th century, everything changed when France introduced the system of protectionism and every nation began to create boundries. Protectionism destroyed globalization in toto. But again in late 20th century the winds of globalization began to blow. Dr.Allen Green Span as well as Dr. Paul Walker began to egg the nation in favour of globalization and it was July 1, 1991, when India became the part and parcel of globalization and today every nation, which happens to be a pursuer of globalization derives plenty of basketful of fruits. The word "globalization" , which connotes where all the nations join their hands and create a kind of synergy to do business or any commercial , cultural or educational activities, in which every participant nation should be a beneficiary. Globalization in a nutshell is "one for all and all for none". The purpose behind globalization has been to open the portals for each and every nation in different fields. A nation can buy from other nationand sell to other nation.

There is an international market for companies and for consumers there is a wider range of products to choose from. Increase in flow of investments from developed countries, which can be used for economic reconstruction. Greater and faster flow of information between countries and greater cultural interaction has helped to overcome cultural barriers. Technological development has resulted in reverse brain drain in developing countries.

The outsourcing of jobs to developing countries has resulted in loss of jobs in developed countries. There is greater threat of spread of communicable diseases. For smaller developing nations at the receiving end, it could indirectly lead to a subtle from of colonization.

Consider global trade- India's share of world merchandise exports increased from .05% to .07% over the past 20 years. Over the same period China's share has tripled to almost 4%. India's share of global trade is similar to that of the Philippines an economy 6 times smaller according to IMF estimates.

India gained highly from the LPG model as its GDP increased to 9.7% in 2007-2008. In respect of market capitalization, India ranks fourth in the world. But after globalization, condition of

www.ignited.in

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Chanapur 591 302 Dist. Belgaum

agriculture has not improved. The share of agriculture in the GDP is only 17%. The number of landless families has increased and framers are still committing suicide. But seeing the positive effects of globalization, it can be said that very soon India will overcome these hurdles too and march strongly on its path of development. Economics experts and various studies conducted across the globe envisage India and China to rule the world in the 21st century. India, which is now the 4th largest economy in terms of purchasing power parity, may overtake japan and become 3rd economic power within 10 years. To conclude we can say that the modernization that we see around us in our daily life is a contribution of globalization.Globalization has both positive and negative impacts on various sectors of Indian Economy. So globalization has taken us a long way from 1991 which has resultant in the advancement of our country.

REFERENCE

Neela Tripati (2005). Foreign Trade and Investment in India, pp. 5

World Development Indication-World Bank Report 2009

Nirmala Banerji (2004) as quoted in pp-70 of Globalisation perspectives in women studies edited by Malini Bhattacharya

J.B. Valsan Arasu (2008). Globalisation and Infrastructural Development in India, pp. 12

Bhaumik T.K., The WTO, A discordant Orchestra – Page-35

Dr. Narendra Kumar Shukla, et. al., Globalization and its impact on Indian Economy

Rakesh Mohan (2005). "Indian Economy in the Global Setting", Reserve Bank of India Bulletin.

Anil Thankir, General Secretary, Indian Economic Association, as quoted in "Globalisation and its impact on Indian Economy".

Rakesh Mohan (2005). "Indian Economy in the Global Setting", Reserve Bank of India Bulletin

Corresponding Author

Prof. J. B. Anchi*

M.M. Degree College, Belgavi, Karnataka

jayshreeanchi419@gmail.com

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur-590 302 Dist. Belgaum

FIRST INTERNATIONAL GRCF / MARATHA MANDAL'S BELGAUM CONFERENCE

OCTOBER 12TH, 2019

Venue: M.M Arts, Commerce, Science & Home-Science College Belgaum

Event Organized by : Global Research Conference forum, Pune, India

Our Principal Academic Partner : M.M Arts, Commerce, Science & Home-Science College Belgaum

www.globalreserachconference.com

Participation Certificate

This is to certify that, **Prof. J. B. Anchi** *of* **MM's Degree College, Belgaum, Karnataka**.*has attended participated and presented a paper at the above conference.*

Paper title: "The Globalisation of Indian Economy"

Track: Management, Business, Economics and sustainability

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur 591302 Dist. Belg...

Session Chair
October 12.2019

Dr. Prakash Karmadkar
Conference Chairman

Dr. A.B. Pawar
Conference Director

Impact Factor – 6.625

E-ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

Peer Reviewed-Referred & Indexed Journal

January-February-March 2020

Vol.-7 Issue-1

Chief Editor -
Dr. Dhanraj T. Dhangar,
Assist. Prof. (Marathi)
MGV'S Arts & Commerce College,
Yeola, Dist – Nashik [M.S.] INDIA

Executive Editors :
Prof. Tejesh Beldar, Nashikroad (English)
Dr. Gajanan Wankhede, Kinwat (Hindi)
Mrs. Bharati Sonawane-Nile, Bhusawal (Marathi)
Dr. Rajay Pawar, Goa (Konkani)

This Journal is indexed in :
- University Grants Commission (UGC)
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmoc Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur-590 302 Dist. Belgaum

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIAT

मराठी विभाग

52	'चिनी मातीतील दिवस' : एक आकलन	डॉ. संगिता शेळके	250
53	मराठी दलित आत्मकथने : भूक आणि कथन	डॉ. प्रकाश जाधव	256
54	ग्रामीण साहित्यासमोरील आव्हाने	डॉ. पुरुषोत्तम जुन्ने	260
55	संयुक्त पुरोगामी आघाडी – एक राजकीय अभ्यास	डॉ.विक्रमराव पाटील	264
56	पोर्तुगीजपूर्व मराठी साहित्य : डॉ. वि. बा. प्रभुदेसाईकृत संशोधन	श्री. इराप्पा गुरव	269
57	संत ज्ञानेश्वरकृत चांगदेव पासष्टीतील दृष्टांत : एक अभ्यास	डॉ. धनराज धनगर	279
58	संत तुकारामांच्या अभंगातील लोकविचार	डॉ.रावसाहेब ननावरे	283
59	'प्रगत शैक्षणिक महाराष्ट्र कार्यक्रम' संदर्भात चाळीसगाव तालुक्यातील उच्च प्राथमिक शाळा स्तरावरील कार्यवाहीचा आढावा	श्री. ओमप्रकाश थेटे, डॉ. पंकजकुमार नन्नवरे	288
60	माध्यमिक स्तरावरील विद्यार्थ्यांना भूगोल विषयातील संकल्पनांच्या आकलनासाठी KWLH अध्ययन तंत्राच्या सहाय्याने होणाऱ्या अध्यापनाच्या परिणामकारकतेचा अभ्यास	डॉ.वंदना चौधरी	294
61	लाल लजपतराय यांचे अमेरिकेतील योगदान	डॉ.राजेंद्र रासकर	298
62	'ऋतुरंग' मधील निसर्गचित्रण	सौ. योगिता राजकर	301
63	महाराष्ट्र : कृषी पर्यटन आणि रोजगार निर्मिती स्वरूप	डॉ. विवेक चौधरी	306
64	'हाकारा' व 'ढोल' या नियतकालिकांतील स्फुट आदिवासी कविता	डॉ. ज्ञानेश्वर वाल्हेकर	310
65	मुखेड सत्याग्रह	डॉ. उज्वला भिरुड (नेहेते)	320
66	श्री.साईबाबासंस्थान,शिर्डी निर्मित पायाभूत सुविधांचे रोजगार विकासातील योगदान	प्रा. ज्ञानेश्वर रांधवणे	324
67	खानदेशी बालसाहित्यातील नव्या बोलीभाषा प्रयोगाचे प्रणेते : आबा महाजन	तुषार वडगावकर, डॉ. वासुदेव वले	330
68	अध्यापक विद्यालयातील प्रशिक्षणार्थ्यांच्या व्यक्तिमत्त्व व स्वआत्मविश्वास यांच्यातील सहसंबंधाचा अभ्यास	डॉ. संगीता भालेराव	334
69	ओवीगीतांचे संशोधन	डॉ. भास्कर शेळके	338
70	प्रसार माध्यमे व सामाजिक विकास	डॉ. आशालता जावळे	342
71	आचार्य विज्ञानभिक्षुंचा प्रमाण विचार – स्वतंत्र प्रज्ञेचा आविष्कार	डॉ. कलापिनी अगस्ती	346
72	स्त्रीजीवनाची गाथा : 'धग'	डॉ. रेखा वडिखाये	354
73	महात्मा गांधी आणि स्त्रीशिक्षण	डॉ. जे. एफ. पाटील	358
74	भारतीय अर्थव्यवस्था आणि प्रधानमंत्री मुद्रा बँक कर्ज योजना : आव्हाने आणि निरीक्षणे	डॉ. अकोश गोस्वामी	361
75	आदिवासींच्या विविध देवता	डॉ. अंजली मस्करेन्हस	366
76	शेतकऱ्यांची आत्महत्या आणि प्रसार माध्यमे	डॉ. दिनकर माने, भगवान सूर्यंवशी	371
77	'लैंगिक शोषण' या सामाजिक समस्येचा समाजशास्त्रीय अभ्यास	डॉ. कल्याण मोरे	376
78	गुजराती व बंजारा बोलीचा भाषिक अभ्यास	डॉ. विष्णू राठोड	381
79	साक्री तालुक्यातील अहिराणी बोलीच्या ओवीतून प्रतिबिंबित झालेले 'सप्तशृंगी' देवीचे चित्रण	डॉ. प्रकाश साळुंखे	390
80	कृषि-पाराशर-प्राचीन भारतीय जैविक शेती परिचय	प्रा. दर्शना सायम	393
81	लावणीतील कलगी –तुरा	डॉ.राजेंद्र वाटाणे	398
82	भारतातील आरोग्य सुविधांची उपलब्धता व खर्चाचे विश्लेषण	डॉ. एम. के. नन्नवरे	404

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur 591302 Dist. Belgaum

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.625 (2019),
Vol. 7, Issue 1
Peer Reviewed Referred & Indexed Journal
E-ISSN : 2348-7143
Jan. Feb. March. 2020

पोर्तुगीजपूर्व मराठी साहित्य : डॉ. वि. बा. प्रभुदेसाईकृत संशोधन

श्री. इराप्पा मनोहर गुरव
संशोधक विद्यार्थी
मराठी विभाग
गोवा विद्यापीठ, पणजी गोवा
भ्रमणध्वनी क्र. ७२०४२४६७१५
guravim@gmail.com

गोव्यावर आजवर अनेक आक्रमणे झाली. त्या त्या कालखंडात वेगवेगळ्या राजवटी नांदल्या. गोमंतकात नांदलेल्या पूर्व राजवटीच्या खाणाखुणा आजही गोव्यात पाहावयास मिळतात. पोर्तुगीज राजवटी पूर्व गोवा सांस्कृतिक दृष्ट्या खूपच पुढारलेला होता. याची जाणीव कृष्णादास शामाच्या 'श्रीकृष्णचरित्रकथा' यासारख्या ग्रंथाच्या तत्कालीन लोकप्रियेतून येते. पुढे पोर्तुगीजांची सत्ता जसजशी गोव्यावर प्रस्थापित होऊ लागली तसतसी गोव्यातील सांस्कृतिक व लोकजीवनात प्रचंड ढवळाढवळ झालेली दिसते. काहींनी देशप्रिय मानून मनात नसतानाही धर्मांतर केले. तर काहींनी आपला धर्मप्रिय मानून पोर्तुगीजांच्या जुलमी कारभाराला न जुमानता काही कुटुंबे आपल्या मुलाबाळांसह देवळातील देव्हाऱ्यावरील देवासह आणि घरातील ग्रंथासह त्यांनी भू-प्रदेश सोडला व बाजूच्या राज्याचा आश्रय घेतला. हे बाजूचे राज्य म्हणजे सध्याच्या कर्नाटकाचा किनारपट्टीचा भाग होय. त्याकाळी त्या भागात आदिलशाहीची सत्ता होती. हे गोव्यातील स्थलांतरित हिंदू मंगलोर, उडपी, कारवार, होन्नावर, जोयडा, लोंढा, रामनगर, खानापूर, बेळगाव या परिसरात स्थायिक झाले व पुरते या भागात सरमिसळून गेलेले दिसतात.

"निर्वाचित कुटुंबापैकी काहींनी तरी त्याकाळी गोव्यात प्रचलित असलेले पुराणग्रंथ आपल्याबरोबर नेले असने धार्मिक भावनेला धरून आहे. परंतु स्वग्रामाहून बाहेर पडल्यापासून दूरदेशी स्थिर होई पर्यंत जो घालमेलीचा कालावधी लोटला. त्यात ते ग्रंथ हळूहळू नष्ट होणे ही तितकेच स्वाभाविक आहे. ताडपत्रावर व बिनटिकाऊ कागदावर लिहिलेले ते ग्रंथ पुष्कळ काळापर्यंत टिकून राहणे मुळातच कठीण आणि तशातच ते काळजीपूर्वक सांभाळण्यासाठी लागणारे मन:स्वास्थ व अन्य सोयी यांचा अभाव यांचा विचार केला तर आज त्या ग्रंथाचा मागमूस लागने जवळ जवळ अशक्यच ठरते."१ या सर्व पार्श्वभूमीचा विचार करता गोव्यातील राजकीय स्थित्यंतरामुळे घाटमाथ्यावरील भागाचा खऱ्या अर्थाने लाभच झाला असे म्हटले तरी वावगे ठरणार नाही. कारण याच निर्वाचितापैकी त्यांच्या पुढच्या पिढीत मराठीतील जेष्ठ साहित्यिक निर्माण झाले. उदाहरणार्थ 'मोचनगड' सारखी मराठीतील पहिली ऐतीहासिक कादंबरी लिहिणारे श्री. रा. भि. गुंजीकर यांचे घेता येईल. ही गोव्याची सांस्कृतिक दृष्ट्या हानी म्हणता येईल. कारण गोव्यातील सांस्कृतिक उलथापालथित हा मानाचा पाट घाट माथ्यावरील सीमाभागाला जातो. त्यामुळेच हाच धागा पकडत प्रभुदेसाईंनी गोव्यातील पोर्तुगाली धामधुमीतून उरलेल्या मराठीच्या खाणाखुणा शोधण्याचा त्यांनी विडाच उचललेला दिसतो.

गोमंतकातील आख्यान काव्याचा प्रभुदेसाईनी घेतलेला शोध :

वास्तविक आख्यान काव्य हा प्रकार मराठी कवितेची पार्श्वभूमी ठरला गेला आणि त्यानंतर मराठी कवितेचे दालन समृद्ध झालेले दिसते. मध्ययुगीन मराठीचे हे वाङ्मय धन आज मराठी वाङ्मय प्रांतात आपली वेगळीच छाप जपून आहे. मराठीतील आख्यान काव्याने एखाद्या कथेच्या अनुषंगाने समाजावर प्रभावी संस्कार साधत जीवन मूल्यांची जपणूक केलेली दिसते. संताच्या कवितेने जसे मराठीत आपले प्रभावी स्थान निर्माण

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur-590 302 Dist. Belgaum

केले अगदी त्याच धरतीवर आख्यान कविता आपली वेगळी ओळख जपून आहे. आख्यान या शब्दातच सदर साहित्यप्रकाराचे स्वरूप दडलेले असून "आख्यानकाव्यामधील आख्यान हे संपूर्णता स्वतंत्र नसून त्याचा कथाभाग रामायण, महाभारत ही आर्ष महाकाव्ये आणि भागवतादी पुराणे यांच्या मधून निवडलेला व म्हणून ख्यात असतो. अशा एखाद्या निवडलेल्या कथेची काव्यातून केलेली अभिव्यक्ती म्हणजे आख्यान काव्य."२

प्रस्तुत आख्यान काव्याच्या या व्याखेतून मराठीतील आख्यान कवितेचे स्वरूप लक्षात येते. आख्यान कविता ही पूर्णता स्वतंत्र असे म्हणता येणार नाही तर उपरोक्त व्याखेत सांगितलेल्या प्रमाणे ती महाकाव्याच्या, पुराण ग्रंथाच्या एखाद्या उपकथानकातून गुंफलेली दिसते. व आख्यान कवितेचे वेधक उन्मेष धारण करत आवतरते. मग ज्या ज्या प्रदेशात ती कविता घडली त्या प्रदेशातील प्रादेशिकतेचे परिणाम घेऊन ज्यात भाषा, संस्कृती, राहणीमान, तत्कालीन जीवन शैली, ह्या सर्व गुणासह ती प्रकटते. हा आख्यान कवितेचा महत्वाचा विशेष म्हणावा लागेल.

हीच आख्यान काव्य परंपरा गोमंतकातील कवींनी वाढवलेली दिसते. गोमंतकातील आख्यान काव्यांचे प्रभुदेसाईनी संशोधन करून एका अर्थाने मराठीतील आख्यान काव्याचे गोमंतकाचे योगदान स्पष्ट केले आहे.

रुद्रेश्वर महात्म्याच्या कवीचा प्रभुदेसाईनी घेतलेला शोध :

प्रस्तुत रुद्रेश्वर महात्म्य या आख्यान काव्य ग्रंथाचा कवी कोण असावा ? याबदल विविध मतप्रवाह आढळतात. त्यासबंधी सर्व मतांचा अभ्यास करून प्रभूदेसाईनी आपले विचार मांडलेले दिसतात. रामदास प्रभू याविषयी लिहितात. "आठराव्या शतकाच्या शेवटी किंवा १९ व्या शतकाच्या सुरवातीला 'सोमदेव शर्मा' नावाच्या कुणा कवीचे 'रूद्रेश्वर महात्म्य'प्रसिद्ध झाल्याचे दिसते. हा कवी गोवेकर असावा."३ यावर आपले मत मांडताना प्रभुदेसाई लिहितात. "सोमदेव शर्मा हा कवी गोवेकर असावा या त्यांच्या म्हणण्याला आधार काय ? मूळ काव्य कुठे उपलब्ध झाले ? असे अनेक प्रश्न निरुत्तरीतच राहतात. काव्यारंभीच्या व समाप्तीच्या ओव्या, कवीची गुरुपंरपंरा, विविध स्थळाचा निर्देश इत्यादी आवश्यक माहितीच्या अभावी 'सोमदेवशर्मा' च्या या रुद्रेश्वर माहात्म्याचा परामर्ष घेणे अशक्य झाले आहे. मात्र रामदास प्रभू यांनी उदधृत केलेला काव्याशं हा प्रस्तुत शांतानंद शिष्यविरचित रुद्रेश्वर माहात्म्याच्या अंतरंगाशी मुळीच जुळणारा नाही एवढे मात्र नक्की."४

प्रभुदेसाईंच्या मते इतक्याशा पुराव्यावरून रुद्रेश्वर माहात्म्याचा लेखक हा सोमदेवशर्मा आहे असे ठामपणे म्हणता येणार नाही. कारण तो गोव्याचा कसा ? हा प्रश्न अनुत्तरित असावा एकूण रामदास प्रभू यांनी रुद्रेश्वर माहात्म्यासंबधीचे असे मांडलेले विचार प्रभुदेसाईना मान्य नसून श्री रुद्रेश्वर माहात्म्याच्या अंतरंगाशी मुळीच जुळणारा नाही अशी स्पष्टोक्तीही ते देतात.

प्रस्तुत काव्यात "श्री स्वामी शांतानंद | तयाचा आमोद प्रासीता झाला आनंद | तेणे प्ररमानंद भेटला ||"५ गुरुकृपेने मला हे सर्व साध्य झाले असून मी रुद्रेश्वराचे काव्य श्रोत्यांना ऐकवितो असे सांगतो आणि काव्याची सुरवात करतो. काव्यात कुठेच त्याच्या नावाचा उल्लेख सापडत नाही. प्रभुदेसाई लिहितात. "प्रस्तुत आख्यान काव्याचे नाव रुद्रेश्वर माहात्म्य असल्याचे निर्देश त्यात अनेक ठिकाणी आलेले आहेत. पहिल्या अध्यायाच्या प्रारंभी व शेवटी तसेच दुसऱ्या अध्यायापासून सहाव्या अध्यायापर्यन्त प्रत्येक अध्यायाच्या अखेरीस मात्र 'इतश्री रुद्रमाहात्म्य संपूर्णमस्तु' असा काव्य समाप्ती लेख आहे. अशा प्रकारे काव्य नाम स्पष्ट असले तरी

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur 581302 Dist. Belgaum

कवीने स्वताचा नामनिर्देश संपूर्ण कुठेही स्पष्टपणे केलेला आढळत नाही. मात्र कवीच्या गुरूंचे नाव 'शांतानंद' आहे एवढे निश्चित."६ यावरून शांतानंदाच्या शिष्याने त्याच्या आज्ञेवरुन ही रचना केली असून त्याचा रचनाकार कळण्यास मार्ग नाही इतके ज्ञात होते.

कवी या आख्यान काव्यात स्वताचा उल्लेख 'बाळकताना' असा करतो मात्र प्रभुदेसाई याविषयी लिहितात. "पाचव्या सहाव्या अध्यायाच्या शेवटी 'बालकताना' आणि सातव्या अध्यायाच्या अखेरीस फक्त 'बालक' एवढाच उल्लेख आहे. 'ताना' हे कवीचे नाव नसून 'तान्हा' या शब्दाचेच ते ध्वनि परिवर्तीत शब्दरूप आहे हे स्पष्ट होते."७

उपरोक्त प्रभूदेसाईंच्या मताचा अधिक विचार केल्यास 'बाळक तान्हा' असे गुरु समोर लहान बाळक अशा धारणेतूनच म्हणतो आहे. मात्र सदर ग्रंथात "प्रस्तुत कवीच्या नावाप्रमाणेच त्याचे आई वडील, कुलनाम, वास्तव्य, गुरुपदेश, जन्म, मृत्यू, काव्यनिर्मितीचा काळ, एकंदर ग्रंथनिर्मिती इत्यादी माहितीच्या बाबतीत नकारघंटाच आहे."८ त्यामुळे सदर आख्यान ग्रंथा बाबत कोणताच धागा स्पष्ट होत नाही. याकरिता 'हरवळे' येथील मंदिर परिसराचा आणि आसपासच्या भौगोलिक परिस्थितीचा अभ्यास करता तसा आजघडीला धागा सापडणे कठीण आहे. मात्र शांतानंदाचा उल्लेख खानापूरच्या लगत असलेल्या आसोगा या तीर्थक्षेत्राच्या ठिकाणी कोणी शांतानंद नामक साधू होऊन गेल्याचा आख्यायिकेत उल्लेख आढळतो. आसोगा या तीर्थक्षेत्र 'रामलिंगेश्वर' या नावाने ओळखले जाते. श्री रुद्रेश्वर आणि रामलिंगेश्वर ही देवस्थाने 'शंकर' या देवाशी निगडीत असून दोन्ही मंदिरे प्राचीन असून दोन्हीही मंदिराची रचना नदीकाठावर केली आहे. तसेच दोन्ही मंदिरातील अंतराचा विचार केल्यास ३०-४० मैल इतके होईल. आसोगा तीर्थक्षेत्राच्या पश्चिमेकडे सरळ रेषेत ३०-४० मैलावर श्री रुद्रेश्वर मंदिर आहे. त्यामुळे आसोगा या तीर्थक्षेत्राचा अभ्यासांती उलगडा झाल्यास रुद्रेश्वर महात्म्याच्या कवीचा शोध लागण्याची शक्यता वाटते.

'हरवळे' आणि श्री रुद्रेश्वर तीर्थक्षेत्रासंबंधी प्रभुदेसाईचे विचार :

या तीर्थक्षेत्राची उत्पत्ती सांगताना प्रभुदेसाई लिहितात "श्री रुद्रेश्वराचे सुप्रसिद्ध मंदिर असलेल्या गोमंतकातील साखळी तालुक्याच्या त्या गावाचे प्राचीन नाव 'हरवाळी' (ओवी क्र.१४१) किंवा 'हरवाळे' (ओवी क्र १५७) असे होते. या हरवाळी शब्दाची व्युत्पत्ती पुढील प्रमाणे आहे. :- हर (शंकर) + वाळी (वानर – विशेष), हरवाळी या स्थळांना 'भीमक्षेत्र' किंवा 'भीमतीर्थ' आणि 'त्रिवेणी' चे पवित्र जल एकत्र निर्माण करून तीर्थक्षेत्राचे महात्म्य प्राप्त करून दिले. उत्तर भारतातील प्रयागचा त्रिवेणी संगम (गंगा, यमुना, आणि गुप्त असलेली सरस्वती या नद्यांचा) प्रसिद्ध असला तरी प्रस्तुत काव्यात कवीला अभिप्रेत असलेले त्रिवेणी क्षेत्र म्हणजे 'हरवाळेच' होय. हे विविध संदर्भावरुन स्पष्ट होते. प्रस्तुत काव्यातील 'भार्गव धारणी' (ओवी क्र. २०६) तसेच प्रत्येक अध्यायाच्या अखेरीस येणारे 'भार्गव खंड' हे निर्देशही ऐतिहासिक आणि भौगोलिक दृष्ट्या लक्षणीय वाटतात."९

प्रभूदेसाईंच्या उपरोक्त मतानुसार 'हर' म्हणजे 'शंकर' आणि 'वाळी' म्हणजे माकड (हनुमानाच्या अचाट पराक्रमाने हे तीर्थ क्षेत्र वसल्याचे कवी सांगतो) या शब्दार्थातातून 'हरवाळी' असे शब्दरूप बनल्याचे

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur-591 302 Dist. Belgaum

दिसते. प्रस्तुत काव्यात भीमाची कथा गुंफलेली असून भीमाने ताम्रपर्णी, गोदा, भोगावती या नदयाचे पाणी एकत्र करून शिवाला स्नान घातल्याचा उल्लेख सदर काव्यात आला आहे. सदर काव्यात सात अध्याय अमून सातही अध्यायामध्ये वेगवेगळी कथानके, उपकथानके येतात. मात्र कवी प्रत्येक अध्यायाच्या शेवटी ती कथा हरवळे तीर्थ क्षेत्राशी जोडतो. हा 'रुद्रेश्वर माहात्म्य' कर्त्या कवीचा विशेष प्रभुदेसाईनी सदर संपादनात नमूद केले आहे.

आख्यान काव्यातील स्थानवर्णने व हरवळे या तीर्थ क्षेत्राविषयीचे कवी प्रेम :

भारतात सर्वत्र असलेल्या प्राचीन मंदिर, स्तंभ, नगरांचा अभ्यास करता लोकमानसात अनेक दंत कथा प्रचलित असल्याचे दिसते. यात विशेषत्वाने (रातोरात बांधले) पांडवांचा उल्लेख आढळतो. याचा अधिक विचार केल्यास पांडव वनवासात गेल्यानंतर त्यांच्यातील पराक्रम, प्रमाणिकता व न्यायी वृत्ती यामुळे जनसामान्याच्या मनात जागा निर्माण केली होती. ही प्रक्रिया परंपरागत पिढ्यांनपिढ्या चालत राहिली. यामुळेच पांडवाच्या बाबतीत 'रातोरात बांधले' हा शब्दप्रयोग रूढ झाला असावा. प्रस्तुत आख्यान काव्यात रुद्रेश्वर मंदीराबाबत शतानंद शिष्याचा हाच भाव दिसतो. तर प्रभुदेसाई लिहितात. "पांडवाच्या तीर्थयात्रेत उत्तरेकडील उज्जयनीचा (महाकालेश्वर) बदरीवन (बदरीकेदार) दक्षिणेकडे गोकर्ण, महाबळेश्वर, उडपी अशा अनेक पवित्र स्थळांना भेटी देऊन शेवटी ते 'हरवाळेच' लाच येऊन पोचतात. या त्यांच्या प्रवासात विभांडक, अंत्री, अगस्ती, मांडण्य अशा अनेक ऋषीमुनिंच्या भेटीगाठी होऊन पांडवाना त्यांचे कृपाशीर्वाद लाभतात."१०

यावरून कवीचे हरवळे या तीर्थ क्षेत्रावरील प्रेम तर स्पष्ट तर होतेच. मात्र एकंदरीत दक्षिणेच्या नदया, तीर्थक्षेत्राची नावे इत्यादि वर्णनाचा काव्यातील नामोल्लेखाचा विचार करता रुद्रेश्वर महात्म्याचा कवीचा वावर हा सध्याचा कर्नाटकाचा गोव्यालगतचा भूभाग व महाराष्ट्राच्या ताम्रपर्णीच्या काठापर्यंत वावर होता हे सिद्ध होते.

दंडकारण्याचा आख्यान काव्यातील उल्लेख :

प्रस्तुत ग्रंथात दंडकारण्याचा संदर्भ बऱ्याचदा येताना दिसतो. दंडकारण्य म्हणजे भारत वर्षातील कोणता भाग असावा याविषयी मोठा कुतुहलाचा प्रश्न निर्माण होतो. त्यामुळे नाशिक परिसर हाच केवळ दंडकारण्याचा भाग नसून सध्याचे महाराष्ट्र आणि कर्नाटक ही राज्ये म्हणजे दंडकारण्य असा अर्थ सायुक्तिक वाटतो.

शांतानंद शिष्याचे मराठी भाषा प्रेम :

सदर प्रकरणात मराठी भाषेबद्दलचे गौरवोदगार कवीने काढल्याचे प्रभुदेसाईनी नमूद केले असून ते लिहितात "कवीकृत मराठी भाषेचा गौरवपूर्वक निर्देश हे ही या दुसऱ्या अध्यायाचे आणखी एक वैशिष्ठ म्हणावे लागेल." याविषयी शतानंद शिष्याच्या काव्य पंक्ती पाहणे उचित होईल.

"जे देवाने सांगितले | तेची वदतो महाराष्ट्र बोले जे पूर्वी भीम क्षेत्री झाले | ते ऐका सकळीक ||"११

तर मराठी भाषेची थोरवी गाताना कवी म्हणतो.

"महाराष्ट्र भासेची वाटी सुरस | त्यात भरिला रुद्रेश्वर महात्म्याचा रस | तो श्रवण व्दारी प्राशावयास | कृपाळू होणे मजवरी ||"१२

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur-590 302 Dist. Belgaum

दिसते. प्रस्तुत काव्यात भीमाची कथा गुंफलेली असून भीमाने ताम्रपर्णी, गोदा, भोगावती या नदयाचे पाणी एकत्र करून शिवाला स्नान घातल्याचा उल्लेख सदर काव्यात आला आहे. सदर काव्यात सात अध्याय असून सातही अध्यायामध्ये वेगवेगळी कथानके, उपकथानके येतात. मात्र कवी प्रत्येक अध्यायाच्या शेवटी ती कथा हरवळे तीर्थ क्षेत्राशी जोडतो. हा 'रुद्रेश्वर माहात्म्य' कर्त्या कवीचा विशेष प्रभुदेसाईनी सदर संपादनात नमूद केले आहे.

आख्यान काव्यातील स्थानवर्णने व हरवळे या तीर्थ क्षेत्राविषयीचे कवी प्रेम :

भारतात सर्वत्र असलेल्या प्राचीन मंदिर, स्तंभ, नगरांचा अभ्यास करता लोकमानसात अनेक दंत कथा प्रचलित असल्याचे दिसते. यात विशेषत्वाने (रातोरात बांधले) पांडवांचा उल्लेख आढळतो. याचा अधिक विचार केल्यास पांडव वनवासात गेल्यानंतर त्यांच्यातील पराक्रम, प्रमाणिकता व न्यायी वृत्ती यामुळे जनसामान्याच्या मनात जागा निर्माण केली होती. ही प्रक्रिया परंपरागत पिढ्यांनपिढ्या चालत राहिली. यामुळेच पांडवाच्या बाबतीत 'रातोरात बांधले' हा शब्दप्रयोग रूढ झाला असावा. प्रस्तुत आख्यान काव्यात रुद्रेश्वर मंदीराबाबत शतानंद शिष्याचा हाच भाव दिसतो. तर प्रभुदेसाई लिहितात. "पांडवाच्या तीर्थयात्रेत उत्तरेकडील उज्जयनीचा (महाकालेश्वर) बदरीवन (बदरीकेदार) दक्षिणेकडे गोकर्ण, महाबळेश्वर, उडपी अशा अनेक पवित्र स्थळांना भेटी देऊन शेवटी ते 'हरवाळेच' लाच येऊन पोचतात. या त्यांच्या प्रवासात विभांडक, अंत्री, अगस्ती, मांडण्य अशा अनेक ऋषीमुनिंच्या भेटीगाठी होऊन पांडवाना त्यांचे कृपाशीर्वाद लाभतात."१०

यावरून कवीचे हरवळे या तीर्थ क्षेत्रावरील प्रेम तर स्पष्ट तर होतेच. मात्र एकंदरीत दक्षिणेच्या नदया, तीर्थक्षेत्राची नावे इत्यादि वर्णनाचा काव्यातील नामोल्लेखाचा विचार करता रुद्रेश्वर महात्म्याचा कवीचा वावर हा सध्याचा कर्नाटकाचा गोव्यालगतचा भूभाग व महाराष्ट्राच्या ताम्रपर्णीच्या काठापर्यंत वावर होता हे सिद्ध होते.

दंडकारण्याचा आख्यान काव्यातील उल्लेख :

प्रस्तुत ग्रंथात दंडकारण्याचा संदर्भ बऱ्याचदा येताना दिसतो. दंडकारण्य म्हणजे भारत वर्षातील कोणता भाग असावा याविषयी मोठा कुतुहलाचा प्रश्न निर्माण होतो. त्यामुळे नाशिक परिसर हाच केवळ दंडकारण्याचा भाग नसून सध्याचे महाराष्ट्र आणि कर्नाटक ही राज्ये म्हणजे दंडकारण्य असा अर्थ सायुक्तिक वाटतो.

शांतानंद शिष्याचे मराठी भाषा प्रेम :

सदर प्रकरणात मराठी भाषेबद्दलचे गौरवोदगार कवीने काढल्याचे प्रभुदेसाईनी नमूद केले असून ते लिहितात "कवीकृत मराठी भाषेचा गौरवपूर्वक निर्देश हे ही या दुसऱ्या अध्यायाचे आणखी एक वैशिष्ठ म्हणावे लागेल." याविषयी शतानंद शिष्याच्या काव्य पंक्ती पाहणे उचित होईल.

"जे देवाने सांगितले | तेची बदतो महाराष्ट्र बोले जे पूर्वी भीम क्षेत्री झाले | ते ऐका सकळीक ||"११

तर मराठी भाषेची थोरवी गाताना कवी म्हणतो.

"महाराष्ट्र भासेची वाटी सुरस | त्यात भरिला रुद्रेश्वर महात्म्याचा रस | तो श्रवण व्दारी प्राशावयास | कृपाळू होणे मजवरी ||"१२

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur-591 302 Dist. Belgaum

यासारख्या ओळीमधून मराठी भाषेसंदर्भात असलेल्या कवीमनातील आत्मविश्वास प्रतित होतो. महानुभाव संप्रदायातील कवींनी मराठी भाषेचा गौरव प्रारभी केलेला दिसतो. त्यानंतर ज्ञानदेवांनी मराठी भाषेत अमृतालाही पैजेनं जिकण्याचे सामर्थ्य आहे हे सप्रमाण सिद्ध केले. त्यानंतरच्या मराठीतील सर्वच कवींनी ज्ञानदेवांची री ओढलेली दिसते. मग केवळ याला रुद्रेश्वर महात्म्याचा कवी अपवाद नाही. एकनाथा सारखा कवी संस्कृत ऐवजी मराठीत ग्रंथ रचना करतो. तेव्हा सुरवातीला मराठीत म्हणून नावे ठेऊ नका अशी श्रोत्यांना प्रांजळ विनवणी करताना दिसतो. प्रभुदेसाई लिहितात "एकनाथासारख्या संत कवींना मराठीची वकिली करावी लागली. तसेच संस्कृताऐवजी प्राकृतात रचना केली म्हणून तिला नावे ठेऊ नका अशी विनवणी करावीशी वाटली."१३ संत एकनाथ लिहितात "प्राकृत म्हणूनि अमान्य | न करा हो श्रोतेजन प्रेमे ऐकता ईशान | स्वप्नातरी भेट देतो ||"१४ यावरून नाथानी श्रोत्यांना केलेली विनवणी लक्षात येते. मात्र शतानंदशिष्य "महाराष्ट्र भाषेची वाटी सुरस"१५ अशी आत्मविश्वासाची भाषा बोलताना जराही कचरत नाही. उलट मराठी रस संपन्न भाषा आहे. असे नमूद करतो. हे मराठीच्या मोठेपणाचे प्रतीक म्हणावे लागेल.

प्रस्तुत काव्यात पुराणात प्रसिद्ध असलेल्या कथा मर्यादितपणे तर कधी विस्ताराने रुद्रेश्वर महात्म्याचा कवी शतानंद शिष्याने चित्रित केल्या आहेत. मूळ पुराण कथा या समाजाला तत्वज्ञान, शिक्षण, बोध देण्याच्या उद्देशातून प्रकटल्या, लिहिल्या गेल्या आहेत. मग हेच तत्वज्ञान रुद्रेश्वर महात्म्यातून अवतरते. कवीच्या कथा रचनेत कथावगुंठित तत्वज्ञान ओतप्रोतपणे भरून आल्याने कथेच्या रंजकपणात भर पडलेली दिसते. एकूण अदभूतरम्यता, निसर्ग वर्णने, सत्ता, संघर्ष, निष्ठा, देवाचा अवतार, अहंकार, दांभिकपणा, यासारख्या असंख्य वैशिष्ठयातून सदर रुद्रेश्वर माहात्म्यातील आख्याने अवतरली असून तत्कालीन काळात जनसामान्याला लुभावणारा हा ग्रंथ ठरला असेल यात शंका नाही.

कृष्णदास शामाविरचित श्रीकृष्णचरित्रकथा :

श्रीकृष्ण ही व्यक्तिरेखा हिंदू धर्म संस्कृतीत भुरळ घालून राहिलेले व्यक्तिमत्व म्हणून परिचित आहे. मग अशा व्यक्तिमत्वाकडे कवी आकर्षिले जाने ह्यात काही नाविन्य नाही. केवळ मराठी आख्यान कवितेचाच विचार केला तर श्रीकृष्ण या व्यक्तिमत्वाला धरून मराठीतील आख्यान कविता रुंजी घालताना दिसते. कृष्णादास शामा विरचित श्रीकृष्णचरित्रकथा ही ग्रंथरचना देखील याचेच प्रातीधिक रूप ठरते. प्रभुदेसाई या ग्रंथाविषयी लिहितात "शामराज उर्फ कृष्णदास शामा याची 'श्रीकृष्णचरित्रकथा' ही उपलब्ध झालेली भागवतावरील मराठी टीका शके १४४८ मधील (इ.स.१५२६) म्हणजे ती एकनाथांच्या भागवतावरील टीकेच्या इ.स.१५७३ आधिचीच आहे. त्यावेळी महाराष्ट्रावर आणि पर्यायाने मराठी वाङ्मयावर झालेल्या परकियांच्या आक्रमणाचा परिणाम ध्यानात घेता प्रस्तुत 'श्रीकृष्णचरित्रकथा' या भागवताच्या उपलब्ध झालेल्या मराठी अवताराचे महत्व विशेषत्वाने जाणवल्याशिवाय राहणार नाही."१६ प्रभुदेसाईच्या मते 'श्रीकृष्णचरित्रकथा' हा ग्रंथ एकनाथपूर्व आहे हे त्यांनी सप्रमाण सिद्ध केले आहे. त्यामुळे शामराज उर्फ कृष्णदास शामा विरचित 'श्रीकृष्णचरित्रकथा' या ग्रंथाला अनन्य साधारण महत्व प्राप्त झालेले आहे. "१५ व्या शतकात कृष्णदासशामा या गोमंतकीय कवीने केळोशी येथील शांतादुर्गा देवस्थानात शके १४४९ वैशाख शुद्ध. १३ (म्हणजे २५ एप्रिल,१५२६) या दिवशी ग्रंथ रचायला आरंभ केला. या कवीने आपली माहिती व रचना काळ नमूद करून ठेवला म्हणूनच अन्य कोणत्याही कृष्णदासाच्या नावावर ही कविता खपली नाही."१७ मडगावकरांच्या मताचा इथे अधिक विचार

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College

करता 'श्रीकृष्णचरित्रकथा' या ग्रंथाचा कर्ता हा मूळचा गोमंतकातील असून कृष्णदास शामा या नावाचे कवी आणखी बरेच आढळतात त्यामुळे नेमका गोमंतकातील कृष्णदास कोण ? अशी शंका निर्माण होणे साहजिक होते. मात्र 'श्रीकृष्णचरित्रकथा' लिखित कृष्णदास शामाने सदर 'श्रीकृष्णचरित्रकथा' या ग्रंथात स्थळ काळाचा उल्लेख केल्याने यावर पडदा पडला आहे. प्रभुदेसाईंनी प्रस्तुत ग्रंथ संशोधनात कृष्णदास शामा किती? 'श्रीकृष्णचरित्रकथा' लिखित कृष्णदास कोणता? कृष्णदासाचा गुरु, कवीचे मराठी भाषा प्रेम, कवीची भूमिका, काव्य निर्मिती हेतू, काव्यातील सौंदर्य इत्यादींचे सदर ग्रंथातून संशोधन करून वाचकांना आस्वाद घेण्यास सोपा केला आहे.

काणकोण तालुक्यातील ऐतिहासिक महत्वाचे दोन 'टके' :

पोर्तुगीजांचे गोव्यातील आगमन हे गोव्याच्या धार्मिक सांस्कृतिक राजकीय स्थित्यंतरास कारणीभूत ठरले सुखासमाधानात आणि धार्मिक, सांस्कृतिक दृष्ट्या संपन्न असा गोवा इ.स. १७८८ साली पूर्णता खऱ्या अर्थाने पोर्तुगीजांच्या छायेखाली आला. गोव्यातच समाविष्ट असलेला हा 'काणकोण' चा प्रदेश पोर्तुगीजांच्या छायेखाली उशिराने आला असल्याने पोर्तुगीजांची निती इथे प्रभावी पने रुजलेली दिसत नाही. परिणामी मूळ हिंदू संस्कृतीच्या खानाखूणा तशाच जोपासल्या गेल्या. त्यामुळेच गोव्यात शिल्लक राहिलेल्या दस्ताऐवजामध्ये काणकोण तालुका अग्रेसर राहिला आहे.

भारतीय भाषाच्या उगमाचा शोध घेत असताना विविध साधनाचा आधार घेतला गेला यात प्रामुख्याने शिलालेख, ताम्रपट, कापडलेख, लेणी, जुने ग्रंथ इत्यादींच्या आधारे भाषेच्या उत्पत्ति संबंधी आजवर विचार मांडले गेले. या साधनाचा आजवर खूप उपयोग झाला आहे हे मान्य केलेच पाहिजे. यासंबधी प्रभुदेसाई लिहितात "आधुनिक भारतीय भाषांचे उगमकालीन आणि प्राचीन स्वरूप जाणून घेण्याचे एक महत्वाचे व विश्वासार्ह साधन म्हणजे कोरीव लेख. मराठी भाषेच्या उगमकाळाचा आणि प्राचीनत्वाचा विचार करताना संशोधकांनी आतापर्यंत प्रामुख्याने भर दिला तो मराठीशी संबंधित अशा ताम्रपट व शिलालेख या कोरीव लेखांवरच. यासंदर्भात आणखीही ज्या एका साधनाचा आवर्जून उल्लेख करायला हवा ते महत्वाचे साधन म्हणजे 'टका' पण मराठी भाषेच्या संदर्भात 'टका' या एका प्राचीन आणि अस्सल साधनाने आतापर्यंत विव्दानांचे लक्ष वेधले जाऊ नये, ही वस्तुस्थिती केवळ नवलाचीच नसून ततसंबधित अज्ञानाची निदर्शकही आहे असे खेदपूर्वक नमूद करायला हवे."१८ प्रभुदेसाई सारख्या एका जाणकार संशोधकाचे हे मत विचारात घेतल्यास 'टका' या प्राचीन साधनाचे मूल्य लक्षात येते.

टका म्हणजे काय ?

प्रभुदेसाईनी 'टका' या शब्दाचा अर्थ शोधत असताना महाराष्ट्र कोशकाराचा आधार घेतला आहे. "टका हा शब्द मराठीमध्ये अनेक अर्थांनी रूढ आहे. महाराष्ट्र 'शब्दकोश' कारांनी प्रस्तुत शब्दाचे जे अनेक अर्थ दिले आहेत ते असे आहेत १) एक नाणे, २) पैका, धन, द्रव्य ३) कर ४) १२० चौरस बिघे जमिनीचे एक माप, याच शब्दकोशात 'टका-टके' या शब्दांचे पुढील अर्थ दिले असून त्यांचाकडे विशेष ध्यान दिले पाहिजे ; १) निशाण , ध्वज. छत्र. २) प्रतिमा. ठसा ३) अग्रभाग. कोंब."१९ इत्यादि उपरोक्त मतानसार 'टका' हा शब्द अनेक अर्थांनी

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur 591 302 Dist. Belgaum

मराठीत रूढ आहे मात्र गोमंतकातील टका हा निशाण, ध्वज, छत्र, इत्यादि अर्थाशी सबंधित असून प्रभूदेसाईंनी यावर अधिक सखोल प्रकाश टाकण्यासाठी संतसाहित्याचा आधार घेतलेला आहे. ज्ञानेश्वरी आणि तुकोबाच्या गाथेत टका हा शब्द बऱ्याच ठिकाणी येतो आणि तो ही ध्वज, छत्र, इत्यादि अर्थाशी सबंधित. त्यामुळे 'पताका' या शब्दाचा अपभ्रंश होऊन प - ताका = टाका = टका असा शब्द रूढ झाला असावा असाही तर्क काढता येतो.

पैगीण येथील श्री वेताळाच्या 'टक्या'चा तपशील :

प्रभुदेसाई प्रस्तुत टक्याचा तपशील देताना लिहितात "पैगीण येथील श्री वेताळाच्या टक्याची लांबी ६३ इंच आणि रुंदी ५५ इंच असून कापडाच्या एकाच बाजूवर शिरोभागी तीन ओळींचा लेख व त्याखाली मध्यभागी वेताळ आणि चारही बाजूंना इतर बऱ्याच चित्राकृती आहेत. या 'टक्या' वरील निर्दिष्ट कालोल्लेख 'शके १७४५' (इ. स.१८२३) हा नव्या कापडावर जुन्या कापडावरून तो उतरून घेतला त्यावेळचा असून मूळ लेखाचा कालनिर्देश यांचा पूर्णपणे अभाव आहे. वेताळाच्या या दुसऱ्या 'टक्या'चे the art of Nepal (नेपाल की कला) या ग्रंथात दिलेल्या क्रमांक ८६ च्या 'महाकाल'-'पटा'शी मूर्तीचित्रणाच्या बाबतीत बरेच साम्य आढळते."२० प्रभुदेसाईनी टक्याचा तपशील सांगताना नेपाळ मधील टके व पैगीण येथील टके या दोहोतील साम्य शोधण्याचा प्रयत्न केलेला दिसतो. एकंदरीत प्रभुदेसाईच्या मताचा अधिक विचार करता मूळ लेखाचा काल निर्देश जरी आढळत नसला तरी ऐतिहासिक दृष्ट्या प्रस्तुत 'टके' हे महत्वपूर्ण आहेत हे निर्विवाद मान्य केले पाहिजे.

शमीपत्र आणि झुला :

काणकोण येथील श्री मल्लिकार्जुन देवस्थानातील शमीपत्र आणि झुला हे मराठीतील ऐतीहासिक साधन मानता येईल. कोकण प्रदेशात देव या संकल्पनेला मानवीजीवनात खूप वरचे स्थान असते. त्यामुळे ग्रामदैवत आणि अन्य देवता कुतूहल निर्माण करतात. या धार्मिकतेच्या कार्यापोटीच टका, शमीपत्र, झुला यासारख्या दस्ताऐवजातून मराठी भाषा विषयक तत्कालीन जडण घडणीची जाणीव होते याविषयी प्रभुदेसाई लिहितात. "श्रीस्थळ, काणकोण – गोवा येथील श्री मल्लिकार्जुनाच्या देवालयात विजयादशमीच्या सीमोल्लंघन प्रसंगी पुरातन काळापासून 'शमी-पत्र' नावाचा जो एक लेख दरसाल वाचला जातो तो मी येथे सादर करीत आहे. परंपरेने चालत आलेला हा लेख दरवर्षी जुन्या कागदावरून नव्या कागदावर नकलून घेताना त्या मजकुरात नव्या संवत्सराचा निर्देश व त्या वर्षीच्या दसऱ्याला जो वार (वासर) आला असेल त्याचा उल्लेख केला जातो बाकी सगळा मजकूर जुनाच असतो."२१ प्रभुदेसाई यांच्या या मताचा अधिक विचार केल्यास उपरोक्त लेखामध्ये 'टक्या' प्रमाणेच शमीपत्रामध्ये सुद्धा कालनिर्देशाचा नव्याने अंतर्भाव होताना दिसतो मात्र त्यातील कथानक आणि शब्दरचना पाहिल्यास ऐतिहासिक दृष्ट्या महत्वपूर्ण वाटतात. प्रस्तुत शमीपत्रामध्ये दसऱ्याच्या सणातील रिवाजा सोबतच मल्लिकार्जुन या दैवताचे महात्म्य लक्षात येते. मात्र इतके जरी असले तरी प्रस्तुत शमी पत्र कोणत्या साला पासून वाचले / लिहिले जाते. हे सध्यस्थितीत तरी सांगणे कठीण आहे.

झुला :

श्री मल्लिकार्जुन मंदिरात दर सोमवारी गाईले जाणारे गीत असून आरती सारख्याच पण निराळा हा प्रकार मानता येईल. याविषयी प्रभुदेसाई लिहितात. "झुला किंवा झुलवा हा पध्यप्रकार 'आरती' लाच अधिक

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur 591302 Dist. Belgaum

जवळचा वाटतो. मराठीतील प्रारंभीच्या वाङ्मयात ज्यांनी मोलाची भर घातली त्या महानुभाव पंथीयांनीही 'पाळणा' या गीतप्रकाराची रचना केली असून तो ही आरतीचाच विषय बनलेला आहे. हे विसरता कामा नये."२२ गीतकाव्य असे स्वरूप असलेला हा झुला काव्य प्रकार विशिष्ठ वेळी म्हणावयाची काही मंदिरामध्ये पद्धत आजही रूढ आहे. मात्र श्री मल्लिकार्जुन मंदिरात हे झुला वजा काव्य दर सोमवारी गाईले जाते. या काव्याचा परामर्श घेत असताना प्रभुदेसाई लिहितात. "एक प्राचीन गीतप्रकार म्हणून तर अशा प्रकारचे 'झुले' अभ्यासनीय आहेतच. पण त्यात आलेल्या पौराणिक व ऐतिहासिक स्थल, काल, व्यक्ती आदींच्या कुतूहल जनक निर्देशांमुळेही ते महत्वाचे वाटतात. अशा कितीतरी असंख्य पध्यरचना अजूनही उपेक्षित राहिलेल्या असतील."२३ यासारख्या गीतकाव्यामधून विशिष्ठ भागातील स्थळ महातम्याचा, व्यक्ती, काळ इत्यादींचा उलघडा होण्याची शक्य ता वाटते. त्यामुळे नाविन्यतेने अशा काव्यप्रकाराकडे पाहिल्यास नक्कीच काही तरी सापडेल यात शंका नाही. तर नव्या होऊ घातलेल्या संशोधकांना प्रभुदेसाईनी यासारख्या संशोधनातून दिशा दाखविलेली आहे.

तीर्थावळ :

प्रभुदेसाईनी तीर्थावळ काव्य संपादित करून एका अर्थाने भाषीक सलोख्याच्या दृष्टीने खूप मोलाचे कार्य केले आहे. तसेच भाषेला कोणत्याही राज्याच्या सीमा रोखू शकत नाहीत हे सिद्ध होते. गोमंतक म्हणजे सध्या स्थि त असलेला गोवा आपल्या डोळ्यासमोर येतो. मात्र भाषिक दृष्ट्या पाहिल्यास गोमंतकाच्या कक्षा विशाल होताना दिसतात. आज गोव्याची राजभाषा असलेल्या कोंकणीचाच विचार करावयाचा झाल्यास गोव्यालगत असलेल्या कर्नाटक राज्यातील खानापूर तालुक्यातील ५० हून अधिक गावे, संपूर्ण उत्तर कन्नड (कारवार) जिल्हा, मंगलोर, गोव्याच्या उत्तरेकडील कोकण, महाराष्ट्र पाहिल्यास तिथल्या भूभागावर कोंकणीचा वापर दिसतो. कर्नाटकात मराठीला सापत्न भाव दाखवत असताना कारवार जिल्ह्यात मराठी शाळा बंद पाडवून पद्धतशीरपणे मराठी आणि कोंकणी केवळ घरापुरता मर्यादित ठेवली गेली. एकंदरीत कारवार जिल्ह्यातील मराठीचे अस्तित्व पुसण्यास कर्नाटकातील व्यवस्था यशस्वी बनली आहे. मात्र मराठीच्या या खानाखुणा शोधून त्यावर नव्याने दृष्टी टाकण्याचे काम प्रभुदेसाई सारखा दूर दृष्टीचा संशोधकच करू शकतो. हे त्यांच्या तीर्थवळ या काव्यावर केलेल्या संशोधनातून सिद्ध होते.

प्रभुदेसाई या तीर्थावळ काव्याविषयी लिहितात "गोकर्ण मध्वमतानुयायी मठाचे आध्य संस्थापक श्रीमान जिवोत्तमतीर्थ हेही मराठीत काव्य करीत, असे उपलब्ध असलेल्या त्यांच्या 'तीर्थावळ' या काव्यावरून दिसते. गोकर्ण मठ शके १४९२ च्या सुमारास स्थापन केला. त्यांनी असेतुहीमाचल तीर्थ यात्रा केली होती. तीर्थावळ हे काव्य गोकर्ण, मंगळुर कडील बायकांच्या तोंडी खेळत आहे. ते केवळ तोंडीच राहिल्यामुळे त्यामध्ये पुष्कळच पाठांतरे व अशुद्धे दिसतात. हे गीत गोकर्ण मठाचे आधिपती, पर्तगाळ येथील श्रीमत द्वारकानाथ तीर्थ श्रीपाद वाडेर स्वामी यांनी भक्तजनाच्या तोंडून मिळवून संग्रहित केले आहे."२४ श्रीमत श्रीपाद वडेर यांच्या मुळेच श्रीमत जिवोत्तमतीर्थ हे मराठीत काव्य लेखन करीत होते हे सुज्ञ वाचकास कळते प्रस्तुत तिर्थावळ काव्य १८७ कडव्याचे असून त्याचे १४ विभाग करण्यात आल्याचे दिसते. प्रस्तुत काव्यात श्री वीरविठ्ठल हा केंद्रस्थानी असून श्री जिवोत्तम स्वामी तीर्थ यात्रेला हिमालयाकडे प्रयाण कर्ते झाले असता हिमालयातील गंडकी नदीत त्यांना धातुमिश्रित तीन मुर्त्या सापडल्या. पुढे त्या तीन मुर्त्या वेगवेगळ्या ठिकाणी स्थापन केल्या. अनुक्रमे गोकर्ण मठात स्थापन केलेल्या मूर्तीला भूविजय विठ्ठल, बसरूर मठात स्थापन केलेल्या मूर्तीला त्यांनी दिग्विजय

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur 591 302 Dist. Belgaum

Impact Factor – 6.625

E-ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

July-August-September 2020

Vol. 7 Issue 3 (B)

What are you thinking?
Who is burning?

.....

Chief Editor -
Dr. Dhanraj T. Dhangar,
Assist. Prof. (Marathi)
MGV's Arts, Science & Commerce College,
Harsul, Dist – Nashik [M.S.] INDIA

Executive Editors :
Prof. Tejesh Beldar, Nashikroad (English)
Dr. Gajanan Wankhede, Kinwat (Hindi)
Mrs. Bharati Sonawane, Bhusawal (Marathi)
Dr. Rajay Pawar, Goa (Konkani)

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Dictionary of Research Journal Indexing (DRJI)
- www.worldcat.org
- Cosmoc Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur

For Details Visit To :

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.625 (2019),
Vol. 7, Issue 3 (B)
Peer Reviewed Journal
E-ISSN : 2348-7143
July-Aug.-Sept. 2020

Impact Factor – 6.625 **E-ISSN – 2348-7143**

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

July-August-September 2020

Vol. 7 Issue 3 (B)

Chief Editor -
Dr. Dhanraj T. Dhangar,
Assist. Prof. (Marathi)
MGV's Arts, Science & Commerce College,
Harsul, Dist – Nashik [M.S.] INDIA

Executive Editors :
Prof. Tejesh Beldar, **Nashikroad (English)**
Dr. Gajanan Wankhede, **Kinwat (Hindi)**
Mrs. Bharati Sonawane, **Bhusawal (Marathi)**
Dr. Rajay Pawar, **Goa (Konkani)**

Our Editors have reviewed papers with experts' committee, and they have checked the papers on their level best to stop furtive literature. Except it, the respective authors of the papers are responsible for originality of the papers and intensive thoughts in the papers. Nobody can republish these papers without pre-permission of the publisher.

- Chief & Executive Editor

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur

SWATIDHAN INTERNATIONAL PUBLICATIONS

For Details Visit To : **www.researchjourney.net**

Cover Photo : Hathras Rape Case (U.P. India) Source : Internet

© **All rights reserved with the authors & publisher**

Price : Rs. 1000/-

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.625 (2019),
Vol. 7, Issue 3 (B)
Peer Reviewed Journal
E-ISSN : 2348-7143
July-Aug.-Sept. 2020

अनुक्रमणिका

अ.क्र.	शीर्षक	लेखक/लेखिका	पृष्ठ क्र.
	हिंदी विभाग		
1	आदिवासी केन्द्रित हिंदी उपन्यासों में स्त्री-संघर्ष	**डॉ.जयंतिलाल बारीस**	05
2	डॉ.घनश्याम भारतीकृत लोकजीवन की रामकथा में रामकथा और राम का स्वरूप	**सुमन राणी, प्रो.मन्जुनाथ अंबिग**	13
3	गुरुग्रंथसाहिब में संत नामदेव का स्थान	**अप्पासाहेब जगदाले**	19
4	साहित्य का सामाजिक परिप्रेक्ष्य	**डॉ. महेंद्रसिंग पवार**	23
5	पर्यावरण, साहित्य और संस्कृती	**सुफी शहेमीना सबा, डॉ.रविंद्रनाथ पाटील**	26
6	भारतीय संस्कृति में हिंदी भाषा की सार्थकता	**डॉ. कमलिनी पशीने**	31
7	भाषा संरचना के विविध रूप एवं राजस्थानी भाषा	**डॉ. साधना भंडारी**	35
8	प्रयोगवाद और अज्ञेय	**डॉ. अनुकूल सोलंकी**	48
9	मीरा कांत का नाटक 'नेपथ्य राग' : पुरुषों की दोगली मानसिकता का प्रतीक	**डॉ. नामदेव एमेकर**	52
10	प्रेमचंद के जीवन और व्यक्तित्व पर उर्दू का प्रभाव	**सुफी शहेमीना सबा, डॉ.रविंद्रनाथ पाटील**	55
11	विद्यानिवास मिश्र के ललित निबंधों में भारतीय संस्कृति	**डॉ. अशोक तायडे**	60
12	प्रेम : राजनैतिक दृष्टिकोण	**डॉ. दस्तगीर मुल्ला**	63
13	'मछली मरी हुई' और 'अग्निस्नान' में आधुनिक मैथिल स्त्रियों का संत्रास	**डॉ.प्रियंका कुमारी**	67
14	लॉकडाउन और मज़दूर	**डॉ. विजय कुमार**	73
	मराठी विभाग		
15	'मेघदुतम' महाकवी कालिदासांचे भाव आणि कल्पनांचे अनुपम आविष्कार	**प्रा.दर्शना सायम**	77
16	पोवारी बोलीभाषेतील साहित्य – एक दृष्टिक्षेप	**डॉ.रामलाल चौधरी**	83
17	संत तुकारामांच्या अभंगातील काव्यसौंदर्य	**डॉ. अंजली पांडे**	89
18	१९२० ते १९५० मधील नियतकालिकांचे वाङ्मयीन योगदान	**डॉ. मच्छिंद्र मालुंजकर**	94
19	बहिष्कृत भारत आणि सामाजिक क्रांती	**डॉ.श्रीराम गडकर**	98
20	अण्णाभाऊ साठे यांच्या कादंबरीतील जीवनविषयक दृष्टिकोन	**डॉ.सुनील निगडे**	106
21	अण्णा भाऊ साठे : बहुआयामी व्यक्तिमत्त्व	**डॉ. राजेश्वर दुडूकनाळे**	109
22	पुलंची रंगयात्रा : एक शोध	**डॉ.राजेंद्र नाईकवाडे**	117
23	कवी ग्रेस यांच्या कवितेतील 'स्त्री'रूपे	**डॉ.रामलीला पवार**	124
24	अरुण साधू यांच्या 'तडजोड' कादंबरीतील निवेदन व भाषाशैली	**श्री.गिरीधर काचोळे**	130
25	खानदेशातील व्यासंगी बालसाहित्यिक : डॉ. प्र. श्रा. चौधरी	**तृषार वडगावकर, डॉ. वासुदेव वले**	137
26	वाहरू सोनवणे, उषाकिरण आत्राम व भुजंग मेश्राम यांच्या कवितेतील स्त्री जाणीवा : एक शोध	**डॉ. मंगेश पाटील**	145

Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.625 (2019),
Vol. 7, Issue 3 (B)
Peer Reviewed Journal
E-ISSN : 2348-7143
July-Aug.-Sept. 2020

प्रेम : राजनैतिक दृष्टिकोण

डॉ.दस्तगीर एम. मुल्ला
अध्यक्ष, हिंदी विभाग तथा सह प्राध्यापक,
मराठा मंडल कला और वाणिज्य महाविद्यालय, खानापुर,
जिला - बेलगावी (कर्नाटक राज्य),
मो. नंबर- 87620 75786
Email :mulladm@gmail.com

राजनीति का मानव जीवन से महत्वपूर्ण संबंध बना रहता है ।प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल में भी राजनीति मानव जीवन का महत्वपूर्ण अंग बन गई है। "राजनीतिक चेतना ने प्रत्येक व्यक्ति की मानसिकता को प्रभावित किया है ।"(1) राजनैतिक तंत्र के आधार पर ही मानव -जीवन का ढांचा बनता है । "जिन राजनीतिक मूल्यों को लेकर किसी राष्ट्र का ढांचा तैयार किया जाता है उसी के अनुरूप उस देश में मानव प्रतिभा निर्मित होती है । राजनीति हमारे जीवन में इतनी घुलमिल गई है कि ,उसकी अति से न समाज बच सकता है, न लेखक बच सकता है ,न लेखन। "(2) प्रत्येक युग की राजनीति से साहित्यकार भी जुड़ा रहता है और वह राजनीति से प्राप्त मूल्यों को अपने साहित्य में स्थान देता है ।

आधुनिक काल में भारत का स्वतंत्र होना एक नए युग की शुरुआत मानी जाती है ।गांधीजी ने भारत को स्वतंत्रता दिलाने के लिए अहिंसा-तत्व के आधार पर एक ऐसी सेना बनाई जो बिना बंदूकधारी थी। इस अहिंसा की नींव प्रेम में जकड़ी हुई थी । सारी जनता देश को स्वतंत्र करने के लिए प्रेममय एकता की कड़ी में बंध गई और इसीके आधार पर देशभक्ति की भावना से ओतप्रोत होकर अंग्रेजों के अनेक जुल्म सहकर अंततः अपने देश को स्वतंत्रता दिलाई ।गांधीजी ने सभी जनता को रामराज्य बनाने का स्वप्न देकर देश को आजादी दिलाई । लेकिन स्वतंत्रता के पश्चात कुछ ही दिनों में गांधीजी की मृत्यु हो गई और स्वतंत्र भारत का कार्यभार पुराने राजनैतिक नेताओं के हाथों में आ गया ,जिन्होंने आजादी के लिए अपना योगदान दिया था । इन नेताओं में कुछ एक में आदर्शयुक्त गुण थे इसी कारण स्वतंत्रता के बाद के काल में कुछ समय तक नैतिक मानदंडों में संक्रमण उपस्थित नहीं हो पाया ।स्वतंत्रता के पश्चात से सन् 1962 ईसवी तक सामान्य जनता की राजनीति से कोई रुचि नहीं थी । वे केवल रामराज्य का स्वप्न पूरा होने की उम्मीद ही करते रहे । लेकिन जब सन् 1962 ईसवी में चीन ने भारत पर हमला किया तब सारी भारतीय जनता एक मोहासक्त स्थिति से जाग गई ।उसके पश्चात सन् 1964 ईसवी में नेहरू की मृत्यु ने भारतीय जनमानस में बहुतसा परिवर्तन उपस्थित किया । नेहरू की मृत्यु के पश्चात पुरानी पीढ़ी की नजरें कुर्सी पर स्थिर हो गई ।जैसे ही उनकी आंखें कुर्सी पर स्थिर हो गई वैसे ही "राजनीतिक परिवेश से राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, नैतिक तथा धार्मिक जीवन-मूल्य प्रभावित होने लगे ।"(3)

व्यक्ति का स्थान आत्मकेंद्रित हो गया । इसी कारण वह अपने अधिकारों के प्रति सजग होने लगा । प्रत्येक वर्ग का व्यक्ति अपने ही वर्गों के हितों और संघर्षों की चिंता में लग गया । जिसके कारण व्यक्ति ,वर्ग और राष्ट्र हितों में संघर्ष उत्पन्न हो गया और इसी संघर्षमय स्थिति के कारण प्रेममय भावनात्मक एकता को धक्का पहुंचा और इसका परिणाम सभी मनुष्यों में छा गया ।जिसके कारण प्रेम-तत्व अनेक संदर्भों में अपने मूल रूप में परिवर्तित हो गया और प्रेम के स्वरूप परिवर्तन का कारण राजनीति भी बन बैठी।

पुरानी पीढ़ी ने कुर्सी को प्राप्त करने के लिए भ्रष्टाचार, भाईभतिजावाद ,स्वार्थ, सांप्रदायिकता, अवसरवाद आदि का सहारा लिया और इसी वातावरण में सभी जनता को रंगा दिया । इसी कारण पुरानी पीढ़ी

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur

के आदर्श तो झूठे साबित हुए। वे अनुशासनहीन ही नहीं, बल्कि गैरकानूनी भी बन गए। लेकिन साथ-ही-साथ युवा शक्ति को भी वे अपने ही मार्ग पर चलाने लगे जिससे एक प्रकार से मानवीय संबंधों के बीच एक बड़ी खाई उत्पन्न हो गई। राजनीति से जुड़े तत्व स्त्री -पुरुष में आ गए। जिससे मानव -जीवन अस्तव्यस्त, शंकालु और निराशाजनक बन गया।

वर्तमान राजनीति का सिद्धांत भी यही है। "राजनीतिक परिदृश्य की सबसे बड़ी विसंगति राजनीतिक व्यवस्था का भ्रष्ट होना है। संसद से सड़क तक प्रत्येक स्तर पर पग- पग पर भ्रष्ट व्यवस्था है।"(4) सबसे पहले राजकीय नेता व्होट पाने के लिए भ्रष्टाचार का सहारा लेते हैं।वे लोगों को रिश्वत देकर अपने को बड़े पद पर आसीन करते हैं।इस भ्रष्टाचारी व्यवस्था का परिणाम जनता के बीच हर क्षेत्र में चल पड़ा है, जिससे प्रेम भी अछूता नहीं रहा है।आज प्रेम में जो व्यावहारिकता आई है, वह भ्रष्टाचार के कारण ही। आज का मनुष्य रुपयों को ही अधिक महत्व दे रहा है।जिसके पास धन है, उसीसे ही प्रेम-संबंध जोड़ रहा है। वर्तमान काल में भ्रष्टाचार ने एक व्यापार का रूप प्राप्त कर लिया है। इसी कारण आज नारी एक वस्तु बन बैठी है जो एक राजनीतिक अवसरवाद का नमूना है।और इसी अवसरवाद के कारण नारी को नेता और पूंजीपति अपनी भोगलिप्सा का शिकार बना रहे हैं। नेताओं की विलासी या भोग परक दृष्टि जनता में भी पनप रही है जिससे प्रेम में एक विकृति उत्पन्न हो गई है।पूंजीवादी पुरुष जगह-जगह पर नारी के साथ एक गंदे रूप में खिलवाड़ कर रहे हैं। भ्रष्ट नेताओं के चरित्र का असर जनता में उभरकर वह अमानवीय दिशा की ओर प्रवृत्त हो रही है।

भारत में चुनाव-प्रणाली लोकतंत्र के रूप में है।लेकिन यह लोकतंत्र आज सही स्थिति में पनप नहीं रहा है। आज अनेक नेता जनता को अपने पुराने परंपरागत ढांचे में ले जा रहे हैं।यह केवल अपने फायदे के लिए। अपने को चुनाव में जिताने के लिए वे संप्रदायिकता का बड़ा सहारा ले रहे हैं।अंग्रेज भी अपने फायदे के लिए हिंदू और मुसलमानों के बीच के आपसी प्रेम को खत्म कर उनमें सांप्रदायिक दंगे पैदा करते थे और स्वयं आराम से राज्य करते थे। इसीका परिणाम निकला पाकिस्तान का निर्माण। इस प्रकार भारत से अंग्रेज तो चले गए लेकिन उनका स्वरूप आज भी नेताओं के रूप में स्वतंत्र भारत में मौजूद है। आज भी नेता पाश्चात्यीकरण को जिंदा रखने में लगे हुए हैं। लेकिन इसीका परिणाम आज प्रत्येक क्षेत्र के साथ -साथ स्त्री -पुरुष प्रेम संबंध में गहरा होता जा रहा है।"सांप्रदायिकता के कारण आज प्रेम में जड़वादिता का रूप प्रारंभ हुआ है।"(5) आज प्रेम धर्म और जाति के कट्टर कटघरे में खड़ा हुआ है।स्त्री -पुरुष प्रेम संबंध में जाति और धर्म ने बहुत ही बड़ा स्वरूप प्राप्त कर लिया है ,जो दो कोमल हृदय के प्रेमी- युगल के लिए संकट का कारण बन बैठा है।

आधुनिक काल प्रेम में जो अविश्वास तथा अस्थिरता की भावना ने जन्म लिया है उसका कारण भी राजनीति को माना जा सकता है।राजनीतिक नेता अपना चुनाव जीतने के लिए जनता को बड़े-बड़े आश्वासन, सपने दिखाते हैं। जनता उन्हीं के वायदों के भूल-भुलैए में खो जाती है।जैसे ही नेता विजय के रूप में अपना स्वार्थ पूरा करते हैं वैसे ही वे अपने पुराने वायदों को भूल जाते हैं। जिसके कारण जनता कुंठित, निराश , संभ्रमित,दिगभ्रमित बन जाती है।यही स्थिति अविश्वास और धोखे को प्रोत्साहन देती है। प्रेम में भी व्यक्ति अपनी कामुक प्रवृत्ति की पूर्ति के लिए अपने प्रेम-साथी को अपनी मीठी -मीठी बनावटी बातों की गिरफ्त में कर उसका सब कुछ हड़प लेने के पश्चात उसे धोखा देता है।वह अपने साथी को अपना काम पूरा होने पर एक ऐसी गहरी खाई में धकेल देता है जिससे वह कभी ऊपर उठ ही नहीं सकता। आज अविश्वास की भावना स्त्री -पुरुष तथा पति-पत्नी प्रेम संबंध में जोरों पर है। राजनीति ही प्रेम में अस्थिरता का रूप खड़ा करती है।आज की राजनीति दलबदलू की स्थितिवाली बन गई है। "आज दलबदल और जोड़-तोड़ की नीति एक स्वार्थ , सिद्धांतहीनता को जन्म देती है ,आम आदमी को मुर्दा बना देती है।"(6) हर नेता अपने अधिकार और स्वार्थ की पूर्ति के लिए अपने दल में अस्थिरता का निर्माण करता है। अस्थिरता निर्माण होने का कारण है जब तक अपने दल के नेताओं के बीच प्रेम और विश्वास बना रहता है तब तक वह दल अपना शासन ठीक ढंग से

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce Colleg
Khanapur

चलाता है ।अवसरवादीता और स्वार्थ के कारण अचानक नेता एक दल से दूसरे दल से जा मिलते हैं और एक नए दल को शासन में लाते हैं। लेकिन यह शासन भी फिर अस्थिरता के भंवर में फंस जाता है। इसीके परिणाम स्वरूप प्रेम परिस्थिति और परिवेश के जाल में फंस कर अस्थिरता का रूप ले रहा है। स्त्री-पुरुष के बीच प्रेम का स्थिर रूप ठीक नहीं रहा है। इसी अस्थिरता के कारण एक से प्रेम दूसरे से शादी ,एक से प्रेम फिर दूसरे से प्रेम संबंध जोड़ना ,एक के साथ विघटन उसके पश्चात दूसरे के साथ पुनर्विवाह आदि अस्थिर प्रेम के स्वरूप दिखाई पड़ते हैं।बलवान नेताओं के दबाव तथा स्वार्थ परक नीति के कारण अन्य नेता अपने ही दल से विद्रोह करते हैं। ऐसा ही विद्रोह का परिणाम परिवार में उपस्थित हो गया है। माता-पिता से बच्चे अपनी इच्छा पूर्ति के लिए विद्रोह करते हैं।आज नारी भी शिक्षित बन चुकी है ,वह अपने अधिकारों और समानता के प्रति सजग बन गई है ।जब उसे अपने अधिकार प्राप्त नहीं होते तब वह अपने पति से विद्रोह का रूप अपना रही है। प्रेम विद्रोह का रूप अपना बैठा है।

आज देश की जनता के लिए योजनाएं बनाने का कार्य नेता लोग करते हैं ।लेकिन इनकी नीति दोहरी रहती है ।"राष्ट्रीय जीवन के प्रति नेतागण यह मानने लगे हैं कि, कहो नीति, सुनो नीति, लिखो नीति, पर करो अनीति, यही आज की राजनीति।"(7) सामान्य जनता से दिखावे के लिए नेता पूंजीपतियों के एकाधिकार को कम करने या समाप्त करने की योजनाएं बनाते हैं। लेकिन व्यावहारिक स्तर पर फैली अनीति (जो राजनीति का अनुकरण ही है)के कारण योजनाएं वास्तविक रूप प्राप्त नहीं कर पाती, जिससे पूंजीपतियों को फिर से योजनाओं का लाभ होता है , जिससे नेता और पूंजीपति दोनों खुश हो जाते हैं। "वर्तमान भारतीय राजनीति के सफेद हाथी काले धन पर ही पलते हैं।"(8) सरकार के लिए पैसा पूंजीपति ही देते हैं और सरकार इसी कारण उनका ही अधिक फायदा करती है। इसी योजना के अंतर्गत सामान्य जनता उन्हीं के हथकंडों के नीचे पीड़ाग्रस्त बन जाती है। राजनीतिक योजना के अंतर्गत बेरोजगारी, गरीबी हटाने के बड़े-बड़े कार्यक्रम बनाए जाते हैं। लेकिन वास्तविक रूप में बेरोजगारी और गरीबी बढ़ती ही जा रही है। जिससे स्त्री- पुरुष प्रेम संबंध में एक गहरी दरार उत्पन्न हो गई है ,जो अर्थ के अभाव के कारण मिट नहीं पा रही है। अर्थ के अभाव के कारण दांपत्य जीवन के रिश्ते प्रेमहीन बनकर संकटग्रस्त बनते जा रहे हैं। अपने आर्थिक संकट को दूर करने के लिए नारी घर से बाहर कदम रख रही है।उसके आत्मनिर्भर होने और पारिवारिक आर्थिक संकट को दूर करने की सहायता से सामाजिक मान्यताओं, आदर्शों पर प्रभाव पड़ा है। स्त्री स्वयं के अस्तित्व को स्थापित करने में लगी है। जिससे उसमें एक अहं भावना की स्थिति पैदा हो गई है। इसी कारण स्त्री -पुरुष के जीवन में समझौता एक समस्या बन गई है। और परिवार अर्थ के अभाव या स्त्री आत्मनिर्भरता के कारण विघटन की स्थिति में पहुंच गया है। इसलिए "सारी आर्थिक मूल्यहीनता की जड़ में यही राजनैतिक मूल्यहीनता निहित है।"(9) सरकार की आर्थिक नीति के कारण स्त्री- पुरुष प्रेम संबंध में परिवर्तन उपस्थित कर दिया है।

इस प्रकार प्रेम के राजनैतिक दृष्टिकोण के प्रति कहा जाता है कि, नेता के व्यक्तिवादी दृष्टिकोण के कारण आज समाज में पाप-पुण्य की धारणा, ईश्वर में आस्था, सामाजिक रीति- रिवाज तथा व्यक्ति से जुड़े नैतिक मानदंड नए दृष्टिकोण में अपनी जगह स्थापित कर रहे हैं। यही "राजनीतिक व्यवस्था विशेष प्रकार से प्रेम संबंध के लिए अनुकूल सिद्ध होती है।"(10) राजनीतिक व्यवस्था के परिणाम स्वरूप स्त्री -पुरुष या पति-पत्नी प्रेम-संबंध में व्यावहारिकता, अविश्वास, स्वच्छंदता, सांप्रदायिकता, स्वार्थ, आर्थिक विवशता, अस्थिरता, कुंठा, विद्रोह, निराशा, अहं, पीड़ा, विघटन तथा अमानवीकरण आदि की स्थिति पैदा हो गई है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. डॉ वासुदेव शर्मा -साठोत्तरी हिंदी कहानी :मूल्यों की तलाश पृष्ठ सं. -18 शारदा प्रकाशन, नई दिल्ली प्र. सं.1986

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce Colleg
Khanapur

2. डॉ रमेश देशमुख- आठवें दशक की कहानियों में जीवन मूल्य पृष्ठ सं. 145 विद्या प्रकाशन, नई दिल्ली प्र. सं. 1994
3. डॉ वासुदेव शर्मा -साठोत्तरी हिंदी कहानी : मूल्यों की तलाश पृष्ठ सं. 117 शारदा प्रकाशन नई दिल्ली प्र.सं.1986
4. डॉ पुष्पपाल सिंह -समकालीन कहानी :युगबोध का संदर्भ पृष्ठ सं. 229 नेशनल पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली प्र. सं. 1986
5. डॉ. हेमेंद्र कुमार पानेरी -स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास मूल्य संक्रमण पृष्ठ सं. 236 संदीप प्रकाशन जयपुर प्र. सं. 1974
6. डॉ. रमेश देशमुख -आठवें दशक की कहानियों में जीवन मूल्य पृष्ठ सं. 145 विद्या प्रकाशन प्र.सं.1994
7. वही -पृष्ठ सं.147
8. वही -पृष्ठ सं.147
9. वही -पृष्ठ सं. 173
10. हेमराज निर्मम -हिंदी उपन्यासों में मध्यवर्ग पृष्ठ सं. 96 विपुल प्रकाशन साहिबाबाद प्र. सं. 1978

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur

RNI. MAHMUL02805/2010/33461 IMPACT FACTOR 6.20 ISSN 0976-0377
Interlink Research Analysis Issue:XXII, Vol. IV, July 2020 To Dec. 2020

INDEX

Sr. No	Title for Research Paper	Page No
1	Study on Potential of Chlorothalonil Fungicide Against Leaf Spot of Turmeric Caused by *Colletotrichum capsici* **A. C. Dhole**	1
2	Economic Reforms and Foreign Trade Policy : An Overview **Dr. Balaji G. Kamble**	5
3	Cultural, Social and Gender Bias in Doris Lessing's The Grass is Singing **G. Ramana Reddy**	10
4	Analytical Study of Causes of Less Female Participation in Sports in Maharashtra **Ashokkumar J. Tiwari, Dr. O. P. Aneja**	15
5	विदर्भातील प्राचीन वाङ्मय व वाङ्मयप्रकार **डॉ.संतोष पां. बनसोड**	25
6	राजर्षी शाहू महाराज यांचे सामाजिक योगदान **वनिता विठ्ठलराव जाधव**	29
7	महात्मा फुले यांचे सामाजिक विचार **जी. सी. चव्हाण**	36
8	राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराजांचा स्त्री विषयक दृष्टीकोन **डॉ. विश्वास शामराव कंधारे**	42
9	डॉ. वि. बा. प्रभुदेसाई यांच्या भाषा अभ्यासाचे स्वरुप **प्रा. आय. एम. गुरव**	46
10	नगरपरिषदेतील चतुर्थश्रेणी कर्मचाऱ्यांच्या सामाजिक स्थितीचा अभ्यास **एस. एन. सातव, प्रा. डॉ. रामचंद्र भिसे**	52

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur 59 307 Dist. Belgaum

RNI. MAHMUL02805/2010/33461
Interlink Research Analysis
IMPACT FACTOR 6.20
ISSN 0976-0377
Issue : XXII, Vol. IV, July 2020 To Dec. 2020

डॉ. वि. बा. प्रभुदेसाई यांच्या भाषा अभ्यासाचे स्वरुप

प्रा. आय. एम. गुरव
मराठी विभाग,
मराठा मंडळ कला व वाणिज्य महाविद्यालय,
खानापूर

9 Research Paper - Marathi

प्रस्तावना:

प्रस्तुत प्रकरणात डॉ. वि. बा. प्रभुदेसाईंनी भाषिक अभ्यासावर आधारित मांडलेल्या विचारांचा परामर्ष घेतला आहे. प्रभुदेसाईंनी सुरवातीच्या काळात म्हणजे विद्यार्थी दशेत असताना पीएच.डी. च्या शोध प्रबंधात तत्कालीन गोव्यातील स्थानिक बोलीचा व ग्रांथिक मराठीचा परस्पर संबंध शोधत कोंकणी मराठी चे शास्त्रीय दृष्टीकोणातून संशोधन प्रस्तुत विषयात मांडले आहे. प्रभुदेसाईंनी कोंकणीची भाषेची जडण घडण कशी होत गेली, गोव्यात नांदलेल्या अनेक राजवटी कशा स्वरूपाचे संस्करण इथल्या लोकजीवनात करुन गेल्या याचा परिपाठ त्यांनी वाचकांसमोर ठेवला आहे. भाषा हे मानवी भावभावनांच्या आणि विचारांच्या अभिव्यक्तीचे प्रमुख माध्यम आहे. अन्न, वस्त्र, आणि निवारा या गरजांइतकीच भाषा ही सुद्धा मानवाची मूलभूत गरज आहे. एकूण भाषा हे समाजाचे व्यक्त होण्याचे माध्यम असून तिचे महत्त्व रोजच्या जीवनात अनन्य साधारण आहे. मात्र बोली स्वरुपातील भाषा ग्रंथनिविष्ठ होत असतानाची प्रक्रिया कशी असते ? याचा विचार प्रभुदेसाईंनी कोंकणी आणि मराठी भाषेच्या अनुषंगाने मांडला आहे. बोली ही जरी रोजच्या जीवनात महत्त्वपूर्ण असली तरी तिच्याकडे अभ्यास करण्या इतपत आजतागायत तरी कोणाचे लक्ष गेले नव्हते. ती उणिव उपरोक्त संशोधनातून भरून निघालेली दिसते. त्यांची ही भाषा अभ्यास करण्याची दृष्टी साहित्य, समाजाला नवे काहीतरी देऊन जाते. प्रभुदेसाई हे इंग्रजी व पोर्तुगीज या परदेशी भाषा जाणत असल्याने अभ्यासाला एकप्रकारे महत्त्व आलेले जाणवते. सोळाव्या शतकात युरोप खंडातून भारतात येऊन धर्म प्रसाराच्या ओढीने इथल्या स्थानिक भाषांचे अध्ययन कसे झाले. याचा विचार इथे केला असून प्रस्तुत विषयाची मांडणी करत असताना तत्कालीन पत्रव्यवहार, शब्दकोश, ग्रंथरचना साधने म्हणून वापरली आहेत. त्यामुळे ऐतिहासिक दृष्ट्याही या संशोधनाला महत्त्व प्राप्त झाले आहे.

जेजूईत पूर्व युरोपीयनाच्या भारतीय भाषा विषयक कामगिरीचा प्रभुदेसाईंनी घेतलेला परामर्ष :

प्रस्तुत विषयात विषय प्रवेश करत असताना डॉ. वि. बा. प्रभुदेसाई यांनी भारतीय भाषांवर

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College

युरोपियनाच्या कामगिरीचा परामर्ष सुरवातीला घेतला असून युरोपादी देशांमधील व्यापार उद्दिमांसाठी आलेले खलाशी पुढे स्थिरावले व व्यापारा सोबत आपला राज्य विस्तार, धर्म विस्तार वाढविण्याची त्यांना लालसा निर्माण झाली. गोव्यात पोर्तुगीज तर उर्वरित सबंध हिंदुस्थानात इंग्रजांनी आपली राजवट बळकट केली परिणामी देशात अनेक स्थित्यंतरे आली आणि याही परिस्थितीत दुबळे झालेले भारतीय मन कणखर, बुद्धिजीवी बनले व याची परिणती देशस्वातंत्र्यात झाली.

प्रभुदेसाईंनी युरोपियनांनी केलेल्या भारतीय भाषांच्या अध्ययनाचा अभ्यास करत असताना आलेक्झांडर पूर्व काळातील दाखले दिले आहेत. स्कायलॅक्स, पायथाग्वारस, सारख्या मुसाफिरांनी भारतीय जनमानसाच्या चालीविषयक माहिती मिळवली होती. असा उल्लेख जरी आढळत असला तरी त्यांनी लिहिलेली सर्व पुस्तके काळाच्या उदरात गडप झाली आहेत. हे रोडोट्स (ख्रि.पू.४८४ ते ४३१) या लेखकानेही आपल्या ग्रंथात हिंदुस्थांनाविषयक जुजबी माहिती दिली असल्यामुळे व हा ग्रंथ उपलब्ध असल्यामुळे याला काहीजण पाश्चात्यांना हिंदुस्तान विषयक माहिती देणारा पहिला ग्रीक इतिहासकार मानितात. पण या सगळ्या प्रयत्नांवर मात करून महत्त्वाची भर टाकली ती आलेक्झांडरच्या हिंदुस्थानावरील स्वारीनेच होय.[१]

आलेक्झांडर याची भारतातील स्वारी महत्त्वपूर्ण मानली जाते आलेक्झांडरने हिंदुस्थांनावर स्वारी केली होती ती ख्रि.पू ३२७ च्या सुमारास होय. या स्वारीमुळेच पाश्च्यात्यांना हिंदुस्थानातील पंजाब व सिंधू नदीच्या खोयातील आजूबाजूच्या टापूत हिंदूची प्रत्यक्ष अशी पुष्कळच नवी माहिती प्राप्त झाली. आलेक्झांडरचा सेनापती सेल्युकस यांने चंद्रगुप्ताशी स्नेहाचे नाते जोडण्यासाठी म्यागस्थिनीस या आपल्या वकिलाला पाटलीपुत्र येथे चंद्रगुप्ताच्या दरबारी पाठविले होते. आलेक्झांडरचा वकील ख्रि. पू ३०२ च्या सुमारास हिंदुस्थानात आला होता. त्याचा हिंदुस्तान विषयक माहिती देणारा इंडिका हा ग्रंथ ऐतिहासिक दृष्टीने फार उद्बोधक आहे. तत्कालीन हिंदुस्थानातील राजकीय, सामाजिक व धार्मिक परिस्थितीचे सम्यक दर्शन घडविण्याच्या दृष्टने त्याने लिहून ठेवलेली माहिती अजूनही प्रमाणभूत मानली जाते. मग मध्ययुगीन काळात ग्रीस व रोम येथील लेखक हिंदुस्थान विषयक माहितीच्या बाबतीत सर्वस्वी इंडिका या ग्रंथावरच अवलंबून राहतात. असे प्रभुदेसाई यांचे मत आहे.

नंतरच्या काळात इ.स. १२९३ मध्ये व्हेनीसचा व्यापारी घ्मार्को पोलोङ आल्याचे सिद्ध होते. मार्को पोलोने दक्षिण भारताचा व सिलोनचा प्रवास करून त्या परिसरातील ब्रम्हणाविषयी लिहून ठेवल्याचे कळते प्रभुदेसाई याविषयी अधिक उलघडा करताना लिहितात. मगस्थिनीसला अपरिचित राहिलेल्या हिंदुस्थानातील दक्षिणेकडील भागात वास्तव्य करून चौफेर निरीक्षण करण्याची संधि मार्को पोलोला लाभली होती.[२]

मगस्थिनीस ज्या भूप्रदेशात वावरला तो भारताच्या उत्तरेकडील भाग होय व मार्कोपोलो ज्या भूभागात वावरला त्याला दक्षिण पथ मानला जातो. त्यामुळे मार्कोपोलोच्या अभ्यासाने उत्तर

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur 59 302 Dist. Belgaum

दक्षिण भारत देशाचे सम्यक दर्शन युरोपियनांना झाले असे म्हणता येईल. पुढल्या काळात इ.स. १३२० मध्ये जॉर्दान्यू हा फरेंच दोमीनिकन पाद्री हिंदुस्थानात आल्याचा उल्लेख सापडतो येथील दोन वर्षाच्या वास्तव्यात आजूबाजूच्या लोकांच्या चालीरीतीचे त्याने सूक्ष्म निरीक्षण केले होते असे दिसते.[३]

उपरोक्त विविध मतांचा विचार करता खिस्तपूर्व काळात व त्यानंतरच्या कालखंडात वेगवेगळ्या विचारवंतांनी भारतभूमी संदर्भातील यूरोपियन लिखाणात भर घातलेली दिसते. ही माहिती त्रोटक जरी असली तरी नव खलाशांच्या मनात कुतूहल जनकच राहिली यात शंका नाही.

वास्को-द-गामाच्या भारतातील आगमनाने झालेल्या परिणामाची प्रभुदेसाईंनी केलेली मीमांसा :

दौ मानुएलने व्हाश्कु द- गामाला हिंदुस्थानात जाण्याच्या जल मार्गाचा शोध लावण्यासाठी ८ जुलै १४९७ रोजी पोर्तुगालहून रवाना केले. व्हाश्कु द- गामाने आपल्या बरोबर चार जहाजे,स्वत:चा भाऊ पाव्लु-द-गाम,आणि इतर काही सोबती घेऊन मसाल्याच्या पदार्थांचा शोध करण्यासाठी प्रयाण केले.[४] वास्को द गामाचे हिंदुस्थानात येण्याचे प्रयोजन काय होते याचा तपास करताना खिस्तीजन व मसाल्याच्या जिनसा हाच मूळ हेतू ठेऊन दाखल झाल्याचे जाणवते. वास्को द-गामा जेव्हा कालिकत बंदरावर दाखल होतो तेव्हा तिथले दोन मुसलमान स्पॅनिश भाषेत विचारतात च्हतक्या दूरवर आपण आलात ते काय उद्देशाने ? त्यावर गामा उत्तर देतो. आम्ही येथे आलो ते खिस्ती जन व मसाल्याच्या तपास करण्यासाठी म्हणून. गामाच्या या उत्तरातून हिंदुस्थानातील त्यांचे येण्याचे प्रयोजन स्पष्ट होते. तर कालीकत शहरातील हिंदू जनास, मंदिरांना पाहून गामा व त्याचे सोबती त्यांना खिस्तीच समजतात. कालिकत मधून पाच किंवा सहा हिंदी माणसे गामाने आपल्या बरोबर स्वदेशी नेली होती. त्यापैकी एक मुसलमान होता. त्याला खिस्ती करण्यात आले. बाकीचे मुळचेच खिस्ती आहेत. असे दों. मानुएल कार्दिनालला लिहीलेल्या आपल्या २५ ऑगष्ट १४९९ च्या पत्रात म्हणतो.[५]

उपरोक्त माहितीवरून वास्को-द-गामा व त्याचे सहकारी हिंदू या जातीला जनमानसांना खिस्ती समजल्याचे कळते. परिणामी याच गैरसमजाने गोव्यावर धर्मांतराचे संकट ओढवलेले दिसते. याच मताला पृष्टी देताना प्रभुदेसाई लिहितात. च्गामाच्या सोबत हिंदुस्थानात आलेल्या आल्व्हारु व्हेल्यु यांने एका हिंदूच्या देवळाला चर्च समजून तेथील धार्मिक विधीचे सविस्तर वर्णन केले आहे. याच कारणामुळे बहुधा पोर्तुगीजांचे लक्ष हिंदुस्थानाने अधिक वेधून घेतले असावे.[६] तर हाच आल्व्हारु व्हेल्यु कालिकत मधील लोक व्यवहार समजून घेण्यास म्हणून कामचलाऊ अशा १२५ शब्दाचे संकलन पोर्तुगीज मधील अर्थासह देतो यावरून इथल्या जन माणसात मिसळून आपले ईप्सित गाठण्याची पोर्तुगीजांची दृष्टी अधोरीखित होते.

अल्बुकेर्कच्या गोव्यावरील स्वारीने झालेल्या परिणामाची प्रभुदेसाईंनी केलेली मिमांसा :

अल्बुकर्कने गोव्यावर स्वारी करून एक प्रकारे भारताच्या नव्या अध्यायाला प्रारंभ केला.

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur 591 302 Dist. Belgaum

प्रभुदेसाईंच्या मते १७ फेब्रुवारी १५१० रोजी त्याने गोवे शहर जिंकून घेतले. मध्यंतरी पोर्तुगीजाना माघार घेऊन गोवा सोडून देण्याची पाळी आली तरी त्यांनी चिकाटी न सोडता परत एकवार हल्ला चढवून १५ नोव्हेबर १५१० रोजी आदिलशहाकडून एकदाचा गोवा हिसकावून घेतला तो १८ डिसेंबर १९६१ पर्यत पोर्तुगीजाच्या अंमलाखालीच राहिला होता.[७] मुळात आदिलशाही या इस्लामी राजवटीच्या छायेखाली नांदणारे गोवे शहर पोर्तुगीजांच्या स्वाधीन झाले आणि गोवे शहरात राहर्णाया हिंदू सह मुसलमांनाच्या राहणीमान पद्धतीवर मोठे आरीष्ट कोसळले परिणामी स्थानिक गोवेकर या परिस्थितीतून मार्गस्थ होत राहिले. आणि पुढील ४५० वर्ष आपली राजवट यशस्वी रित्या गोव्यावर गाजवत पूर्व गोव्याचा मुळचा चेहरा मोहराच बदलून टाकण्याचा प्रयत्न इथे जाणीव पूर्वक झालेला दिसतो.

रतीय भाषांचे, विशेषत: मराठीच्या गोमंतकी बोलीचे, जेजुईतानी केलेल्या अध्ययनावर प्रभुदेसाईंचे विचार :

प्रभुदेसाईनी मराठीच्या गोमंतकी बोलीचे व विशेषता जेजूइतांनी केलेल्या अध्ययनावर भर देतात. ते लिहितात. च्या देशी भाषांच्या अभ्यासाच्या बाबतीत इतर पंथाच्या धर्मप्रसारकांपेक्षा जेजूईतांनीच अधिक उत्साह दाखविला.[८] या देशी भाषेत कार्य करर्णाया जेजूईत पंथीयाच्या भाषा अध्ययनाचा परिचय प्रस्तुत प्रकरणात त्यांनी केला असून त्याचा मुख्य विषय मराठी व तिची गोमंतकी बोलीङ यावरच भर देण्याचे ते सुरवातीला स्पष्ट करतात. गोव्याचा पहिला बिशप फ्रै दो जुवांव-द-आल्बुकेर्क हा पोर्तुगालचा राजा दों जुवांव तिसरा याला लिहितो चखिस्ती धर्माची दीक्षा देऊन धर्माची सेवा करणारे व या बाबतीत पोर्तुगीजांना सहाय्य देणारे जेजूईत पंथाच्या पाद्री सारखे यूयुत्सु, सावध आणि कळकळीचे कार्यकर्ते या देशात आलेल्यापैकी असून तरी दुसरे कोणीच नाहीत.[९] उपरोक्त विधानातून जेजूइतांचे गोव्यातील कार्य व त्यांच्या धर्मचळवळी विषयक प्रमाणिकतेची कबुली यातून मिळते.

भाषा आणि लिपि विषयक प्रभूदेसाईंचे संशोधन :

प्रस्तुत विषयाचा आरंभ करण्यापूर्वीच प्रभुदेसाईनी भाषिक प्राचिनत्वाचा मागोवा घेतलेला दिसतो. ते लिहितात च्जगातील सगळ्या भाषा, लिपींचा शोध लागण्यापूर्वी मुखानेच तेवढ्या उच्यारिल्या जात होत्या; म्हणजे त्या ध्वनीच्या द्वारा व्यक्त केल्या जात होत्या. लिपीचा शोध लागल्यावर त्या भाषांतील साहित्य ग्रंथनिविष्ट होऊन त्याला एक प्रकारे स्थिरत्वहि प्राप्त झाले.[१०] या प्रभुदेसाईंच्या उपरोक्त मताचा परामर्ष घेत असता भाषेची, लिपीची उत्त्पत्ती कशी झाली याची कल्पना येते.

प्राचीन काळी लेखन आणि वाचन या गोष्टींना अनन्य साधारण महत्त्व जरी असले तरी मुद्रण कलेमध्ये तांत्रिक दृष्ट्या सबल असलेली साधने उपलब्ध नव्हती त्यामुळे लेखन हाच एकमेव पर्याय होता. कालांतराने गोव्यात छापखान्याचे आगमन झाले आणि मुद्रणाला भारतात एका अर्थाने प्रारंभ झाला. परिणामी ग्रंथ निर्मितीत गतीमानता लाभली. मात्र आजच्या काळाचा विचार करता आज

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur 591302 Dist. Belgaum

मुद्रण कलेत क्रांतिकारी बदल झालेले असून आजची मुद्रणकला विविध साधनामुळे अधिक गतिमान झालेली दिसते. एखाद्या भाषेतील ध्वनीचे वर्ण दृश्य स्वरुपात व्यक्त करणे, हे लिपीचे कार्य ठरते.[११] या लिपीच्या प्रभुदेसाईंनी केलेल्या व्याख्येतूनच त्यांची भाषा आणि लिपी बद्दलच्या परिमाणाची कल्पना येते. प्रभुदेसाईंच्या मते देवनागरी किंवा रोमन लिपी कोणतीच लिपी सर्वस्वी निर्दोष आढळत नसल्याचा निर्वाळा ते देतात.

एखादी राजवट जेव्हा विशिष्ठ प्रदेशात नव्याने जेव्हा अस्तित्वात येते तेव्हा सत्ता प्रस्थापित होण्याच्या काळात अनेक गोष्टी नव्याने आणते. त्यात भाषा ही महत्वाची असते असे प्रभुदेसाई नमूद करतात. भारताच्या इतिहासात डोकावून पाहिल्यास याची कल्पना येते. यात प्रामुख्याने मुस्लिमाच्या भारतातील राजवटी, पोर्तुगीज, फ्रेंच, डच, इंग्रज इत्यादि होय. या राजवटी सुरवातीला व्यवसायाचा उद्देश मनी बाळगून भारतात आल्या खऱ्या मात्र इथली सुबत्ता पाहून विचार फिरले आणि परिणामी गोव्यात पोर्तुगीज तर उर्वरित भारतात इंग्रज आपले वर्चस्व गाजवत राहिले. परिणामी इथे परिचित नसलेली इंग्रजी तिची लिपी रोमन इत्यादी इथल्या जनमानसात आपला धर्म रुजवण्यासाठी मिशर्णयांनी इथल्या स्थानिक भाषा संदर्भात केलेले कार्य विशेष समाज मनावर खोलवर रुजले परिणामी देशी भाषा आणि लिपीला महत्त्व देण्याऐवजी परकी भाषा आणि लिपीला महत्त्व देणारी एक विचारसरणी अस्तित्वात आली असे प्रभुदेसाई अधोरिखित करतात.

प्रभुदेसाईंनी गोव्याखेरीज भारतातील रोमनीकरणाच्या इतिहासाचा परामर्ष घेतला आहे. यामध्ये विल्यम जोन्स, मोनियर विल्यम्स, गिलक्राइस्ट इत्यादींच्या कार्याचा उल्लेख करावा लागेल. असे प्रभुदेसाई सांगतात. तत्कालीन भारतात शिक्षणाचे माध्यम इंग्रजी होण्याआधी भारतीय भाषाचे रोमनीकरण होते असे त्यांचे म्हणणे असून, रोमनीकरणाच्या भिन्न मतप्रवाहाची चर्चा इथे प्रभुदेसाईनी केली आहे. मात्र वेगवेगळ्या मत प्रणालीचे रोमनीकरणाचे कार्य सुलभ होण्यासारखे नव्हते. याचे प्रमुख कारण प्रभुदेसाई नोंदवतात च्एका अक्षराने एकच उच्यार व्यक्त करावयाचा, हे आदर्श लिपीचे तत्व पाळले जात नव्हते.[१२] त्यामुळे मुळ उद्देश इथे सफल होत नव्हता हिंदुस्थानातील भाषांसाठी अनेकांनी रोमण लिपीचा आग्रह धरल्याचे दिसते. मात्र पुढे भारतात (गोवा वगळून) सर्वत्र इंग्रजीच माध्यम असावे असा निर्णय घेतल्याने भारतीय भाषांचे रोमनीकरण हा विषय थंडावल्याचे प्रभुदेसाई नमुद करतात.

केवळ धर्मप्रसारासाठीच भारतीय भाषांचे रोमनीकरण हे तंत्र आत्मसात केलेल्या तत्कालीन धर्मप्रचारकानी खिस्ती धर्म प्रचारासाठी हा रोमणिकरणाचा चालवलेला खटाटोप असल्याचे सांगण्यात कुठेही आडपडदा ठेवला नसल्याचे प्रभुदेसाई नमूद करतात. या धर्मप्रसारकांच्या मनातला हेतू कसा होता हे सांगताना हिंदू आणि मुसलमानाचे वाड्मय काळाच्या उदरात गडप होऊन त्याची जागा खिस्ती वाड्मयाने घ्यावी असा त्यांचा प्रमुख विचार होता. एकंदरीत रोमणिकरणाचा अधिक विचार

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur 591 302 Dist. Belgaum

RNI MAHMUL 02800/2010/33461
Interlink Research Analysis | IMPACT FACTOR 6.20 | ISSN 0976-0377
Issue : XXII, Vol. IV, July 2020 To Dec. 2020

करता हिंदुस्थानातील निरक्षरतेचा फायदा घेत त्यांना साक्षर करायचे व रोमणिकरणाचे धडे द्यायचे हा एकंदरीत विचार प्रभुदेसाईंचा दिसतो.

भारतातील बहुतांश भाषा या संस्कृत कुलोत्पन्न असल्याने देवनागरीचा वारंवार युरोपियनांशी संबंध येत राहिल्याचे प्रभुदेसाई सांगतात. यात मराठी आणि हिंदी सारख्या महत्त्वपूर्ण भाषांची लिपीही देवनागरीच आहे. देवनागरी लिपीच्या मुळाक्षरांचा क्रम आणि संख्या यांची योजना भारतीय वैययाकरणानी अतिशय शास्त्रशुद्ध पायावर केली असल्यामुळे भारतीय भाषांतील सर्व उच्चार लेखनिविष्ठ करण्यास ती समर्थ आहे, म्हटल्यास हरकत नाही. याउलट रोमण लिपिंतील सव्वीस अक्षरांचा भारतीय भाषातील सगळे उच्चार व्यवस्थितपणे दाखविणे शक्य होत नाही.[१३] प्रस्तुत विषयाचा अधिक खुलासा करण्यासाठी विविध पाश्च्यात्य अभ्यासकांनी मते नोंदविली असून पाश्च्यात्य अभ्यासकाच्या मते रोमन लिपिपेक्षा देवनागरी अधिक शास्त्रशुद्ध व श्रेष्ठ असल्याचे मान्य केले आहे. मात्र काही तांत्रिक अडचणीमुळे ती सोयीची ठरत नाही. यासाठी छापण्याच्या दृष्टीने टंकलेखनासाठी रोमण लिपिच सोयीस्कर पडल्याचे त्यांचे मत आहे.

संदर्भ सूची :-

१) सतराव्या शतकातील गोमंतकी बोली वि.बा.प्रभुदेसाई प्रकाशक मुबई १९६३ पृष्ठ क्र.६
२) तत्रैव पृष्ठ क्र. ६-७
३) तत्रैव पृष्ठ क्र. ७
४) तत्रैव पृष्ठ क्र. १-२
५) तत्रैव पृष्ठ क्र. ३
६) तत्रैव पृष्ठ क्र. ६
७) तत्रैव पृष्ठ क्र. ९
८) तत्रैव पृष्ठ क्र. ३६
९) तत्रैव पृष्ठ क्र. ३६-३७
१०) तत्रैव पृष्ठ क्र. ३७
११) तत्रेव पृष्ठ क्र. ३७
१२) तत्रेव पृष्ठ क्र. ४१
१३) तत्रेव पृष्ठ क्र. ४२

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur 591302 Dist. Belgaum

भक्ति साहित्य की प्रासंगिकता

प्रधान संपादक
डॉ. एस. टी. मेरवाडे
डॉ. एस. एस. तेरदाल
संपादक
डॉ. एस. जे. पवार
डॉ. एस. जे. जहागीरदार

Principal
Mara[illegible] ndal's
Arts & C[illegible]rce College
Khanapur

BHAKTI SAHITYA KI PRASANGIKATA

ISBN 978-93-83813-51-3

Publisher : Soumya Prakashan
Mahabaleshawar Colony Darga Road
Vijayapur– 586 103 (Karnataka)

© Publisher

First Edition : 2020
Copies : 1000
Pages : xii + 312 = 324
Price : Rs. 300/-
Book Size : Demy 1/8
Paper Used : 70 G.S.M. N. S. Maplitho

भक्ति साहित्य की प्रासंगिकता

प्रधान संपादक : डॉ. एस. टी. मेरवाडे, डॉ. एस. एस. तेरदाल
संपादक : डॉ. एस. जे. पवार, डॉ. एस. जे. जहागीरदार

ISBN 978-93-83813-51-3

प्रकाशन : सौम्य प्रकाशन
महाबलेश्वर कॉलनी, दर्गा रोड
विजयपुर – 586 103 (कर्नाटक)

प्रथम मुद्रण : 2020

© प्रकाशक

प्रति : 1000
पृष्ट : xii + 312 = 324
मूल्य : रु. 300/-
बुक साईज : डेमी 1/8
पेपर : 70 जी.एस.एम. एन. एस. म्यापलिथो

मुद्रक :
त्वरित मुद्रण आफसेट प्रिन्टर्स
विठ्ठल मंदिर रोड, गदग – 582 101
Email : chaitanyaoffset@gmail.com
Mobile : 8884495331, 9448223602

बी.ए
बसवेश्वर कला
बसवनबागेव
स्व. एम्.

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College

सर्वकालिक समाज सुधारक कबीर

• डॉ. डी. एम. मुल्ला

भारत के इतिहास में अनेक संत महात्माओं का जन्म हुआ जिन्होंने अपने तत्कालीन समाज को परिवर्तन कर एक नया शांतिप्रिय और समानता की भावना रखने वाला समाज निर्माण किया। इन संतों ने अपनी आध्यात्मिक भावना तथा भावविभोर वाणी के द्वारा समाज उत्थान का कार्य किया। समाज में व्याप्त सामाजिक कुरीतियों का विरोध कर एक नए समाज की नींव डाली । इन सभी संतों में से एक प्रमुख संत जिसे कबीर कहा गया, जिनकी वाणी सबसे सशक्त और समाज समता का निर्माण करने वाली है जो आज के युग के लिए भी सर्वकालिक है।

कबीर को एक समाज सुधारक के रूप में जाना जाता है । कबीर एक उच्च कोटि के साधक होने के कारण उनकी वाणी अनुभव और ज्ञान की मिश्रित है। कबीर तत्कालीन व्यवस्था में व्याप्त धर्म साधना, उपासना पद्धति, साधना प्रणाली, समाज व्यवस्था आदि को गहराई से पकड़ उसमें व्याप्त मानवहीनता को दूर कर मानवतावादी समाज बनाने का प्रयास किया। जिससे आज के युग के लिए कबीर का मानवतावादी दृष्टिकोण उपयोगी पड़ता है।

कबीर के समय भारत में आध्यात्मिक और सामाजिक व्यवस्था में भेदभाव भरा हुआ था। हिंदू और मुसलमान दो बड़ी जातियां अपने -अपने रीति-रिवाजों, आचार विचार पद्धति, सामाजिक और धार्मिक कट्टरता की मान्यताओं में बंधे हुए थे। जिसके परिणाम स्वरूप जनसाधारण के मन में द्वेष और नफरत भरी हुई थी और वे आपस में लड़ाई और झगड़ों में लगे रहते थे। यह लड़ाइयाँ धर्म के ठेकेदारों की वजह से जनता में छा जाति और जनता बिना वजह इसमें पीसी जाती। आज भी भारतवर्ष में समाज के ठेकेदार समझे जाने वाले नेताओं के कारण ऐसी परिस्थितियाँ

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur

समाज में व्याप्त हैं। कबीर अपने समय के ठेकेदारों के पाखंडों, अंधविश्वासों, मिथ्या आडंबरों, कुरीतियों का कुप्रभाव ,धार्मिक व्यवस्था, सामाजिक विषमता,रूढ़िवादी विचारधाराओं का विरोध कर सामाजिक व्यवस्था को सुंदर और सुदृढ़ विचारों वाला बनाने का प्रयास किया।

पुराण पंथी एवं कर्मकांडी तत्वज्ञानी न होकर अशिक्षित और अर्धशिक्षित होकर वे अपने स्वार्थ पूर्ति के लिए उल्टे सीधे कर्मों से अपना उल्लू सीधा करने के लिए सामान्य जनता को अपना शिकार बना कर रखते थे। जनता इन्हीं पाखंडियों के कारण पौराणिक धार्मिक पद्धति के विचारों, धार्मिक क्रियाओं ,पूजा पाठ, यज्ञनुष्ठान, कर्मकांड आदि में लीन रह जाती थी। पुराणपंथी लोग धर्म के कर्मकांडों से सामान्य जनता को ठगने का कार्य करते थे ।कबीर ने ऐसे धार्मिक कट्टरता के ठेकेदारों को पहचान कर उनकी पोल खोल कर जनता के सम्मुख रखना आरंभ किया। उनके नीच करतूतों का उल्लेख जनता के सामने कर उनका पर्दाफाश कर उन्हें जनता का कट्टर शत्रु घोषित किया।

वर्तमान समय में भी कबीर के विचार को अपनाना जरूरी है। आज भी अनेक लुभावनेवाले और अपने षड्यंत्र में फंसा कर शोषण करने वाले समाज के पूंजीवादी ठेकेदार सामान्य जनता को वोट के नाम पर फंसा कर गुमराह कर अपना उल्लू सीधा कर रहे हैं। जनता के भीतर धार्मिक कट्टरता और कर्मकांडों की निर्मिती कर समाज को पतन और अशांति की ओर ले जा रहे हैं। कबीर का काल आज प्रासंगिक लग रहा है।उनके समाज सुधारवादी विचारों को पकड़ना आज जरूरी लग रहा है।

कबीर केवल धार्मिक कट्टरता की ही आलोचना नहीं की, बल्कि एक सच्चे समाज सुधारक के रूप में भी अपने को स्थापित किया है। उनकी दृष्टि निष्पक्ष और निर्भीक थी। वे हिंदू और मुसलमान दोनों को फटकारने का कार्य कर सही धर्म की पहचान करने का प्रयास किया। कबीर ने मिथ्या मार्ग पर चलने वालों को सही राह पर चलने का संदेश दिया। छुआछूत, ऊंच-नीच की भावना को मिटाने का प्रयास किया। सामाजिक परंपरागत वर्ण व्यवस्था की खिल्ली उड़ाकर समानता और मानवता का संदेश लोगों में भरने का भरकस प्रयत्न किया। उन्होंने हिंदू और मुसलमानों से कहा सो हिंदू सो मुसलमान जाका दुरुस रहे ईमान अर्थात कबीर ने कहा जिसका ईमान दुरुस्त है जो अपने धर्म पर सत्य से आरुढ हैं वही हिंदू और मुसलमान है।

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College

उन्होंने सही धर्म को पहचान कर उस पर चलने की सलाह हिंदू और मुसलमान दोनों को दी। अपने विचारों से वे इन दोनों में एकता स्थापित की है।

कबीर समाज में व्याप्त विष फैलाने वाले जहरीले तत्वों और विचारों का विरोध कर समाज को एकता का अमृत पिलाने का कार्य किया। मनुष्य जीवन में शुद्धाचरण और सात्विकता पर बल देकर परोपकार, क्षमा, सेवा, दान, समर्पण, अहिंसा आदि का प्रचार किया। कबीर ने सहज साधना और सरल जीवन व्यतीत करने का प्रचार किया। सामाजिक अधःपतन को दूर कर उन्हें नैतिकता का पाठ पढाया। हिंदू और मुसलमान में धर्म और ईश्वर की एकता का प्रतिपादन कर उन्हें निर्गुण और निराकार ईश्वर की उपासना करने का संदेश देकर कटु विषमता को दूर करने का प्रयास किया। तत्कालीन समाज में असत्य को सत्य मार्ग दिखाने का प्रयास कबीर का रहा।

कबीर एक सच्चे मानव सेवक थे। उनके भीतर समाज के प्रति एक दयालु भावना व्याप्त थी। वे गरीबों और अन्याय सहनेवाली जनता के रक्षक थे। कबीर के गुरु अनंत थे इसलिए उन्होंने गुरु की अनंत महिमा का वर्णन किया। कबीर अपने जीवन में ऐसे गुणों को उतारा कि वे परिश्रमी और संयमी थे। उनके भीतर अहंकार और मोह की भावना बिल्कुल नहीं थी। वे सच्चे तपस्वी, नम्र थे ।अन्याय और अधर्म का विरोध कर पापियों के विरुद्ध आवाज उठाकर समाज को गुमराह होने से बचाया। जनता को सत्य मार्ग पर चलने का संदेश दिया। कबीर स्वयं अपने जीवन में बाधाओं का सामना किया फिर भी सयंम को बनाए रख स्वयं विष पीकर सारे विश्व को अमृत पिलाने का कार्य किया। इसलिए कबीर निर्बलों के रक्षक और साधक होने पर वह सर्वव्यापक और सर्वकालिक बन गए हैं।

कबीर के विचार आज की प्रासंगिकता में समाज में व्याप्त अंधशक्तियों, अमानवियताओं के विरुद्ध आवाज उठाने के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं । कबीर की वाणी युग देन थी जो समसामयिक युग के लिए एक प्रेरणा ही कही जा सकती है । प्रगतिशील और उन्नत समाज निर्मिती के लिए आज कबीर के विचारों पर चलना आवश्यक है। आज दुर्गुणों का विरोध करना आवश्यक है । आज समाज के भीतर समन्वय का उपदेश आवश्यक है। जनता को शिक्षित और गरीबों की उन्नति आवश्यक है । दुर्जनों का नाश करना आवश्यक है। जनता को बेरोजगारी

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Co College
Kh

और भ्रष्टाचार से मुक्त करना है। सर्वधर्म समभाव की आवश्यकता है। सामान्य जनता का भयावह अस्तित्व समाप्त करना है। मानव को मानव समझना आवश्यक है। कबीर क्रांतिकारी युगपुरुष थे जिन्होंने व्यापक धर्म का संदेश दिया। सबका हित करना ही अपना धर्म समझा। कबीर जैसी व्यापक विचारधारा की आज आवश्यकता है। कबीर हमेशा मानव समाज की दुर्दशा से चिंतित रहते थे। इस दुर्दशा के कारणों का पता लगाकर दुर्दशा निर्माण करने वाली शक्तियों को मिटाने का कार्य किया। निस्वार्थ बनकर भौतिक मृगतृष्णाओं के पीछे कभी नहीं भागे। धन की अपेक्षा कभी भी नहीं की। वे अपने निराकार भगवान से प्रार्थना करते कि, साईं बस इतना दीजिए जामे कुटुंम समाय, साधु भी भूखा न जाए भगवान मुझे केवल इतना ही धन दीजिए जिससे मैं अपने परिवार और घर आए हुए मेहमानों का पेट भर सकूं।

आज के वर्तमान समाज की परिस्थिति शिक्षित,आधुनिक और प्रगतिशील होने के बावजूद भी अनाचारी, स्वार्थी, सत्ता लोलुप व्यक्तियों के कारण अधःपतन की ओर अग्रसर हो रही है । स्वार्थ परक राजनीति के कारण समाज में दमघोंटू वातावरण की निर्मिती हो गई है। आज व्यक्ति अपनी पहचान खो रहा है और भय के वातावरण में अपना जीवन जी रहा है। सत्ता लोलुपों का शिकार बन रहा है। कट्टर धार्मिकता के छाया में फिर से समाज पिसा जा रहा है। दिनदहाड़े व्यक्ति को पीटा जा रहा है। स्त्री पर अत्याचार किया जा रहा है ।उसकी इज्जत लूटी जा रही है और ऐसा करनेवाले खुलेआम घूम रहे हैं। देश में राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक उथल-पुथल के कारण समाज में फिर से दंगे फसाद की निर्मिती होकर समाज अशांत और अविश्वास वाला बनता दिखाई दे रहा है। आज कबीर के सर्वधर्म समभावना और वर्गीय समानता के विचारों की आवश्यकता है। इसलिए सांप्रदायिकता को मिटा कर सभी को समान रूप से उन्नति का अधिकार प्राप्त होना चाहिए। इसलिए कबीर के विचारों को अपनाना आवश्यक है ।कबीर ने जनसाधारण को सरल जीवन सत्याचार व्यवहार, पारस्परिक एकता, समता की ओर उन्मुख करने का सराहनीय कार्य किया है, इसी के परिणाम स्वरूप वे एक उच्च कोटि के समाज सुधारक कहलाते हैं ।

आज समाज में कबीर की तरह मानवता की गरिमा को अक्षुण्ण बनाएं रखने का प्रयास करना आवश्यक है । कबीर के विचारों वाला धार्मिक समन्वय की

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College

भावना रखने वाला नैतिक जीवन का प्रतिपादन करने वाला समाज, विकृतियों को दूर कर समाज में व्याप्त दुःख ,भय ,चिंता आदि बाधाओं को दूर कर एक सुंदर और सुदृढ़ समाज और देश बंधुत्व की भावना से ओतप्रोत समाज की निर्मिती करना है। इसलिए कबीर के विचारों को प्रासंगिकता के रूप में आज अपनाना आवश्यक है। सर्वकालिक समाज सुधारक कबीर के विचारों को अपनाने से समाज में सुंदर धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक प्रगति संभव हो सकती है और मनुष्य सुंदर जीवन जी सकता है।

■■

सहायक प्राध्यापक, मराठा मंडल कला और वाणिज्य महाविद्यालय,
खानापुर, जिला :बेलगाम (कर्नाटक) मो.नं.8762075786

Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur

Impact Factor – 6.625

E-ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

November 2020

Special Issue 255

Multidisciplinary Issue

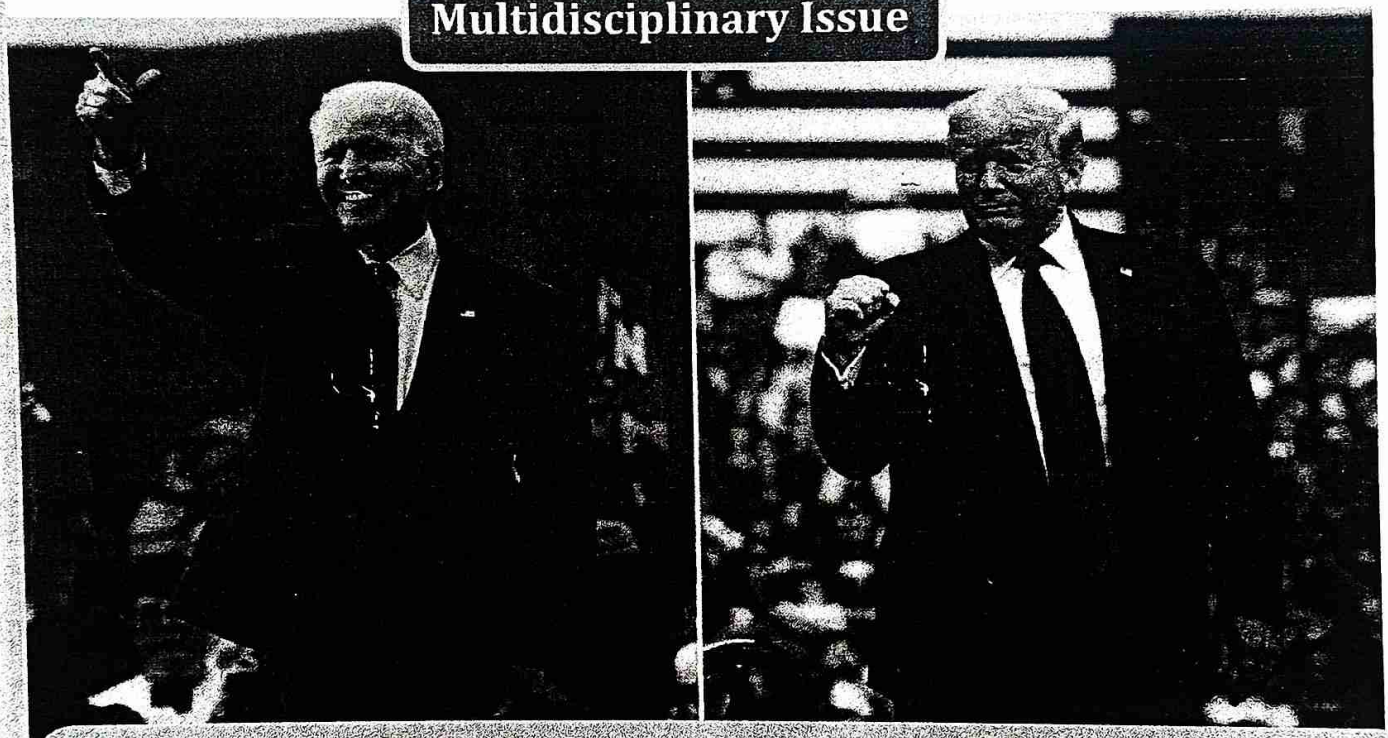

Chief Editor -
Dr. Dhanraj T. Dhangar,
Assist. Prof. (Marathi)
MGV's Arts & Commerce College,
Yeola, Dist – Nashik [M.S.] INDIA

Executive Editors :
Prof. Tejesh Beldar, Nashikroad (English)
Dr. Gajanan Wankhede, Kinwat (Hindi)
Mrs. Bharati Sonawane, Bhusawal (Marathi)
Dr. Rajay Pawar, Goa (Konkani)

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmoc Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

Impact Factor – 6.625 **E-ISSN – 2348-7143**

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

November 2020

Special Issue 255

Chief Editor -
Dr. Dhanraj T. Dhangar,
Assist. Prof. (Marathi)
MGV's Arts & Commerce College,
Yeola, Dist – Nashik [M.S.] INDIA

Executive Editors :
Prof. Tejesh Beldar, Nashikroad (English)
Dr. Gajanan Wankhede, Kinwat (Hindi)
Mrs. Bharati Sonawane, Bhusawal (Marathi)
Dr. Rajay Pawar, Goa (Konkani)

Our Editors have reviewed papers with experts' committee, and they have checked the papers on their level best to stop furtive literature. Except it, the respective authors of the papers are responsible for originality of the papers and intensive thoughts in the papers. Nobody can republish these papers without pre-permission of the publisher.

- Chief & Executive Editor

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur

SWATIDHAN INTERNATIONAL PUBLICATIONS

For Details Visit To : **www.researchjourney.net**

***Cover Photo (Source) : Internet - American President & Ex. American President**

© All rights reserved with the authors & publisher

Price : Rs. 1000/-

27	A Geographical Study of Service Centres in Western Satpura Region **Dr. Lalit Sandanshiv**	118
28	Does Emotional Intelligence Depend on Gender and Inhabitant? A Study on Secondary School Teachers **Dr. Rahul Barve**	126
	हिंदी विभाग	
29	असाध्यवीणा कविता की रचना-प्रक्रिया और संप्रेषण-प्रक्रिया **प्रो. मोहन**	131
30	भीष्म साहनी जी का 'तमस'- सांप्रदायिकता एक विकार **श्री.भूषण घरत, डॉ.उद्धव भंडारे**	136
31	उषा प्रियंवदा के कथा साहित्य में नारी चिंतन **अनिता देवी**	141
32	हिन्दी उपन्यासों में नट जनजाति एवं उनका लोक-जीवन **डॉ. जयंतिलाल बारीस**	145
33	भारत के प्रसार मध्यामो में हिंदी की स्थिती तथा हिंदी की वेबसाईट **डॉ.बेबी खिलारे**	153
34	समकालीन कविता की चिन्ता **डॉ. महेंद्रसिंह पवार**	156
35	स्त्री कविता में स्त्री **डॉ. संतोष पवार**	160
36	'पचपन खंभे लाल दीवारें' उपन्यास के स्त्री चरित्र **डॉ. नामदेव एमेकर**	165
37	भाषा का उद्धव और विकास **डॉ. विजय कुमार**	170
38	लोकगीत और सिनेमा **डॉ. मिनल बर्वे**	175
39	समकालीनता से तात्पर्य **डॉ. दस्तगीर एम. मुल्ला**	179
40	हिन्दी कविता में गज़ल की जरूरत **डॉ. जियाउर रहमान जाफरी**	185
41	साहित्य से समाज तक : बंद होती धड़कनें **डॉ. संतोष पवार**	191
42	मोहनदास नैमिशराय कृत 'मुक्तिपर्व' एक आलोचनात्मक दृष्टिक्षेप **श्री गोरखनाथ काथेपुरे, डॉ.मोहन चव्हाण, डॉ. जिशाऊ मोरे**	196
	मराठी विभाग	
43	कणसरी पूजा : विधीनाट्य **डॉ. अंजली मस्करेन्हस**	204
44	उखाणे : श्रद्धा आणि भावनांची जपणूक **डॉ. आर. डी. शिंदे**	209
45	आदिवासी कवितेतील समाजचित्रण **डॉ. रमाकांत कराड**	213
46	ज्ञानेश्वरांच्या पद्यग्रंथातील कथासृष्टी **डॉ. माधुरी पाटील**	220
47	पसायदान : एक आकलन (भाग एक) **डॉ. पुरुषोत्तम जुन्ने**	224
48	कालिदासाचे काव्य - एक परिप्रेक्ष्य **डॉ. विजय केसकर**	229
49	सारस्वतकार विनायक लक्ष्मण भावे यांची तुकाराम समीक्षा **प्रा. बालासाहेब कटारे**	232
50	संत साहित्यातील मुकुटमणी - संत बहेणाबाई **डॉ. प्रेमा चोपडे - लेकुरवाळे**	238
51	राष्ट्रसंत तुकडोजी महारांजांचे श्रम - संपत्तीविषयक विचार **डॉ.रेखा वडिखाये**	242
52	मराठी ऐतिहासिक चरित्रात्मक कादंबरी **डॉ. राजेंद्र थोरात**	245
53	स्त्री जीवनाची कहाणी : 'मला उद्ध्वस्त व्हायचंय' **डॉ.भाऊसाहेब गमे**	251
54	'मळयाची माती' ग्रामीण जीवनाला स्पर्श करणारा कवितासंग्रह **डॉ.आर.डी.शिंदे**	256
55	मराठी रंगभूमी आणि प्रायोगिक नाटके **डॉ. रामलीला पवार**	262
56	१८५७ च्या स्वातंत्र्यसंग्रामातील वीरांगना - एक चिंतन **डॉ. अश्विनी खापरे**	268
57	संघर्षमय जीवनाची गाथा : 'काटे वेचित चाललो' **डॉ. अजय कुळकर्णी**	272
58	कवी मिर्झा रफी अहमद बेग यांच्या काव्यातील सामाजिक जाणीवा **प्रा. पद्माकर वानखेडे**	276
59	गोपाळ गणेश आगरकरांच्या सामाजिक व राजकीय तत्त्वज्ञानाची जडणघडण **डॉ. प्रवीण चव्हाण**	282

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.625 (2019),
Special Issue - 255
Peer Reviewed Journal
E-ISSN : 2348-7143
Nov. 2020

समकालीनता से तात्पर्य

डॉ. दस्तगीर एम. मुल्ला
M.A.,SLET.,Ph.D.,D.Litt.
अध्यक्ष, हिंदी विभाग तथा सहायक प्राध्यापक,
मराठा मंडल कला और वाणिज्य महाविद्यालय,
खानापुर, जिला –बेलगावी
(कर्नाटक राज्य)
मोबाइल नंबर- 87620 75786
Email :mulladm@gmail.com

साहित्य के क्षेत्र की सीमा असीम है। मनुष्य के हृदय में अन्यों को जानने और अपने कहने की जो उत्सुकता होती है वह साहित्य को जन्म देती है। यह उत्सुकता उसके अपने समय पर निर्भर रहती है। साहित्यकार अपनी समकालीन परिस्थिति से जुड़कर अपने भोगे हुए या आंखों देखे अनुभव पर साहित्य का सृजन करता है। हिंदी में समकालीन नाम आधुनिक काल के उत्तरार्ध में एक आंदोलन के रूप में आ गया जो पश्चिमी साहित्य की देन है। समकालीनता को लेकर अनेक शोध-ग्रंथों, लेखों तथा समीक्षा ग्रंथों का सृजन अनेक लेखक करते आए हैं। समकालीन जीवन दृष्टि को आज साहित्य के क्षेत्र में बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ है। इसलिए हमारे लिए यह जानना आवश्यक है कि, समकालीन तथा समकालीनता क्या है?

वैसे तो समकालीन का सामान्य अर्थ किसी काल की वर्तमान पृष्ठभूमि से संबंधित है। समकालीन शब्द Contemporary का पर्यायवाची है। विशेष रूप से समकालीन एक ही समय, काल या अवधि में सम्मिलित होनेवाली,उसी प्रकार एक ही जीवन, अस्तित्व या काल में घटित होने वाली। हिंदी में समकालीन शब्द अंग्रेजी का पर्यायवाची है पुष्पपाल सिंह ने मनुष्य के साथ-साथ घटना को दर्शाते हुए समकालीन शब्द को इस रूप में अभिव्यक्त किया है। "उसी समय या कालखंड में होने वाली घटना या प्रवृत्ति या एक ही कालखंड में जी रहे व्यक्ति।"(1)

समकालीनता भाववाचक संज्ञा है । समकालीन के आगे 'ता' प्रत्यय लगाने से 'समकालीनता' का निर्माण होता है । यह शब्द अंग्रेजी के "Contemporarity" शब्द का पर्याय है । हिंदी साहित्य में समकालीन आंदोलन पाश्चात साहित्य से आ गया है, जिससे हिंदी के नवलेखन में यह शब्द समकालीनता के रूप में परिचित हो गया। जो समसामयिकता का समानार्थी शब्द भी है । अनेक लेखकों ने अपने पुस्तकों, शोध-ग्रंथों और लेखों में समकालीनता को विविध संदर्भों में विविध रूपों में अपनाया । लेकिन विशेष रूप से समकालीनता प्रवृत्तिमूलक या समय बोध धारणा दर्शाती है । रचनाकारों ने इसके शब्दार्थ पर महत्व न देते हुए उसे जीवन-बोध के आधार पर अपने समय बोध की समानता से जोड़ते हैं ।समसामयिकता के समानार्थी रूप में समकालीनता शब्द-प्रयोग के द्वारा अर्थ प्राप्त करता है । जिसके कारण प्रयोग-धर्मी अर्थ महत्वपूर्ण बन जाता है और व्युत्पत्तिमूलक अर्थ गौण रहता है ।

समकालीनता के अर्थ से जुड़ी अनेक परिभाषाएं अनेक विद्वानों ने अपने अपने दृष्टिकोण के अनुसार अभिव्यक्त की हैं, जो निम्न प्रकार हैं –

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur

1. जगदीश नारायण श्रीवास्तव यथार्थ परिवेश को मुख्य मुद्दा बनाकर समकालीनता की परिभाषा इस प्रकार अभिव्यक्त की है, "समकालीनता देश-काल के बोध के साथ सक्रियता की भी पुष्टि करती है। जिस भी समय- परिवेश में हम हैं उसकी सीमाएँ और विस्तार को हम समकालीन यथार्थ द्वारा अनुभव करते हैं।"(2)
2. डॉ चंद्रशेखर समकालीन बोध को एक गतिशील प्रक्रिया मानकर समकालीनता को इस प्रकार से कहा है, "समकालीनता की प्रत्येक परिणति को समकालीन बोध के गतिमान रूप से जुड़ने के लिए एक विशेष प्रक्रिया में गुजरना पड़ता है । अनेक परिणतियाँ इस प्रक्रिया में जुड़कर समकालीन बोध का मिजाज, प्रकृति, रूप गठन निश्चित करती हैं, उसे व्यक्तित्व प्रदान करती हैं।"(3)
3. अशोक वाजपेयी ने पुरानी परंपरा से संघर्ष या विद्रोह कर वर्तमान में भविष्य की ओर अग्रसर होने के रूप में समकालीनता को परिभाषित करते हुए कहा है, "परंपरा के रचनात्मक द्वंद्व की भूमिका में ही समकालीनता न केवल अपने वर्तमान में अपेक्षित अर्थ पाती है बल्कि भविष्य की संभावना को भी खोजती रहती है। इसीमें उसे आगे चलकर अर्थवान होना है। इस प्रकार समकालीनता अपनी पहचान स्वयं देने लगती है जो अतीत के शव से मुक्ति का अपने आप में एक तसदीकसुदा हलफिया बयान है।"(4)
4. डॉ हुकुमचंद राजपाल युगीन स्थितियों के खिलाफ विद्रोह और साथ-ही-साथ व्यक्ति की विसंगतियों को समकालीनता के अंतर्गत मानकर समकालीनता को इस प्रकार परिभाषित किया है, "समकालीन बोध से अभिप्राय युगीन स्थितियों, मान्यताओं एवं विशिष्टताओं से है, जिसमें असहमति, विरोध, विद्रोह तथा क्रांति के साथ अनास्था,अविश्वास,अमर्यादा, संशय,संत्रास,ऊब,निराशा,व्यर्थता,विद्रुपता एवं विसंगति का बोध स्पष्ट होता है। युगीन परिवेश की व्यंजना इन बातों के द्वारा हुई है।"(5)
5. डॉ.नरेंद्र मोहन ने समकालीनता को ऐतिहासिक बोध के सहारे वर्तमान में अग्रसर होने के रूप में प्रकट किया है, "समकालीनता का अर्थ किसी कालखंड या दौर में व्याप्त स्थितियों और समस्याओं का चित्रणभर नहीं है, बल्कि उन्हें ऐतिहासिक अर्थ में समझना, उनके मूल स्रोत तक पहुंचना और निर्णय ले सकने का विवेक अर्जित करना है।"(6)
6. डॉ.दयानंद श्रीवास्तव ने इतिहास बोध के आधार पर समकालीनता की निरंतर परिवर्तित प्रक्रिया की पुष्टि करते हुए तथा विगत और आगत को वर्तमान से जोड़ते हुए साहित्य के संदर्भ में समकालीनता को इस प्रकार से व्यक्त किया है, "समसामयिकता इतिहास बोध की प्रक्रिया है, जो निरंतर परिवर्तित होती रहती है। अतः समसामयिकता का प्रयोग जब हम साहित्य में करते हैं तो उसका स्पष्ट अर्थ यह होता है कि, हम विगत एवं आगत दोनों से वर्तमान को जोड़ते हैं । किसी युग-विशेष में क्रियाशील जीवन-पद्धति और उस पद्धति को झेलते हुए मानव के अंतरभावों और उसकी स्थितियों का चित्रण समसामयिकता के लिए पर्याय नहीं है अपितु युग-संदर्भ को उद्वेलित या विकसित करने में विगत प्रक्रियाओं में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, उनकी पहचान भी समसामयिकता के लिए अनिवार्य सत्य है।"(7)

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur

7. सरिता कुमार ने काल-विशेष में साथ-साथ जीने तथा लिखने के साथ-साथ अपने समय वोध की स्थितियों का सामना करने के लिए कहते हुए समकालीनता के बारे में इस प्रकार से कहा है , "समकालीनता एक काल में साथ-साथ जीना और लिखना नहीं है । समकालीनता अपने काल की समस्याओं और चुनौतियों का सामना करना है ।"(8)

8. राजशेखर वर्मा ने सही मूल्यों की पहचान कराते हुए समकालीनता की परिभाषा इस प्रकार दी है,"समकालीनता के सही मायने ये हैं कि, स्थितियों, व्यक्तियों एवं शक्तियों का सही-सही विश्लेषण सशक्त रूप में सामने आए । सभी प्रकार के मुखौंटो की चीरफाड़, सही स्थिति का उद्घाटन, मूल्यवान जीवन की पहचान और वैसा जीवन जीने का जीवट जिसकी समाज मांग करता है । ये ही समकालीनता की पहचान के मुख्य मुद्दे स्वीकार किए जा सकते हैं ।"

9. डॉ.विश्वंभरनाथ उपाध्याय ने समकालीनता के अंतर्गत व्यक्ति तथा उनसे जुड़ी हुई स्थितियों को मुख्य आधार मानकर समकालीनता के हर पहलू को इस प्रकार व्यक्त किया है –

"i) मैं एक सर्वातीत अस्तित्व नहीं हूं ।मेरी सत्ता, देश और काल में है । मेरी इकाई पात्रों से, कुछ पात्रों से तो विशेष रूप से, साक्षात संबंधित है। पात्र,स्थान और काल एक त्रिकोण बनाते हैं और "मैं" केंद्रस्थ एक बिंदु है। यह केंद्रस्थान स्थिर नहीं है । इस केंद्रस्थ अस्तित्व को एक निरंतर आकर्षण-विकर्षण में रहना पड़ता है।

ii) पात्र, काल और देश तीनों मिलकर एक साथ मेरे अस्तित्व पर चोट करते हैं, कभी अलग-अलग, कभी युगल बनकर ।

iii) स्वचेतना और संचेतना या संवेदनशीलता, समकालीनता की अनिवार्य शर्तें हैं । जड़ व्यक्ति अपने काल, अपने समय के व्यक्ति और प्रवृत्तियों की परवाह नहीं करता, वह एक गतिहीन मुर्छा में जीता रहता है। जड़ता या अबोधता से यह संभव है कि, वह किसी संस्कार के बल पर वर्तमान काल में रहकर भूतकाल में ही जी रहा है। अतीत जीवी भी छठी पंक्ति में आते हैं। वे अपने काल में अपनी स्थितियों और व्यवस्थाओं की स्थितियों के कष्ट से अपने को बचाए रखते हैं। भविष्य जीवी किसी सुनहले खयाल में डूबे रह सकते हैं।

iv) सचेतन समकालीन व्यक्ति का काल बोध, देश बोध, व्यक्ति और समूह बोध संग्रथित (इंटीग्रेटेड) बोध होता है। वह काल के किसी बिंदु को निरपेक्ष और अलग-अलग नहीं मानता। वर्तमान में भूत और भविष्य की स्थिति को वह समझता है, भूत में वर्तमान और भविष्य को तथा भविष्य में भूत और वर्तमान काल के प्रवाह को।

v) समकालीनता का ज्ञान काल की निरंतरता या प्रवाह और परिणतियों की संभावनाओं का ज्ञान है।

vi) समकालीनता एक काल में साथ-साथ जीना नहीं है। समकालीनता अपने काल की समस्याओं और चुनौतियों का मुकाबला करना है। समस्याओं और चुनौतियों में भी केंद्रीय महत्व रखनेवाली समस्याओं की समझ में समकालीनता उत्पन्न होती है।

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur

vii) आज समकालीनता वस्तुतः स्थितियों, व्यक्तियों और शक्तियों के क्रूर विश्लेषण में ही है।

viii) मूल्यहीनता का बेलाग साक्षात्कार करना और स्वयं मूल्यवान जीवन जीना ही समकालीनता है ।

ix) यथास्थिति की चेतना को तोड़ना ही काफी नहीं है बल्कि यथास्थिति के वर्गों के विरुद्ध सशस्त्र युद्ध भी समकालीनता की अनिवार्य शर्त है।

x) समकालीनता मात्र का साक्षात्कार या पतन में भागीदारी नहीं बल्कि निहित स्वार्थों के विरुद्ध उठ खड़े होने और सक्रिय संघर्ष करने में समकालीनता है ।"(10)

इस प्रकार विश्वंभरनाथ उपाध्याय ने यथार्थ चित्रण पर अधिक बल दिया है, जो काल बोध के अनुसार व्यक्ति जीवन से जुड़ा है।

10.डॉ किरण बाला ने विश्वंभरनाथ उपाध्याय की तरह ही समकालीनता को प्रकर रूप में व्यक्त करते हुए उसके स्वरूप को इस प्रकार से व्यक्त किया है –

"i) समकालीनता लोक-मंगल की भावनाओं को साकार करनेवाले प्रयत्नों में निहित होती है।

ii) समय सत्य की परख रखनेवाला व्यक्ति ही समकालीन हो सकता है। सत्य के दबावों और उसके निरंतर प्रवाहों और परिणामों से बेखबर रहकर मनुष्य जीवन-यापन तो कर सकता है, लेकिन उसकी जिंदगी और पाशविकता में बौद्धिक दृष्टि से कोई फर्क नहीं रह जाता। उसकी जिंदगी जड़ बन जाती है। किसी भी व्यक्ति में जब तक अस्तित्व बोध चैतन्य नहीं हो जाता, वह जड़ बना रहता है।

iii) समय के निरंतर प्रवाह और परिणामों की संभावनाओं के ज्ञान को ही 'समकालीनता' का ज्ञान कहा जा सकता है।

iv) समकालीनता में माननीय हित और प्रगतिशील चेतना सम्मिलित रहती है।

v) समकालीनता जन विरोधी नीतियों और कर्मों का विरोध करती है ।

vi) फैले हुए वैचारिक धुंध को फाड़कर स्वस्थ और तेज रोशनी देना ही समकालीनता है।"(11)

उपर्युक्त विभिन्न परिभाषाओं में समकालीनता की निम्नलिखित विशेषताएं परिलक्षित होती हैं -

1.समकालीनता काल और देश बोध के अनुसार सक्रिय होती रहती है।

2. समकालीनता यथार्थ परिवेश की स्थितियों की सही पहचान है।

3.समकालीनता गतिमान है और इसी की परिणित प्रक्रिया के द्वारा समकालीन बोध को निश्चित रूप में व्यक्तित्व प्राप्त होता है।

4. समकालीनता पात्र, देश और सत्ता के संचालन का कार्य करने वाली केंद्रस्थ बिंदु है।

5.समकालीनता की पहचान स्थितियों, व्यक्तियों और शक्तियों की परख में स्थित है।

6. समकालीनता के द्वारा जड़, सचेतन तथा संवेदनशील व्यक्तियों की स्थितियों की पहचान होती है।

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur

7.सचेतन व्यक्ति ही अपने काल की समकालीनता की स्थिति को सही रूप में पहचान पाता है।

8.समकालीनता परंपरा से द्वंद्व करते हुए वर्तमान में भविष्य की संभावना को ढूंढते हुए आगे अग्रसर होती रहती

है।

9.समकालीनता व्यक्तियों में परिस्थिति के अनुसार चेतना जागृत कर उन्हें कार्य करने के लिए बाध्य करती है।

10. समकालीनता युगीन स्थितियों और उनसे निर्मित अनेक विसंगतियों तथा मानसिकता से पहचानी जाती है।

11. समकालीनता अनेक अंतर्विरोध,असंगतियों को दूर करने में है।

12.ऐतिहासिक बोध के सहारे किसी कालखंड की स्थिति को समझकर समस्याओं से मुक्ति पाना ही समकालीनता है।

13.समकालीनता में परंपरागत मूल्यों की रचना और परिस्थितिनुसार उन मूल्यों में परिवर्तन होकर नए मूल्यों का निर्माण होता है।

14. समकालीनता यथास्थित व्यवस्था, वर्गों तथा स्वार्थों के खिलाफ संघर्ष तथा विद्रोह कर आधुनिक रूप अपनाती है।

15. समकालीनता समाज के अनुरूप अनेक मुखौंटो का उद्घाटन कर सही स्थिति को दर्शाती है।

16.समकालीनता में अनेक समस्याओं का निर्माण और उनका समाधान निहित रहता है।

17.समकालीनता विगत और आगत दोनों को वर्तमान से जोड़ती है।

18.समकालीनता समस्याओं का सामना करना सिखाती है।

19.समकालीनता समय बोध के साहित्य के माध्यम से समस्याओं और चुनौतियों द्वारा प्रस्तुत होती है।

20.समकालीनता व्यक्ति को मूल्यहीन जीवन से निकालकर मूल्यवान जीवन जीने की राह दिखाती है।

इस प्रकार समकालीनता प्रवृत्तिमूलक या समय बोध धारणा को दर्शाती है। समकालीनता से ही काल को समझने की प्रेरणा मिलती है। और इसी प्रेरणा के द्वारा देश,व्यक्ति,समूह, व्यवस्था और वर्गों आदि स्थितियों और शक्तियों की पहचान होकर उनमें परिवर्तन की प्रतिक्रिया रहती है। इस कार्य को सचेतन व्यक्ति ही सुव्यवस्थित रूप से कर सकता है। इसी कारण वह व्यक्तियों, स्थितियों और शक्तियों को सही रूप से पहचानता है। वह अपने आंतरिक और बाह्य दबावों में अपने काल को उचित रूप में जान सकता है। बाद में इन कारणों को निपटाने का प्रयत्न करता है। इसी कारण युयुत्सा,आक्रोश, विद्रोह और क्रांति अपने काल की असम्मतियों और अंतरर्विरोधों को दूरकर उससे मुक्ति की कामना करती है। जड़ व्यक्तियों से यह कार्य असंभव है।

समकालीन परिवेश विगत और आगत दोनों से वर्तमान रूप से जुड़ा रहता है। परंपरा तथा आधुनिकता का इसमें स्थान निहित रहता है। कभी-कभी परंपरा अपना रूप दिखाती है, तो परंपरागत रूप को तोड़ने के लिए आधुनिकता अग्रसर होती रहती है। इसलिए परंपरा और आधुनिकता के बीच हमेशा द्वंद्व बना रहता है, जिसको ढोती हुई समकालीनता सक्रिय होती रहती है। समकालीनता इतिहास बोध का सहारा भी लेती है क्यों कि, इतिहास हमें यह भी दर्शाता है की हमारे संकट या दुःखों का कारण बाहरी नहीं भीतरी भी है। इन्हीं कारणों से मनुष्य वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक व्यवस्था का मुख्य प्रश्न बनता है। यह व्यवस्था धीरे-धीरे कठोर बनती जाती है और इसी व्यवस्था के कारण मनुष्य अमानवीकरण, पीड़ा और मुक्ति आदि से बेचैन हो जाता है। इसलिए मनुष्य के लिए जो अहितकारी व्यवस्था है उसे तोड़ना बहुत ही जरूरी है,

Principal
Maratha Mandir's
Arts & Commerce College

जिससे मूल्यवान जीवन का अर्थ सही रूप में पनप सके। समकालीनता की प्रक्रिया गतिशील है। इस निरंतर अविराम प्रक्रिया के द्वारा काल के अनेक मुद्राओं- भंगिमाओं और मुखौंटो की सही पहचान होती है। समकालीनता परिणति के रूप में लगातार अपनी प्रासंगिकता को साबित करने की कोशिश में अपना जीवन-यापन पाती है। इसी कारण इसे निरंतर संघर्षशिल या गतिशील होना पड़ता है।

इस प्रकार उपर्युक्त समकालीनता के स्वरूप को जानने के पश्चात हम समकालीनता की परिभाषा को अर्थ में सीमित ना रखते हुए तथा उसे अधिक विस्तार न देते हुए इस प्रकार अभिव्यक्त कर सकते हैं, "एक ही समय में जो समाज, व्यक्ति का वातावरण, समस्याएं, विचारधाराएं होती हैं उनका सूक्ष्म और यथार्थ रूप से चित्रण कर उनका समाधान करना ही समकालीनता है।"

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. पुष्पपाल सिंह-समकालीन कहानी :रचना मुद्रा पृ.21 राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली प्र. सं. 1986
2. जगदीश नारायण श्रीवास्तव-समकालीन कविता पर एक बहस पृ.11चित्रलेखा प्रकाशन इलाहाबाद प्र. सं. 1978
3. डॉ चंद्रशेखर - समकालीन हिंदी नाटक कथ्य चेतना पृ.10 आत्माराम प्रकाशन नई दिल्ली प्र. सं. 1982
4. वहीं पृ.6 से उद्धृत
5. डॉ हुकुमचंद राजपाल-समकालीन बोध और धूमिल का काव्य पृ. 16कोणार्क प्रकाशन नई दिल्ली प्र. सं.1980
6. पुष्पपाल सिंह-समकालीन कहानी: रचना मुद्रा पृ.22 से उद्धृत राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली प्रथम संस्करण 1986
7. पुष्पपाल सिंह-समकालीन कहानी युगबोध का संदर्भ पृ. 84 से उद्धृत नेशनल पब्लिक सिंह हाउस नई दिल्ली प्र. सं.1986
8. सरिता कुमार-महिला कथाकारों की रचनाओं में प्रेम का स्वरूप विकास पृ.9 राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली प्र. सं.1987
9. डॉ राजशेखर वर्मा-समकालीन संवेदना और हिंदी नाटक पृ. 63 विद्या प्रकाशन कानपुर प्र. सं. 1994
10. डॉ.विश्वंभरनाथ उपाध्याय -समकालीन सिद्धांत और साहित्य पृ. 13 से 17 दी मैकमिलन कंपनी ऑफ़ इंडिया लिमिटेड नई दिल्ली प्र. सं.1976
11. डॉ किरण बाला-समकालीन हिंदी कहानी और समाजवादी चेतना पृ. 9 से 12 अनुभव प्रकाशन कानपुर प्र. सं. 1988

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur

Impact Factor – 6.625

E-ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

January 2021

Special Issue 258 (A)

Multidisciplinary Issue

Chief Editor -
Dr. Dhanraj T. Dhangar,
Assist. Prof. (Marathi)
MGV's Arts & Commerce College,
Yeola, Dist – Nashik [M.S.] INDIA

Executive Editors :
Dr. Tejesh Beldar, Nashikroad (English)
Dr. Gajanan Wankhede, Kinwat (Hindi)
Mrs. Bharati Sonawane, Bhusawal (Marathi)
Dr. Rajay Pawar, Goa (Konkani)

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) – 6.625 (2019),
Special Issue – 258 (A)
Peer Reviewed Journal
E-ISSN : 2348-7143
January 2021

Impact Factor – 6.625 E-ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

January 2021

Special Issue 258 (A)

Chief Editor -
Dr. Dhanraj T. Dhangar,
Assist. Prof. (Marathi)
MGV's Arts & Commerce College,
Yeola, Dist – Nashik [M.S.] INDIA

Executive Editors :
Dr. Tejesh Beldar, Nashikroad (English)
Dr. Gajanan Wankhede, Kinwat (Hindi)
Mrs. Bharati Sonawane, Bhusawal (Marathi)
Dr. Rajay Pawar, Goa (Konkani)

Our Editors have reviewed papers with experts' committee, and they have checked the papers on their level best to stop furtive literature. Except it, the respective authors of the papers are responsible for originality of the papers and intensive thoughts in the papers. Nobody can republish these papers without pre-permission of the publisher.

- Chief & Executive Editor

SWATIDHAN INTERNATIONAL PUBLICATIONS
For Details Visit To : **www.researchjourney.net**

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College

*Cover Photo (Source) : Internet – Kisan Aandolan Delhi against Farmer Bill 2020

© All rights reserved with the authors & publisher

Price : Rs. 1000/-

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.625 (2019), Special Issue - 258 (A)
Peer Reviewed Journal
E-ISSN : 2348-7143
January 2021

Editorial Board

Chief Editor -
Dr. Dhanraj T. Dhangar,
Assist. Prof. (Marathi)
MGV's Arts & Commerce College,
Yeola, Dist – Nashik [M.S.] INDIA

Executive Editors :
Dr. Tejesh Beldar, **Nashikroad (English)**
Dr. Gajanan Wankhede, **Kinwat (Hindi)**
Mrs. Bharati Sonawane, **Bhusawal (Marathi)**
Dr. Rajay Pawar, **Goa (Konkani)**

Co-Editors -
- **Prof. Mohan S. -** Dean faculty of Arts, Delhi University, **Delhi, India**
- **Prof. Milena Brotaeva -** Head, Classical East Department, Sofia University, **Sofia, Balgeria**
- **Dr. R. S. Sarraju –** Center for Translation Studies, University of Hydeabad, **Hydrabad, India**
- **Mr.Tufail Ahmed Shaikh-** King Abdul Aziz City for Science & Technology, Riyadh, **Saudi Arabia.**
- **Dr. Anil Dongre** - Head, Deptt. of Management, North Maharashtra University, Jalgaon **[M.S.] India**
- **Dr. Shailendra Lende** - R.T.M. Nagpur University, Nagpur **[M.S.] India**
- **Dr. Dilip Pawar -** BoS Member (SPPU), Dept. of Marathi, KTHM College, Nashik. **[M.S.] India**
- **Dr. R. R. Kazi** - North Maharashtra University, Jalgaon **[M.S.] India**
- **Prof. Vinay Madgaonkar -** Dept. of Marathi, Goa University, **Goa, India**
- **Prof. Sushant Naik -** Dept. of Konkani, Govt. College, Kepe, **Goa, India**
- **Dr. G. Haresh -** Associate Professor, CSIBER, Kolhapur **[M.S.] India**
- **Dr. Munaf Shaikh** - N. M. University, Jalgaon & Visiting Faculty M. J. C. Jalgaon **[M.S.] India**
- **Dr. Sanjay Kamble** -BoS Member Hindi (Ch.SU, Kolhapur), T.K. Kolekar College, Nesari **[M.S.]**
- **Prof. Vijay Shirsath-** Nanasaheb Y. N. Chavhan College, Chalisgaon **[M.S.] India**
- **Dr. P. K. Shewale** - Vice Principal, Arts, Science, Commerce College, Harsul **[M.S.] India**
- **Dr. Ganesh Patil** - M.V.P.'s, SSSM, ASC College, Saikheda, Dist. Nashik **[M.S.] India**
- **Dr. Hitesh Brijwasi -** Librarian, K.A.K.P. Com. & Sci. College, Jalgaon **[M.S.] India**
- **Dr. Sandip Mali** - Sant Muktabai Arts & Commerce College, Muktainagar **[M.S.] India**
- **Prof. Dipak Patil** - S.S.V.P.S.'s Arts, Sci. and Com. College, Shindhkheda **[M.S.] India**

Advisory Board -
- **Dr. Marianna Kosic** - Scientific-Cultural Institute, Mandala, **Trieste, Italy.**
- **Dr. M.S. Pagare -** Director, School of Languages Studies, North Maharashtra University, Jalgaon
- **Dr. R. P. Singh** -HoD, English & European Languages, University of Lucknow **[U.P.] India**
- **Dr. S. M. Tadkodkar** - Rtd. Professor & Head, Dept. of Marathi, Goa University, **Goa, India.**
- **Dr. Pruthwiraj Taur -** Chairman, BoS., Marathi, S.R.T. University, Nanded.
- **Dr. N. V. Jayaraman** - Director at SNS group of Technical Institutions,**Coimbatore**
- **Dr. Bajarang Korde** - Savitribai Phule Pune University **Pune, [M.S.] India**
- **Dr. Leena Pandhare** - Principal, NSPM's LBRD Arts & Commerce Mahila Mahavidyalaya, Nashik Road
- **Dr. B. V. Game** - Principal, MGV's Arts and Commerce College, Yeola, Dist. Nashik.

Review Committee -
- **Dr. J. S. More** – BoS Member (SPPU), Dept. of Hindi, K.J.Somaiyya College, Kopargaon
- **Dr. S. B. Bhambar,** BoS Member Ch.SU, Kolhapur, T.K. Kolekar College, Nesari
- **Dr. Uttam V. Nile -** BoS Member (NMU, Jalgaon) P.S.G.V.P. Mandals ACS College, Shahada
- **Dr. K.T. Khairnar–** BoS Member (SPPU), Dept. of Commerce, L.V.H. College, Panchavati
- **Dr. Vandana Chaudhari** KCE's College of Education, Jalgaon
- **Dr. Sayyed Zakir Ali ,** HoD, Urdu & Arabic Languages, H. J. Thim College, Jalgaon
- **Dr. Sanjay Dhondare –** Dept. of Hindi, Abhay Womens College, Dhule
- **Dr. Amol Kategaonkar –** M.V.P.S.'s G.M.D. Arts, B.W. Commerce & Science College, Sinnar.

Published by –
© Mrs. Swati Dhanraj Sonawane, Director, Swatidhan International Publication, Yeola, Nashik
Email : swatidhanrajs@gmail.com **Website :** www.researchjourney.net **Mobile :** 9665398258

Principal
Maratha Mandal's
Arts & ... College
Khanapur

29	5th Generations of Programming Language - A Review **Er. Amarendra Kumar Chaurasia**	133
30	Xenophobia and Racial Hatred in Andre Brink's *'A Chain of Voices'* **Dr. Vijay Matkar**	144
	हिंदी विभाग	
31	आदिवासी विमर्श **डॉ. संतोष पवार**	148
32	अज्ञेय और अन्तरा **डॉ.अनुकूल सोलंकी**	154
33	वर्तमान रिश्तों की सच्चाई : 'वो तेरा घर ये मेरा घर' **डॉ. जी. एस. भोसले**	160
34	स्त्री - शिक्षा की चुनौती एवं मानवाधिकार **प्रमोद कानेकर**	164
35	संत कवि कबीर के अध्यात्म संबंधी विचार **डॉ.महेंद्रसिंग पवार**	173
36	हिंदी - मराठी नाटक : तुलनात्मक अध्ययन **डॉ. संतोष पवार**	175
37	मोहन राकेश के नाटकों में मनोविज्ञान **प्रा.सूर्यकांत आमलापुरे**	181
38	उषा राजे सक्सेना की कहानियों में भारतीय एवं पाश्चात्य परिवेश का समन्वय **डॉ.कृष्णा पाटील**	185
39	डॉ.अम्बेडकर का समाज दर्शन **डॉ.हरीश कुमार**	189
40	हलफनामे : भारतीय लघु कृषकों की व्यथा- कथा **डॉ.सन्मुख मुच्छटे**	192
41	श्री. नरेश मेहता के रेडियो नाटक **डॉ.एन.पी.नारायण शेट्टी**	195
42	सुरजपाल चौहान की कहानियों में आंबेडकरवादी संवेदना **डॉ.रविंद्र खरे**	202
43	सोना माटी उपन्यास में ग्रामीण समस्या **प्रो.देविदास बामणे**	208
44	सुधा अरोड़ा के कथा साहित्य में स्त्री-विमर्श **श्री अशोक शिंदे, डॉ. सिद्धेश्वर गायकवाड**	213
45	प्रेम का आर्थिक मूल्य **डॉ. एम. मुल्ला दस्तगीर**	217
46	रसखान के काव्य में कृष्ण और राधा के विविध रुप **डॉ. मिनल बर्वे**	221
47	सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हिंदी **डॉ. शरद कोलते**	225
48	भारत में सूर्य का स्थापत्य एवं शिल्प का पुरातात्विक विवेचन **डॉ.रामभाऊ काशीद**	229
49	मालवा कालीन कला स्थापत्य : एक अध्ययन **डॉ.राधाकृष्ण जोशी**	232
50	शेरशाह का मकबरा - सूर वंश की विरासत : एक अध्ययन **प्रा.राजकुमार चाटे**	235
	उर्दू विभाग	
51	امیر خسرو اور ہماری ادبی و ثقافتی روایات **ڈاکٹر عبدالرحیم اے۔ ملّا**	238
52	طوطیٔ ہند امیرخسرو فن و شخصیت **ڈاکٹر سید تاج الہدیٰ محمد یوسف خطیب**	241

Our Editors have reviewed papers with experts' committee, and they have checked the papers on their level best to stop furtive literature. Except it, the respective authors of the papers are responsible for originality of the papers and intensive thoughts in the papers. Nobody can republish these papers without pre-permission of the publisher.

- Chief & Executive Editor

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.625 (2019),
Special Issue - 258 (A)
Peer Reviewed Journal
E-ISSN : 2348-7143
January 2021

प्रेम का आर्थिक मूल्य

डॉ. दस्तगीर एम. मुल्ला
M.A.,SLET.,Ph.D.,D.Litt.
अध्यक्ष, हिंदी विभाग तथा सहायक प्राध्यापक,
मराठा मंडल कला और वाणिज्य महाविद्यालय,
खानापुर, जिला –बेलगावी (कर्नाटक राज्य)
मोबाइल नंबर- 87620 75786
Email :mulladm@gmail.com

मनुष्य के वैयक्तिक तथा सामाजिक जीवन में अर्थ को बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। भारतीय चार पुरुषार्थो में धर्म, अर्थ,काम, मोक्ष में भी अर्थ का स्थान निहित है। प्राचीन काल में इसका सानिध्य धर्म के अंतर्गत था लेकिन जैसे ही आधुनिक युग में धर्म की पकड़ शिथिल बनती गई वैसे ही अर्थ ने ही धर्म का रूप ले लिया। आज व्यक्ति के जीवन में सबसे आवश्यक तत्व अर्थ ही है। अर्थ पर ही उसकी जिंदगी का वर्तमान और भविष्य की दिशा निर्धारित होती है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात अर्थ का रूप सर्वश्रेष्ठ बनकर उभर आया। उससे पूर्व इसका सामान्य रूप बना था। स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व तथा उसके पश्चात कुछ वर्षों तक सामान्य जनता ने अर्थ से जुड़े अपने जीवन से संबंधित जो सपने संजोए थे वे सपने टूटते गए। "इन सपनों को तोड़ने में युद्धों और तात्कालिक परिस्थिति ने अपनी भूमिका निभाई सन् 1962 ई. में भारत-चीन युद्ध द्वारा हमारा मोहभंग, सन् 1965 और सन् 1971 ई. के भारत-पाक युद्धों में हमारा बढ़ता मनोबल किंतु दूसरी ओर युद्धों की इस श्रंखला द्वारा हमारी पहले से कमजोर अर्थ व्यवस्था के ढांचे का पूरी तरह चरमरा, मुद्रास्फीति, महंगाई, करो का दुर्वह भरमार और फिर अकाल,अतिवृष्टि, बाढ़ आदि ने जीवन को अस्थिर बना दिया।"(1) सप्तम और अष्टम दशक तक पहुंचते-पहुंचते आज आम आदमी की आर्थिक स्थिति अत्यंत दयनीय बन गई। अनेक क्षेत्रों में अर्थ ही महत्वपूर्ण बन गया। जीवन में अभाव से व्यक्तियों में घोर निराशा उत्पन्न होने लगी। इसका क्षेत्र सामाजिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक स्तर से जुड़ गया। संपूर्ण समाज का ढांचा इसी पर आधारित बनने लगा। अर्थ के कारण जीवन व्यक्तिवादी बन गया। जिसके पास धन है वही समाज में प्रतिष्ठित व्यक्ति माना जाने लगा। पद और प्रतिष्ठा की नाप अर्थ पर ही आधारित होने लगी। इसी से इसका स्वरूप विकास बढ़ने लगा और यह आज स्त्री-पुरुष प्रेम-संबंध के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण मूल्य बन गया है।।

पैसा या रुपया वैसे तो एक कागज का टुकड़ा है लेकिन अन्य कागजी टुकड़ों के मुकाबलों में इस भारतीय रिजर्व बैंक के कागजी टुकड़े को अधिक अग्रणी स्थान प्राप्त है। "रुपए के रूप, रस, गंध में कोई आकर्षण नहीं होता। जिस वेग से मनुष्य उस पर टूटते हैं, वैसे व्यक्ति भंवरे कमल पर और कौए मांस पर भी न टूटते होंगे।"(2) आज अर्थ की महत्ता सर्वव्यापक बन गई है ऐसी धारणा व्यक्ति की बन गई है। इसे पाने के लिए व्यक्ति आज अनेक अशोभनीय कार्य कर रहा है। "यदि पैसा है तो सब कुछ संभव है, वरना इसके अभाव में संभव वस्तुएं असंभव बन जाया करती हैं। व्यक्ति अधिक से अधिक अर्थोपार्जन के लिए ही नैतिक,अनैतिक, मान्य, अमान्य कार्य कर भ्रष्टाचार को बढ़ावा दे रहा है।"(3)

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College

अर्थ मानवीय संबंधों की धुरी बन गया है। अर्थ के कारण आत्मीय संबंधों में जहर की स्थिति उत्पन्न हो गई है। सबसे पहले अर्थ का असर पारिवारिक रिश्तो पर पड़ा है। पारिवारिक रिश्ते पहले भावनाओं से जुड़े रहते थे लेकिन अर्थ-तंत्र से व्यक्ति के जुड़ने के कारण इन रिश्तो में विवशता आ गई और आज अर्थ की कमी के कारण रिश्ते निभाएं नहीं जाते बल्कि ढोए जाते हैं। इसका सबसे पहले झटका माता-पिता और बच्चों को लगा है। आर्थिक कमी के कारण युवाओं को अपना विवाह करना असंभव हो गया है। जिससे पूरे परिवार के सदस्य पीड़ादायक स्थिति में अपना जीवन जीते हैं। विवाह के रिश्ते पद तथा आर्थिक प्रतिष्ठा के बल पर निश्चित किए जाते हैं। जिनके पास अधिक धन है उसके ही साथ अपने लड़कों का नाता जोड़ा जाने लगा है। युवा स्वयं अपना व्यक्तित्व रुपयोंवाली युवती से विवाह कर बना रहे हैं। माता-पिता को आर्थिक कमजोरी या गरीबी के कारण अपनी बेटियों का विवाह करना दुश्वार, चिंतादायक बन गया है। आज आर्थिक असमानता के कारण अमीरी-गरीबी की खाई और गहरी वनती जा रही है।

आधुनिक युग में पति-पत्नी के प्रेम-संबंधों के जीवन की गाड़ी विना अर्थ के ठीक ढंग से नहीं चल सकती। उन दोनों के आपसी प्रेम-संबंध का आधार अर्थ केंद्रित बन गया है। वैवाहिक संबंधों की दृढ़ता, संतोष तथा असंतोष आदि सब कुछ आर्थिक इकाई पर ही निर्भर करता है। अर्थ के अभाव में इनमें व्यर्थता,पीड़ा, निराशा, कुंठा, अजनबीपन, विघटन आ गया है। अर्थ की मानसिकता पति-पत्नी या स्त्री-पुरुष प्रेम-संबंधों में नई नैतिकता निर्माण कर रही है। आधुनिक युग में सबसे अधिक पीड़ा स्त्री-पुरुष को आर्थिक कमी के कारण हो रही है। नारी का व्यक्तित्व पद, प्रतिष्ठा, नौकरी आदि की भावना अनैतिक रास्ते को जन्म दे रही है। अर्थ के कारण पति-पत्नी के रिश्तों में त्याग और आदर्श की भावना नहीं रही। नारी आत्मनिर्भर बनने से वह अपने परंपरागत रूढ़ियों से विद्रोह करने लगी है। वैज्ञानिक प्रगति के कारण पति-पत्नी के रिश्तों में अधिक लचीलापन आ गया है। इसी वैज्ञानिक प्रगति के कारण नैतिक मानदंडों में परिवर्तन उपस्थित हो गया है। विज्ञान के आविष्कार से समाज में अर्थ-तंत्र का स्थान महत्वपूर्ण वन गया है।व्यक्ति औद्योगिक और तकनीकी की ओर आकर्षित होने लगा है। उसकी भौतिक यंत्रों को पाने की लालसा बढ़ने लगी है। इसे पाने के लिए वह बुरे रास्ते से अर्थ कमाने लगा है। भौतिक सुख और सुविधाओं की इच्छाओं ने उसकी नैतिकता को धक्का लगा दिया है और इस धक्के से दांपत्य संबंध अछूता नहीं रह पाया है। पारिवारिक जीवन को ठीक ढंग से चलाने तथा आर्थिक कमी को पूरा करने के लिए पत्नी को बाहर जाकर धन कमाना पड़ता है। जिससे उसे बाहरी परिवेश में अनेक यातनाएं सहनी पड़ती हैं।

आज युवा नारियों को आर्थिक विवशता का बोझ ढोना पड़ रहा है। पारिवारिक आर्थिक कमजोरी ने उन पर यह बोझ डाल दिया है। यही बोझ उन्हें विवाह जैसे आनंदमय जीवन से अलग कर देता है। "युवा नारियां भी उत्तरदायित्व के बोझ से दबी हैं या परिवार की चिंता से ग्रस्त हैं और परिणय-सूत्र में बंध नहीं पाती है।"(4) आज ऐसी अनेक नारियां एक ओर पारिवारिक आर्थिक अभाव के कारण अविवाहित हैं तो दूसरी ओर वैयक्तिक कारणों से अविवाहित हैं। यह वैयक्तिक कारण अर्थ ही है। अर्थ के आधार पर अनेक नारियां अपनी प्रतिष्ठा बनाने में लगी रहती हैं। यह प्रतिष्ठा बनाते-बनाते उनकी विवाह की उम्र ढलने लगती है और उनके लिए मनचाहे ढंग का जीवन साथी न मिल पाने से कुंठाग्रस्त स्थिति में अपना जीवन- यापन करती हैं।नारी नौकरी कर रही है इस कारण उसमें आर्थिक निर्भरता से अहं भावना बनी हुई है। इसी अहं के कारण पति-पत्नी में संघर्ष, अधिकार भाव के लिए विद्रोह, पीड़ा तथा विघटन की स्थिति निर्माण हो गई है।

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur

अर्थ के आधार पर ही वर्गीय समाज की रचना हो गई है जिसे उच्चवर्ग, मध्यवर्ग और निम्नवर्ग के नाम से संबोधित किया जाता है। अर्थ के कारण उच्च वर्ग अधिक स्वच्छंदताग्रस्त बन गया है। वह अर्थ के बल पर अनेक अमानवीय कृत्य कर रहा है। उसके लिए अर्थ के बल पर नारी को पाना भी आसान हो गया है। इन लोगों के कारण प्रेम व्यावहारिकता का रूप बन गया है।आज प्रमुख व्यापारी, राजनीतिक नेता, पूंजीवादी लोग अपनी आर्थिक स्वार्थ की पूर्ति के लिए प्रेम की व्यावहारिकता का उपयोग कर रहे है। इसी बीच में नारी को भोग की वस्तु बना बैठे हैं।यही प्रभाव अन्य वर्ग के लोगों पर पड़ा है और वे अपने ही आत्मीय रिश्तो को अर्थ के लिए खाई में धकेल रहे हैं । अर्थ के कारण स्त्री-पुरुष प्रेम-संबंध में नई नैतिकता का निर्माण हो रहा है।

आर्थिक कठिनाई मध्यवर्ग को अधिक सताती है। इस वर्ग के सपने उच्च बनने, सुख-सुविधाओं को प्राप्त करने के होते हैं। "आर्थिक विवशता ने मनुष्य के सपनों को क्षतिग्रस्त कर जीवन में एक निरर्थकता का एहसास भर दिया है।"(5) इसी निरर्थकता के कारण इस वर्ग के मनुष्य कुंठीत बन जाते हैं। निम्नवर्ग के लोग सपनों के बगैर अपना जीवन पेट भरने के लिए जीते रहते हैं। लेकिन अर्थ के कारण गरीब लोगों का शोषण ही अधिक किया जाता है।

प्रेम ने अर्थ के कारण स्वार्थी रूप प्राप्त कर दिया है। जिसके पास अधिक धन है उससे ही प्रेम-संबंध स्थापित किया जा रहा है। प्रेम-विवाह या प्रेम करनेवाले स्त्री-पुरुष के बीच का प्रेम-संबंध, उसकी सफलता-असफलता, सामंजस्य-असामंजस्य, उनकी वर्गीय तथा सामाजिक स्थिति आदि सब कुछ अर्थ पर ही निर्भर करती है।

बेरोजगारों के लिए अपना विवाह या प्रेम-विवाह करना भी मुश्किल हो रहा है। अर्थ के कारण आज समाज में अनेक प्रकार की समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं, जिसमें वेश्या समस्या प्रमुख है। वेश्या के पास हृदय है उसकी भी प्रेम करने की लालसा है लेकिन आर्थिक विवशता के कारण उसका प्रेम आत्मीय रूप प्राप्त नहीं करता है।

प्रेम का आर्थिक मूल्य आज पूंजीवादी व्यक्ति के कारण नारी को अपनी संपत्ति और गुलाम समझता है जिसके कारण नारी की प्रेममय भावनाएं परिवर्तित हो रही हैं। आज की नारी को अर्थ के कारण दुविधाजनक संकट में अपना जीवन-यापन करना पड़ रहा है। पुरुष आज भी उस पर अपना दबाव बनाकर रखना चाहता है, वह उसका शोषण करता है। " स्त्री का शोषण तब तक हो सकता है जब तक वह मानसिक तथा आर्थिक रूप से अपने को पुरुष की आश्रीता समझती है।जैसे ही वह आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त कर लेगी इस अधिकार लिप्सा के पंजे से मुक्त हो सकती है।"(6) कुछ एक नारियां आर्थिक निर्भरता तथा शिक्षा के कारण पुरुष से समानता कर रही हैं। अर्थ के कारण प्रेम, विवाह आदि के साथ नैतिक मान्यताओं में बदलाव तथा समस्याएं उत्पन्न हो गई हैं। आर्थिक मूल्य के कारण प्रेम हृदय के स्थान से उतरकर शरीर और स्वार्थ का स्थान प्राप्त कर लिया है। अर्थ-तंत्र को जब तक समतोल नहीं रखा जा सकता तब तक स्त्री-पुरुष प्रेम-संबंध में यह उतार-चढ़ाव की स्थिति पैदा ही होती रहेगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College

1. डॉ.पुष्पपाल सिंह -समकालीन कहानी सोच और समझ पृ. सं. 80आत्माराम एंड संस, नईदिल्ली प्र. सं. 1986

2. आ. रामचंद्र शुक्ल-चिंतामणि भाग -1 पृ. सं. 49 सरस्वती मंदिर काशी, सवंत. 2006
3. डॉ. मंजुला गुप्ता- हिंदी उपन्यास समाज और व्यक्ति का द्वंद पृ. सं. 27सूर्य प्रकाशन, नई दिल्ली प्र. सं. 1986
4. डॉ. किरण बाला अरोड़ा -समकालीन हिंदी कहानी और समाजवादी चेतना पृ. सं. 190 अनुभव प्रकाशन, कानपुर प्र. सं. 1988
5. डॉ.पुष्पपाल सिंह-समकालीन कहानी सोच और समझ पृ. सं. 54 आत्माराम एंड संस, नई दिल्ली प्र. सं. 1986
6. डॉ विजय मोहन सिंह- आधुनिक हिंदी उपन्यासों में प्रेम की परिकल्पना पृ. सं. 235 रचना प्रकाशन, इलाहबाद प्र. सं.1972

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce C
Kha...

MAH/MUL/ 03051/2012 **ISSN :2319 9318**

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता™

Jan. To March 2021
Special Issue

Date of Publication
20 Feb. 2021

Chief Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

❖ **विद्यावार्ता** या आंतरविद्याशाखीय बहूभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. **न्यायक्षेत्र:बीड**

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat.**

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur

... in [illegible] social science, science, commerce, linguistics [illegible] some [illegible] emerging shifts in trends and concepts and some [illegible] implications [illegible] content for future research in the field.

Editorial Board

Prof. Sayed [illegible] Peerzade
Chief Editor

Dr. [illegible]
Joint Editor

Members

Dr. A. A. [illegible]
Dr. M. G. Chodeswar
Dr. Sayed Moinullah Hussain
Dr. Azra Inamdar
Prof. Shamid Wadkar

Dr. A. M. R. [illegible]
Prof. M. A. Pasam
Dr. Saad Kaleemullah Bakhtiyar
Prof. [illegible]hussain Mujawar

Principal
Dr. A. N. Chaudhari

Indexed

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur

ISSN-2319 9318

IMPACT FACTOR 7.940 IIJIF

Publisher & Owner
Archana Rajendra Ghodke
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh, [illegible] - 431 126
(Maharashtra) [illegible] 205296
E-mail: vidyawarta@gmail.com
www.vidyawarta.com

राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पहला संस्करण–२०१५ पृ. कवर पेज.

६) चर्चा हमारा, मैत्रेयी पुष्पा, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण २०११ पृ–४३

७) बाजार के बीच: बाजार के खिलाफ, प्रभा खेतान, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण २००४ पृ. २२७

८) स्त्रीवादी विमर्श : समाज और साहित्य क्षमा शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, २००८ पृ. ९८

❑❑❑

37

दलित आत्मकथा " तिरस्कृत " का मूल्यांकन

डॉ डी.एम. मुल्ला
अध्यक्ष तथा सहायक प्राध्यापक,
हिंदी विभाग ,
मराठा मंडल कला और वाणिज्य महाविद्यालय
खानापुर, जिला–बेलगावी (कर्नाटक)

****

हिंदी साहित्य की धारा अपने को विविध विधाओं के द्वारा साहित्य क्षेत्र को सुशोभित कर रही है। विविध विधाओं के साथ–साथ आत्मकथा विधा भी अपने को स्वयं की पहचान कराने लगी हुई है। हिंदी में अनेक क्षेत्र के व्यक्तियों की आत्मकथाएं प्राप्त होती हैं। इनमें केवल देशभक्त, वैज्ञानिक, कलाकार, धार्मिक हस्तियां तथा प्रबल क्षेत्र के व्यक्तियों की आत्मकथाएं देखने को मिलती है। इन आत्मकथाओं में सर्वहारा वर्ग कहीं तो दूर ही नजर आता है। लेकिन बदलते परिस्थिति के अनुसार सर्वहारा वर्ग भी अपने अस्तित्व को पहचान में लगा हुआ है। वह अनेक दर्द, पीड़ा और कष्टों को सहते हुए शिक्षा को प्राप्त कर रहा है, जिससे उसमें भी स्वाभिमान और 'स्व' का तत्व जाग रहा है और वह अपनी पहचान आत्मकथा के द्वारा दूसरों तक पहुंचने का प्रयास कर रहा है । इस सर्वहारा वर्ग के लेखकों द्वारा लिखे गए आत्मकथा को दलित अथवा सर्वहारा की आत्मकथा का रूप देकर इन आत्मकथाओं के द्वारा दलित अथवा सर्वहारा का दर्द यातना इन सबके बीच से उसका उभरता स्वरूप लोगों को प्राप्त हो रहा है। दलित लेखकों के द्वारा लिखे गए आत्मकथाओ में उनका भोगा हुआ अनुभव यथार्थ रूप में अपनी कथा को कह जाता है, जिससे दलित सर्वहारा का प्रतिनिधित्व हो

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur

वह लेखक कर रहा है ऐसा साहित्य जगत हो जाता है। जिनकी आत्मकथाओं से साहित्यप्रेमी उनकी कथाओं को पढ़कर झकझोर जाते हैं।

अनेक दलित लेखकों ने अपनी आत्मकथाओं को लिखा है ,मगर हम यहां पर सूरजपाल चौहान कृत ''तिरस्कृत''आत्मकथा का मूल्यांकन करने जा रहे हैं। जिसमें लेखक का जीवन, साथ–साथ लेखक के आर्थिक, सामाजिक, उसकी जाति विशेषता को लेखक के माध्यम से ही जानने का प्रयास करेंगे।

१.जीवन वृतांत का परिचय.

लेखक सूरजपाल का जन्म अलीगढ़ के फुसावली ग्राम में २० अप्रैल १९५५ में हुआ। पिता रोहनलाल और माता अशरफियां के सर्वहारा (दलित) परिवार में लेखक का जन्म हुआ।पिता दिल्ली के निजामुद्दीन रेल्वे स्थानक पर कुली का काम किया करते थे। बीमारी की हालत में गरीब होने की वजह से इलाज न होने से मां का देहांत जल्द ही हो गया । सूरजपाल के दो भाई थे लेकिन मां के चल बसने पर वह अपने पिता के साथ दिल्ली आ गए। आर्थिक अभाव ग्रस्तता में ही लेखक का बचपन बितने लगा।

दिल्ली के खान मार्केट कि नगर निगम प्राथमिक स्कूल में सूरजपाल की शिक्षा का प्रारंभ हुआ। दिवानंद आर्य हायर सेकेंडरी स्कूल से एच. एस.सी. प्राप्त की। जातिगत परंपरा के कारण लेखक के न चाहते हुए भी ग्यारहवीं कक्षा में आते ही उनका विवाह विमल के साथ हो गया। लेखक अपने इस विवाह पद्धति को अपनी जाति, समाज की कमजोरी मानते हैं । फिर लेखक ने गोविंदपुरी के भगत सिंह कॉलेज से बी. ए. की पदवी प्राप्त की।

सूरजपाल का जीवन संवेदनशील होने के कारण यही संवेदनशीलता उन्हें साहित्य की ओर खींच लाई लेखक सूरजपाल ने साहित्य में अपने समाज की व्यथा, अभावग्रस्तता को अभिव्यक्त करने का प्रयास किया। उनकी प्रमुख विधा कविता और कहानी के माध्यम से अपने उपेक्षित समाज की छवि को रखा। यही छवि उन्हें दलित लेखक का रूप प्रदान कर गई। सूरजपाल साहित्य सेवा के साथ–साथ भारत सरकार के उपक्रम एस.टी.सी. नई दिल्ली में सहायक पद से लेकर सीनियर प्रबंधक (विपणन) पद पर पहुंच गए।

लेखक का संबंध अपने समाज की बातों को रखने के साधन आकाशवाणी, पत्र–पत्रिकाओं, कहानी, कविता, लेख, संस्मरण, दूरदर्शन, राष्ट्रीय मंच आदि से जुड़ा रहा जिससे वे दलित साहित्यकार बन गए और उनके कहानी संग्रह 'हैरी कब आएगा' फिर उनका बहुआयामी ''तिरस्कृत'' आत्मकथा लोगों के सम्मुख आई जिसमें लेखक ने आर्थिक, सामाजिक आदि मुद्दों को अपनी लेखनी के माध्यम से उजागर किया। लेखक सूरजपाल का साहित्य तेलुगू, मराठी, गुजराती, उर्दू आदि अनेक भाषाओं में अनुवाद हो गया है ।

२.आर्थिक परिप्रेक्ष्य :

बेरोजगारी .

दलित समाज दूसरे उच्चवर्गीय लोगों की सेवा के लिए ही पैदा हुआ है यही धारणा समाज की बनी रही है। सवर्ण लोगों की सेवा करने में ही अपनी जिंदगी लगाता है लेकिन उसे क्या प्राप्त होता है केवल पेट के लिए रोटी मात्र वह भी बासी और जूठन मात्र न की एक अच्छासा रोजगार । लेखक सूरजपाल के पिता निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन पर मजदूरी करते थे। तो माता ठाकुरों के घर के मोहल्ले की साफ–सफाई का काम करती थी । लेखक भी मां की बीमारी के कारण गांववालों के घर मोहल्ला साफ किया करते थे। दलितों का घर बेरोजगारी के कारण गरीबी का त्रासदी भरा घुटन मे निकालना पड़ता। गरीबी के कारण दलित घरों में बारिश का पानी भर जाता तो कीचड़ और बदबू में जागकर रातें बितानी पड़ती जिसके कारण स्वास्थ्य बिगड़ जाता।

शिक्षा से वंचित– दलितों में परंपरा से ही गरीबी जुड़ी हुई थी जिसके कारण दलित केवल काम और पेट इन चक्की के पाटों में ही फंसा रहता।

Principal Maratha Mandal's Arts & Commerce College Khanapur

गरीबी और सामाजिक विषमता स्वरूप दलित अशिक्षित बन जाते थे । गरीबी के कारण स्कूल से दूर रहते अगर स्कूल जाते भी तो गुरु द्वारा ही जाति के ओछेपन को याद दिला दिलाकर अपमानित किया जाता। लेखक को भी इसका सामना करना पड़ा फिर भी वह गंदगी भरी जिंदगी में शिक्षा रूपी फूल को अपनी जिंदगी में अपना बैठे। गरीबी के कारण दलितों के बच्चे बुद्धिमानी होकर भी शिक्षा अधूरी छोड़ देते हैं।

आर्थिक रूप से शोषण–

सवर्ण वर्ग द्वारा दलितों का आर्थिक रूप से शोषण सदियों से चलता ही आ रहा है ऐसी लेखक की मनीषा है ।लेखक अपने गांव के अपने सर्वहारा पक्ष को ठाकुरों के यहां काम करते देखता और बदले में ठाकुर केवल रोटी और गुड़ की डली देते ।अगर दलित पसीने का मुआवजा मांगते तो उन्हें पीटने की नौबत आ जाती। लेखक अपनी जाति के लोगों को सवर्णों के शोषण के प्रति विद्रोह करने की बात भी कह डालते हैं,लेकिन उधर सवर्ण लोग ही दलित जाति के लोगों में फूट डालकर फिर से अपने कार्यों को करवाने के लिए उन्हें बाध्य करते थे। तो कभी उन्हें लालच देकर गुमराह करते थे जिसके कारण दलित उन्नति की ओर अग्रसर ही नहीं होते थे। उनकी आर्थिक विवशता ही अत्याचार, शोषण सहने पर बाध्य कर देती है ।

भूख की समस्या–

दलित पेट की आग को मिटाने के लिए मजबूरन अपमान जनक कामों में अपने को झोंक देते थे। स्वयं लेखक बचपन में अपनी मां के साथ जूठन उठाने गए थे। दलितों की हालत जानवर जैसी हो गई थी। आर्थिक अभावग्रस्तता पशु समान जीवन जीना और सामाजिक दृष्टि से अतिशुद्र बन गए थे। अन्न भी मिलता तो भरपेट नहीं, रुखा–सुखा, बचा– खुचा, जूठा, बासी और अपने परिवारों के सदस्यों के बांच बाटकर खाना और बाद में पेट भी खराब जैसी परिस्थिति उत्पन्न हो जाती ।लेखक सूरजपाल चौहान भूख और हीनता का वर्णन करते हुए कहते हैं, ''जब जब वशिष्टों (सवर्णों) के घरों में शादी विवाह का कार्यक्रम होता, हमारे भंगी मोहल्ला में त्यौहार जैसा माहौल उत्पन्न हो जाता था ।ऐसा जाना ऐसा जान पड़ता था, जैसे हमारे मोहल्ले में ही किसी के यहां ब्याह– बारात हो।''(१)जब जूठन भी शादी में से लाते तो अन्न को सुखाकर बच्चों को भूख लगने पर उसे उबालकर 'लपसी' बनाकर देते थे।

३. सामाजिक परिवेश–

जाति प्रथा तथा अस्पृश्यता : सवर्ण जातियां अपने को श्रेष्ठ मानकर अपने से ही निम्न जातियों के साथ रोटी बोटी का व्यवहार नहीं करती थी ।महार,मांग,ढोंर,चमार, वाल्मीकि, जाटक. भंगी आदि जातियां हिंदू धर्म की होकर भी भिन्न जाति की श्रेणी में आकर छुआछूत का शिकार बन जाती थी। सवर्ण जाति पवित्र और निम्न जातियां अपवित्र मानी जाती । बचपन में दलितों के बच्चों को ठाकुर जातियों के बच्चों के साथ खेलने पर डांट पड़ जाती थी। लेखक के साथ भी अनेक छुआछूत के प्रसंग घटे। सवर्णों द्वारा उन्हें अनेक बार जाति का ओछापन दिखा कर अपमानित किया जाता था। स्कूल में भी जब पढ़ने जाते थे तब उन्हें पाठशाला से दूर पीपल के पेड़ के नीचे बैठने के लिए कहा जाता था। जहां से सवर्णों के मोहल्ले की गंदी नाली बहती थी । लेखक के गांव में छुआछूत का पालन कठोरता से किया जाता,जिसके कारण दालतो को पीड़ादायक परिस्थिति से गुजरना पड़ा था। लेखक सूरजपाल ''तिरस्कृत'' आत्मकथा में कहते हैं– ''इस देश में दलित जाति में जन्म लेना कितना कष्टकर व अपमानित है,यह तो वही जान सकता है जिसने इसे भोगा है।''(२) लेखक अपनी जाति के छुआछूत को तिरस्कृत आत्मकथा में अनेक जगहों पर अनेक प्रसंगों से स्पष्ट किया है । एक ठकुराइन पानी और तेल ऊपर से लेखक और उसकी पत्नी को देती थी लेकिन वही ठकुराइन का अवैध– संबंध लेखक के चाचा के साथ था तब वह ठकुराइन अपनी वासना तृप्ति के लिए छुआछूत चाचा के साथ नहीं करती थी, बाद में

Principal
Maratha Mandal's
& Commerce College

एक दोनों को नाजायज स्थिति में देख लेते हैं तब वह ठकुराइन लेखक से भी छुआछूत करना छोड़ देती है । जात, बिरादरी में इन रिश्तो को खुलकर नहीं कहा जाता लेकिन सवर्ण दूध के धुले होने का स्वांग मात्र भरते थे।

स्कूल,कॉलेज और दफ्तर में भेदभाव –लेखक को अपनी प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने तक दिल्ली में भी अपनी दलित जाति के कारण समय–समय पर अपमानित होना ही पड़ता था। उन्हें पढ़ाने वाले गुरु उन्हें शिक्षा न प्राप्त कर गली मोहल्लों की सफाई और जूते तक बना डालने का उपदेश दे डालते थे। गुरुओं को दलित का पढ़ कर जीवन में प्रगति करना पसंद नहीं था। केवल वे अपने से उच्च वर्ग और उच्च जातियों की सेवाओं में जुटे रहना ही उन्हें पसंद था। लेखक कॉलेज में पढ़ते समय अपने नाम के साथ गोत्र चौहान का उपयोग करते थे जिसके कारण उन्हें उनके सहपाठी राजपूत समझकर उनके साथ अपनी दोस्ती बनाए रखते। लेखक भी अपनी जाति को छुपाकर उनके साथ दोस्ती बनाए रखते थे ।

लेखक को नौकरी के संदर्भ में भी उच्च नीच के भेदभाव का सामना करना पड़ता था। अपनी नौकरी में किसी प्रकार की गलती करने पर उन्हें बड़े अधिकारी डांट देते इतना ही नहीं उन्हें झूठा साबित कर नौकरी से निकाल देने की बात कह देते थे। सवर्ण अधिकारियों से असहयोग और भेदभाव का सामना ही उन्हें करना पड़ता था। दलित अधिकारी भी अपने जात वालों को मदद न कर उन पर भी सवर्णों के झांसे में आकर कार्रवाई करने की बात कर डालते थे। अपने दलित अफसरों के संबंध में लेखक ने उन्हें दलित ब्राह्मण की संज्ञा दे डालते हैं। दलित दलितों के बीच उपजाति को लेकर भी जातिवाद किया जाता है। इसका चित्रण भी लेखक सूरजपाल अपनी आत्मकथा ''तिरस्कृत'' में की है। वर्तमान में जातियों में शिथिलता आई है। आधुनिक युग में इस जातिवाद के स्वरूप में कालानुरूप तब्दीली आई है । ''आज खुले तौर पर एक जाति दूसरी जाति को निम्न या हेय नहीं कहती बल्कि मन में उसी भावना को प्रश्रय देती है। प्रसंग आने पर इसे व्यक्त किया करती हैं। हम तो सबके साथ चाय पीते हैं, खाना खाते हैं ,घर बुलाते हैं आदि करना इस बात को सूचित करना होता है कि हम श्रेष्ठ हैं पर आपको साथ बिठा रहे हैं।''(३)

बाल विवाह की प्रथा :

दलित समाज शिक्षा से वंचित अशिक्षित, अज्ञानी के कारण कम उम्र में ही विवाह करने की प्रथा को अपने भीतर अपना कर चलता है। कम उम्र खेलकूद, पढ़ाई में व्यतीत करना उन्हें पता ही नहीं।कम उम्र में विवाह करना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है वे नहीं जानते। न चाहते हुए भी वे अपने कम उम्र के लड़के लड़कियों को विवाह के लिए तैयार कर बाल विवाह कर डालते है। शादी विवाह उनके लिए गुड़ा गुड़ियों का खेल मात्र है। लेखक का विवाह भी ग्यारहवीं कक्षा में न चाहते हुए भी हो गया। शादी के बाद लेखक को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ा। इन्हीं समस्याओं के कारण लेखक का मन आत्महत्या करने तक का सोचता था। ससुराल के लोग नौकरी न होने के कारण उन्हें ताना तक मारते थे।इसी तरह लेखक का भाई सुनहरी तथा अपने दलित जाति के अनेक लड़के लड़कियों के बाल विवाह हो जाते हैं, जिसके फलस्वरूप उन्हें अधूरी पढ़ाई और आर्थिक परिस्थितियों का सामना करना पड़ा।

दावत का महत्व :

दलित तथा सर्वहारा समाज अपने रूढी, संस्कार,परंपरा आदि को अधिक महत्व देकर शादी–ब्याह,तेरहवां, नामकरण, जाति पंचायत का फैसला आदि को महत्व देकर मांस और शराब जैसी दावत को महत्व देकर आपस में मेल मिलाप बढ़ाते थे। लेखक उन्हें इन प्रयत्नों को त्यागने के बारे में भी कहा लेकिन लेखक की ओर बे लोग अनदेखा कर ही चलते थे केवल अपनी दावत वाली इच्छाओं की पूर्ति में लगे रहते थे।

लेखक अपनी जाति के लोगों की उन्नति

Principal Maratha Mandal's Arts & Commerce Colleg Khanapur

के लिए डॉ. बाबासाहब अंबेडकर के विचारों को उनके सम्मुख रखकरउनकी प्रगति किस प्रकार से की जा सकती है इसके लिए कष्ट उठाया। इसके लिए आत्मकथा भी लिख दी। उनके हितों के लिए लड़ते रहे। महिलाओं के प्रति उत्थान का दृष्टिकोण अपनाया। निजी मूल्यों की राह पर अपने समाज को ले जाने के लिए प्रचार किया। अपने समाज की पीड़ा को दूर करने का प्रयास किया। पुराने सड़े–गले, रीति–रिवाज एवं परंपराओं, कुप्रथाओं को त्यागने की शक्ति डॉ. अंबेडकर द्वारा कर उसे अपने समाज के उत्थान के लिए लगाया। फिर भी आज दलित समाज कहीं ना कहीं अपना स्वतंत्रतामय जीवन जी नहीं पाता बल्कि कहीं तो आज भी वह राजनीतिक परिस्थिति में केवल 'वोट बैंक' का ही काम करता रहता है। समाज में भी उसके प्रति अभी भी अंदरूनी छुआछूत है और अब भी दलित शिक्षा का पूर्णतया फायदा न उठा कर स्वयं को उन्नति के शिखर पर स्थापित कर नहीं कर पा रहा है।जब वह स्वयं उन्नति के शिखर पर पहुंच जाएगा तब डॉ. अंबेडकर के आदर्शों को पूरा करता हुआ नज़र आएगा।

संदर्भ ग्रंथ–

१. सूरजपाल चौहान– तिरस्कृत पृ.–१७
२. सूरजपाल चौहान – तिरस्कृत पृ.– ३०
३. डॉ संजय मुनेश्वर– हिंदी का दलित आत्मकथा साहित्य पृ.– २२०

❑❑❑

38

भारतीय किसान और चलती चाकी

प्रो. एम. ए. पीराँ
अध्यक्ष तथा सहायक प्राध्यापक,
हिंदी विभाग,
अंजुमन कला विज्ञान और वाणिज्य
महाविद्यालय, विजयपुर

सूर्यनाथ सिंह द्वारा रचित उपन्यास 'चलती चाकी' (२०११) किसान जीवन पर केंद्रित है। इस रचना से गुजरते पाठकों को लगता है, जैसे वे स्वयं किसानों के बीच खड़े हैं। तीसरा युद्ध पानी के लिए होगा या नहीं यह पक्का कहा तो नहीं जा सकता किंतु यह पक्का हो गया है कि, अगर पानी इसी तरह नीचे जाता रहा तो यह तय है कि लोग जरूर भूख से मरेंगे और लोगों से पहले अन्न पैदा करने वाले किसान मरने वाले हैं। पानी की यही दशा रही तो, एक दिन यह सच में होने ही वाला है । अगर व्यवस्था या सरकार को अगली पीढ़ी की थोड़ी भी चिंता है तो उसे किसानों के बारे में अब कुछ करना ही चाहिए, वरना यह भविष्यवाणी कहिए या दूरदृष्टि गलत नहीं होगी ।

उक्त उपन्यास का केंद्र किसान और किसान की खेती–बाड़ी रहा है । यूं ही दौड़ते–भागते, छुपते–छुपाते और बचते–बचाते दौलतपुर में घड़ी भर के लिए ठहरा श्वेतानंद (निशांत) उन्हीं का होकर रह जाता है। वह किसानों को नजदीक से देखता है कि वह उनकी चिंताओं, समस्याओं और भविष्य के बारे में न केवल सोचता है बल्कि स्वयं मैदान में कूद पड़ता है ।अधिकारियों से मिलता है, गांव से कस्बे, कस्बे से बनारस तक दौड़ भाग करता है और वो भी सारा कुछ हवालात में बैठे

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College

ISSN 2229-4406

International Registered & Recognized
Research Journal Related To Higher Education for all Subjects

UNIVERSAL
RESEARCH ANALYSIS

EDITOR IN CHIEF
Dr. BALAJI KAMBLE

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur-591302 Dist. Belgaum

INDEX

Sr. No	Title for Research Paper	Page No
1	Management of Powdery Mildew of Soyben Throught Plant Extracts and Chemical Under field Conditions **J. A. Kadam**	1
2	Studies on Effect of Different Culture Filtrates of Fusarium Species on Shoot of Legume **Dr. S. D. Dhavle**	8
3	Participation of women in skill development and vocational education **Dr. Savita Sangwan, Dr. Nidhi Vats**	14
4	Industry-Institute Linkage **N. D. Korpe**	20
5	A comparative study of Cardiovascular Endurance between government and Private High School Girls of Bagalakot District **Mahadevi S. Injangerei**	24
6	Dynamics of Indian Federalism **Mohd Yasin Wani, Ashfaq Hamid Dar**	28
7	The COVID-19 pandemic and physical activity **Neelapp Kuri**	39
8	उत्तर भारतीय संगीत के कतिपय समान स्वर वाले रागों के स्वरुप निर्धारण में रागांग की भूमिका : एक अध्ययन **दयाशंकर**	51
9	रा. भि. गुंजीकर खानापूरच्या प्रवासातील एक मानाचे पान **प्रा. आय. एम. गुरव**	56

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur-591 302 Dist. Belgaum

9

रा. भि. गुंजीकर खानापूरच्या प्रवासातील एक मानाचे पान

प्रा. आय. एम. गुरव
मराठी विभाग,
मराठा मंडळ कला व वाणिज्य महाविद्यालय,
खानापूर (कर्नाटक)

Research Paper - Marathi

भारताच्या इतिहासाचा परामर्श घेत असताना भारतावर आजवर अनेक आक्रमणे झालेली आढळतात. व विविध राजवटी इथल्या भूमीत नांदलेल्या, वाढलेल्या पाहावयास मिळतात. याला एखादा भूभाग अपवाद आहे. असे म्हणणे जरा धाडसाचे होईल. गोवा बेट आणि परिसराचाच केवळ विचार करावयाचा झाल्यास गोव्यात आजवर अनेक राजवटी नांदल्या यात प्रामुख्याने सातवाहन, मौर्य, कदंब, आदिलशाही इत्यादीची नावे घेता येतील. जेव्हा एखाद्या भूभागावर राजकीय कारकीर्द अस्तीत्वात येते तेव्हा तिथल्या सांस्कृतिक स्थित्यंतरास ती राजवट करणीभूत ठरते. त्यामुळे त्या परिसराचा तोंडवळाच बदलतो. केवळ गोवा आणि आसपासच्या परिसराचाच विचार करावयाचा झाल्यास इथल्या सामाजिक, राजकीय , सांकृतिक जीवनात प्रचंड स्थित्यंतरे आलेली दिसतात. गोवा आणि परिसरात नांदलेल्या राजवटीचा विचार करता यातील बहुतांवशी राजवटी हिंदू धर्माशी निगडीत होत्या कालांतराने इस्लामी राजवट अस्तीत्वात आली आणि तिचाही या भूभागावर म्हणावा तसा परिणाम झाला नाही. मात्र या भूभागाला ग्रहण लागावे असेच अघटित घडले आणि इ.स. १४९८[१] साली पहिल्यांदा वास्को-दी-गामाने कालीकत बंदरावर पाऊल ठेवले आणि सुखासमाधानात नांदर्नाया गोमंतकाचा विध्वसाचा काळ जवळ आला. वास्को-दी-गामाला त्याकाळी विचारले गेले. तुम्ही लोक हिंदुस्थानात कोणत्या उद्देशाने आला आहात ? त्यावर त्याने उत्तर दिले च्मसाल्याचे पदार्थ आणि खिस्ती लोकांच्या शोधार्थ आम्ही आलो आहोत. या उत्तरातूनच पोर्तुगीजांची नीती स्पष्ट होते. एकीकडे अरब लोक हिंदुस्थानात पिकत असलेल्या मसाल्याच्या जिनसा कवडीमोल दराने विकत घेऊन सोन्याच्या भावाने युरोपात विकत होते. त्यावेळी पोर्तुगालचा राजा माणूएल याने वास्को-द-गामा यास समुद्र मार्गे हिंदुस्थांनाच्या शोधार्थ पाठविले. हे जरी खरे असले तरी खिस्ती धर्मप्रसार हे महत्वाचे कारण होतेहे नाकारून चालणार नाही.

पुढे गोमंतकात पोर्तुगीज स्थानिक लोकांना हाताशी धरत आपली पाळेमुळे घट्ट रोवू

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur-591302 Dist. Belgaum

लागले. सुरवातीला मुस्लिम राजवटीविषयी लोकांच्या मनात असंतोष होता. त्याचा फायदा उठवत हिंदू लोकांना हाताशी धरत मुस्लिम राजवटीची गोमंतकातील पकड सैल करण्यातपोर्तुगीज यशस्वी झाले. परिणामी गोव्याचा बराच भाग पोर्तुगीजानी काबीज केला आणि इ.स. १५१० [२] साली गोवे शहर जिंकून एका अर्थाने पोर्तुगीजांनी आपले ध्येय साध्य केले. छत्रपती शिवाजी महाराजानी या पोर्तुगाली नीतीला पुरते ओळखलेले त्यामुळेच जशास तसेच उत्तर त्यांनी त्या त्या वेळी दिले परिणामी पोर्तुगीज त्यांना वचकून असत. पुढे छत्रपती शिवाजी महाराजाच्या पश्चात छत्रपती संभाजी राजांनी पोर्तुगीज राजवट उलथून लावण्याचा चंगच बांधला होता. मात्र औरंगजेबाची स्वराज्यावरील चाल आणि त्यात छत्रपती संभाजी राजांना फितुरीने झालेली कैद त्यामुळे हे शिवरायांचे, शंभुराजांचे स्वप्न स्वप्नच राहिले. परिणामी पुढे जसजसा पोर्तुगीजांच्या आमलात गोवा येऊ लागला तसतसे पोर्तुगीजांनी धर्मांतराचे अस्त्र अधिक प्रखर रित्या चालविले गोव्यात मुस्लिमांसह अठरापगड जातीमध्ये जगण्याचे तांडवच सुरू झाले तत्कालीन गोमंतकवासीयांकडे केवळ दोनच पर्याय पोर्तुगीजांच्या या जुलमी कारभारामुळे शिल्लक उरले होते. एकतर देशप्रिय मानून धर्मांतर करणे आणि दुसरे म्हणजे धर्मप्रिय मानून देशत्याग करणे केवळ या दोनच पर्यायांचा अवलंब तत्कालीन गोमंतकातील लोक करू लागले?परिणामी गोवा ओस पडू लागला हा अत्याचार इतका पाशवी होता की या बाटाबाटीत कोणताच धर्म सुटू शकला नाही मुस्लिम समुदायाला नमाज पठण करतेवेळी मज्जिदी मध्ये डांबून आग लावणे, हिंदूच्या पित्या पाण्यात गोमांस टाकणे हिंदू ग्रंथ जवळ न बाळगणे, इतर धार्मिक विधी न करणे आणि हा दंडक मोडल्यास सबंधित व्यक्तिला जाहीरपणे जाळणे अथवा पोर्तुगालला अंधार्या कोठडीत रवाना करणे. यासारखा भयानक दंडक असलेला छ्इंक्विझिशनङ चा कायदा आल्याने गोमंतकिय जनता बिथरली आणि गोवा सोडला. कित्येकांनी गोव्याचा आसपासचा परिसर गाठला. यातील कित्येक कुटुंबे घाटमाथ्यावरील खानापूर परिसराकडे वळली तेव्हा सध्याच्या भीमगडाच्या परिसरात त्यांनी आश्रय घेतला.नुनीस यापोर्तुगीज अधिकार्याने पोर्तुगालच्या राणीला लिहीलेल्या पत्रात म्हटले आहे की हे हिंदू लोक मोठे मानी आहेत त्यांना आपला धर्म इतका प्रिय आहे की कित्येकांनी गोव्यातून स्थलांतर करून बाजूच्या आदिलशाहीच्या राजवटीत असलेल्या पूर्वेकडील जंगलाचा आश्रय घेतला आहे. जंगल खूप दाट असून त्यात जंगली श्वापदांचा दिवसा वावर असतो. आजतागायत यातील २० हून अधिक लोकांना वाघाने ठार केले आहे. तरीही उर्वरित लोक गोव्यात परतण्यास तयार नाहीत.[३] यासारख्या प्रसंगातून या निर्वासित गोमंतकवासीयांची प्रतिकूल परिस्थितीतिल चिकाटी लक्षात येते.

या निर्वासित मंडळींनी येताना आपली संस्कृतीच सोबत आणली देर्व्हायातील, देवळातील ... चालीरीती इत्यादींचा यात समावेश करता येईल. पुढेमागे हे लोक खानापूरच्या परिसरात

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur 591 302 Dist. Belgaum

विठ्ठल आणि स्वता जवळ ठेवलेल्या मूर्तीला त्यांनी वीरविठ्ठल असे नामकरण केले त्यामुळे सदर काव्यात त्यांनी वीरविठ्ठलाला केंद्रस्थानी मानून काव्य लिहिल्याचे जाणवते. प्रस्तुत काव्याचा आणखी एक विशेष म्हणजे देशातील अनेक तीर्थक्षेत्र आणि नदयाचा नामनिर्देश आला आहे. याची प्रभुदेसाईनी वाचकास सदर संशोधनातून प्रचिती आणून दिली आहे.

डॉ. वि. बा. प्रभुदेसाईनी पोर्तुगीज पूर्व साहित्याचे संशोधन करून स्वत: चरितार्थासाठी नागपूर सारख्या ठिकाणी गोव्यातून दूर राहूनही आपली गोव्याशी असलेली बांधिलकी उपरोक्त संशोधनातून अधोरेखित केली आहे.

संदर्भ

1. 'गोमंतकाचा मराठी वारसा' डॉ. वि. बा. प्रभुदेसाई. प्रकाशक- गोमंतक मराठी अकादमी, मराठी भवन, पर्वरी-गोवा.पहिली आवृत्ती-२००९, पृष्ठ क्र.७२, उदधृत.
2. 'मराठी वाङ्मयाचा इतिहास', खंड दुसरा : भाग पहिला, संपादक स. ग. मालशे,प्रकाशन- महाराष्ट्र साहित्य परिषद, पुणे ४११०३०, पहिली आवृत्ती :१५ सप्टेंबर १९८२, पृष्ठ क्र.३१३.
3. 'गोमंतकाचा मराठी वारसा' डॉ. वि. बा. प्रभुदेसाई. प्रकाशक- गोमंतक मराठी अकादमी, मराठी भवन, पर्वरी-गोवा.पहिली आवृत्ती-२००९, पृष्ठ क्र.७२.
4. तत्रैव, पृष्ठ क्र.७३.
5. तत्रैव, पृष्ठ क्र.७५.
6. तत्रैव, पृष्ठ क्र.७४.
7. तत्रैव, पृष्ठ क्र.७५.
8. तत्रैव, पृष्ठ क्र.७५.
9. तत्रैव, पृष्ठ क्र.७७.
10. तत्रैव, पृष्ठ क्र.७८
11. 'गोमंतकाचा मराठी वारसा' डॉ. वि. बा. प्रभुदेसाई. प्रकाशक- गोमंतक मराठी अकादमी, मराठी भवन, पर्वरी-गोवा.पहिली आवृत्ती-२००९, पृष्ठ क्र.७९,
12. तत्रैव, पृष्ठ क्र.७९.
13. तत्रैव, पृष्ठ क्र.७९.
14. तत्रैव, पृष्ठ क्र.७९. उदधृत.
15. तत्रैव, पृष्ठ क्र.७९.
16. कृष्णदास शामा-विरचित श्रीकृष्णचरित्रकथा डॉ. वि.बा. प्रभुदेसाई, डॉ. बा. ना. मुंडी, मुंबई मराठी साहित्य संघ प्रकाशन प्रथमावृत्ती १९७५, पृष्ठ क्र.२

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur 591302 Dist. Belgaum

Journal of the Asiatic Society of Mumbai
ISSN: 0972-0766

UGC Care Group Journal

A COMPARATIVE STUDY OF RURAL AND URBAN HIGH SCHOOL BOYS ATTITUDE TOWARDS PHYSICAL EDUCATION AND MOTOR FITNESS

Prof. Kapildeva Anant Gurav

Maratha Mandal's Art's & Commerce College, Khanapur

CHAPTER - 1

INTRODUCTION

From ancient man is for his lives strength, exhibition, physical fitness, beauty for protection of involve in physical skills further importance of body by known physical education got importance.

Physical education and sports casually back bone of education. Not only special back bone will be proving. Body is basement of us therefore if we want whichever education through physical activities we should get because activity is future of life. Through five senses experiences will come is through body we will say therefore whatever experience of life is source of body to such body education provide then excellences through that remain lives is giving great nursing is giving back bone of education.

There is instrument for mans education body of body is such achievement and it is more excellence instrument all rivers together end into vast ocean like that all education achievements vindicate into job mans progress zeal. Mans whole personality is improved lot achievement there for its and whole source will have done that will have reached end.

Whole mans progress is education goal like wise physical educations goal is not except common education. From mans beginning leisure time will part there physical activities only parts for happiness but involver amateurism but they more mans leisure time number of participate increasingly participate attitude will improve from that more sports will profession.

These days in to sports very part participating is there. mans activities and according to other if has most physical ability there cant become excellent sports person it means if man because great sportsperson to him more intellective qualities that much importance. To become success sport man he is intellectual read. These intellectual qualities mingle into attitude whichever that is sport activities he is taking activity by self interest and he has to good attitude.

Whichever subject, thing, work ness and salutatory of mans what has intellectual situation of feeling of attitude is called improvement determination of attitude is main this comes from experience every person has attitude his own.

Physical fitness is recognized as important component of health and it is important for performance of functional activities and quality of life. Low physical fitness may result in high physical strain during the performance of activities. As a consequence activity level may decrease due to fatigue and discomfort thus result in lower physical fitness.

Urbanization influences the physical fitness of the men and women alike. Rural and urban environment there food, there way of living, culture influenced the growth and physical fitness of the girls and boys. Urban boys all facilities but not work, except perhaps going to school. On the other hand the rural boys are always in their domestic and field work along with the school education. May be this is one of the reason way the rural boys are perceived to be more physically fit.

Tanner (1989) found that children in urban areas to be usually larger and have more rapid tempo of growth than children in villages of the surrounding countryside. This was perhaps due to better nutrition, affluence and psychological liberation.

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur 59 302 Dist. Belgaum

Choudhary(1998) studied the deference in physical fitness of rural and urban students in the class 9th and 10th and found that rural students were batter in physical fitness than urban students. However, over the past one decade, both urban and rural India has undergone a considerable change.

Uppal and serene (2000) investigated cardiovascular fitness between rural and urban students also found that students with rural background performed better than that of their counter parts in urban area.

Every person has a deferent level of physical fitness which may change with time, place of work and situation. There also in an interaction between the daily activities and the fitness of an individual from the psychological point of view. Physical fitness may be conceived as ability of the body to adopt and recover from strenoures exercise or work.

Good health provides sound foundation on which fitness rests. At the same time, fitness provides one of the most important key to health and living ones life to fullest. In village which formed the first habitation of civilised man rural sports grew out of sheer necessity. Joint defences against on slights of a common enemy or dangerous animals must have given birth to the sports like wrestling, running, jumping, weight lifting and such performing arts as measuring strength by holding wrist twisting hands etc. It is noticed that there is lot of deference in the interest of children from deferent areas. For example in rural area children indulge in minor indenopuns activities and field games like football, kabaddi, kho-kho, wrestling, athletics etc. While in urban areas was find children playing the basketball, swimming, badminton, tennis, squash, golf, cricket etc.

In summary we may say that rural; boys are more physically fit than urban boys because in urban ereas unlimited facilities are available the needs of the boys are met very easily. On other hand the rural boys are always busy in the domestic works. In some villages physical education facilities are also not available. The boys are required to go the school physical education facilities also not available. The boys are required to go the by bus or by walk. Thus these activities purportedly result in better physical fitness of rural boys.

However if we compare the motor fitness of the rural and urban high school boys we can find that urban high school boys are more attitude towards physical education than rural boys because new technology, quilting physical education teachers and as a compulsory subject in all schools good sports facilities' provided by the urban schools. Additionally urban boys take good nutrition food, which make them fit. These even get good sports training.

The main reason for difference is the availability of facilities and financial support of urban parents. Urban schools advance technology is used that enhance the physical performance of the students are always motivated by their teacher and coaches. Additionally the urban boys enjoy liberation from cultural constrain of tradition which thus rural counterparts to not. The regular sports practice helps to improve performance in sports with better physical components.

Earlier research shows that when compared with boys from surrounding villages urban children are taller and heavier than their rural counterparts. Therefore rural boys are having good food but then they are busy in work. Hence they are not heavier and teller.

Advance in information and entertainment technologies like style. Further the demand for fast food, high calories food and fast has raised more concerns about human health (Faith et al, 2001).

Pfaundler (1916) described the phenomenon of secular trends in growth in urban children i.e. the urban boys are taller, grow faster and earlier than their rural conntemarts.

In this study student has which type of attitude towards physical education and motor fitness how much their activities have come to know. These both mean attitude and motor fitness abilities like same we will identify because if he has attitude towards physical education he will be able in participate into physical activities like that who has motor ability he has to positive physical attitude.

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College

PURPOSE OF THE STUDY

Therefore, in the light of contradicting reports, the main purpose of this study was to compare the attitude towards physical education and motor fitness of rural and urban high school boys.

STATEMENT OF THE PROBLEM

Studying some previous research it was found that urban area high school boys appear to be more attitude towards physical education and motor fitness then rural high school boys and also it's found that rural area high school boys appear to be more attitude towards physical education and motor fitness then urban high school boys. Therefore following questions arises.

1) Urban area high school boys have more attitudes towards physical education and motor fitness than the rural high school boys?

HYPOTHESES

1) Those are good in motor fitness are also good or positive attitude towards physical education.
2) Urban boys have significantly higher motor fitness than the rural boys.
3) Urban boys have significantly higher or positive attitude towards physical education than the rural boys.

LIMITATION

This study limited in the following aspects and this limitation will be taken in to consideration while interpreting the data. Growth of rural and urban high school boys' environment, food, and economical condition sports facilities is assumed to be deferent.

DELIMITATION

The study is delimited to only for Belagavi & Dharwad district rural 50 (govt high school masguppi) and urban 50 (govt high school navalur) boys in the age group of 14-15 (8^{th}) year.

SIGNIFICANCE OF THE STUDY

Physical fitness players a very significant role in the today's world good health provide sound foundation on which fitness rest and at the same time provides one of the most important key to healthy living and live once life to the fullest. Lack of physical fitness result many risk factors to health including coronary heart disease certain forms of cancer, diabetes, hypertension, strokes gall bladder diseases respiratory problems etc.

The study is significant in the following ways;

- This will help coaches and physical education teachers in selecting the good players.
- This will help physical education teachers and coaches in preparing training programme.
- The result of the study will give the clear idea about rural and urban high school boy's attitude towards physical education and motor fitness.
- Classification of students.

DEFINITIONS OF THE SPECIAL TERMS

ATTITUDE: An attitude is an expression of favour is disfavour to word parson place or event.

MOTOR FITNESS: Motor fitness refers to the ability of an athlete to perform successfully at their sports.

RURAL AREA: Rural area is referred to as the area under the jurisdiction of Mandal panchayat having population of less than 20 thousand.

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur-591302 Dist. Belgaum

URBAN AREA: Urban area is generally referred to as the area under the municipal organization of the town.

CHAPTER - II

REVIEW OF LITERATURE

The revive of related literature is very important in constructing the theoretical model. It helps to get clear idea and support the findings with regards to a problem. A study of relevant therefore is an essential step to realize a full picture of what has been done with regard to the problem addressed in the study. The investigator has made an honest attempt to locate a number of research articles of similar nature by various scholars, some samples of which have been presented in the context of present investigation.

Therefore in this section, research investigation related to attitude toward physical education and motor fitness of rural and urban population are reviewed. The literature is reviewed in two sections.

Some earlier researches show that rural boys are more physically fit than urban boys because in urban areas unlimited facilities are available. The needs of urban girls are met very easily. On other hand rural boys are always busy in the domestic and field work.

Subramaniamet. al. (1946) conducted a study with a purpose to determine the attitudes of middle school students'toward physical education using an attitude instrument grounded in attitude theory. In addition, this investigation also sought to ascertain if gender and grade level influence student attitudes toward the subject matter. Participants for this study were 995 students from grades 6 to 8. A previously validated attitude instrument based on a two-component view of attitude with scores that showed evidence of reliability and validity was used. Overall students had moderately positive attitudes toward physical education. There was, however, a decline in attitude scores as students progressed in grade level. Higher grades had lower mean scores.

Subramaniamet. al. (1952) the purposes of this study were to develop an Instrument to assess student attitude toward physical education and to provide psychometric evidence of reliability and validity of the interpretation of scores from the attitude instrument. The study was conducted in multiple phases: (a) elicitation study, (b) preliminary study, (c) content validity study, and (d) reliability and validity study. Participants for the elicitation study were 110 middle school students. Enjoyment and Perceived Usefulness emerged as the primary factors, whereas the physical education teacher, curriculum, and peers were found to be the primary sub-factors through student elicitation. The preliminary study utilized 33 students. Participants for the content validity study were 35 experts in physical education pedagogy. The reliability and validity study involved 995 students (Grades 6, 7, and 8). Results indicate that this instrument produces reliable and valid scores based on the 2-component view of attitude. The hypothesized factor structure is a good fit to the observed data.

Carpenter and Morgan (1954) conducted a study with a purpose to assess the motivational climate, personal goal perspectives, and cognitive and affective responses in physical education lessons. A total of 118 male and female secondary school physical education students from the United Kingdom were involved in the study. The students completed a survey assessing the class motivational climate, their personal goal perspectives, beliefs about the causes of success, satisfaction and boredom, self-rated improvement and effort exertion, and attitude toward athletics. Students who viewed the climate as mastery-oriented evidenced a more motivationally adaptive pattern of responses. They were more task-involved, believed success was due to effort, experienced greater satisfaction and less boredom, rated their improvement higher, and had a positive attitude toward athletics. In comparison, students who viewed the climate as performance-oriented were more ego-involved, believed success was due to deception, and rated their improvement as low. Based on the findings of this study, physical educators need to emphasize mastery-oriented cues and de-emphasize performance-oriented cues.

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur-591 302 Dist. Belgaum

Haggeret. al. (1954) conducted a study to investigate the relationship

Between attitude towards physical activity and physical activity behaviour and the influence of gender and season on physical activity level in 45 primary school children, aged 9 to 11 years. Attitudes towards physical activity were assessed using two different theoretical approaches: the Children's Attitudes towards Physical Activity (CATPA) inventory and the Theory of Reasoned Action (TRA) questionnaire. Physical activity behaviour was measured by using Cali's (1994) self report measure of physical activity. Approximately 50% of the children were categorized as 'inactive' based on cut-off points developed by Blair (1984). A 2 x (gender x season) factorial analysis of variance showed that children participated in more moderate physical activity in the summer than in the winter ($F(1,44) = 6.29$, $p<.05$) but there were no gender differences in physical activity levels. Descriptive statistics for the CATPA inventory showed that children generally exhibited positive attitudes towards physical activity. Mann-Whitney U tests for two independent samples revealed significant differences between the high-active and low-active children for the catharsis, health and fitness, vertigo and aesthetic sub domains from scathe CATPA inventory ($p<.05$). None of the TRA variables showed any significant differences for activity level. Present results suggest that some attitude variables from the CATPA inventory differ according to children's physical activity levels and thereby emphasizes the need for physical educators to foster positive attitudes towards physical activity in order to encourage children to adopt and maintain healthy and active lifestyles.

Shropshire (1960) conducted a study with a purpose to examine possible

Gender differences with respect to primary school children's attitudes towards physical education and to identify those factors that influence interest. The Preadolescent Attitude to Physical Education Questionnaire (PAAPEQ) was completed by 924 children (aged 10-11 yean). This instrument measures general interest and environmental adjustment in physical education, how the physical education teacher is perceived and views concerning assessment and the organization of the curriculum. Employing multi-vitiate analysis of variance techniques boys were found to be significantly more interested in physical education than the girls and were less affected by environmental factors. The girls had more positive attitudes towards the teacher than the boys and were less concerned about the organization of the curriculum. Multiple regression analyses identified pupils' views with regards to assessment as being the most important variable for interest in physical education for boys and girls.

Luke and Sinclair (1962) studied with a purpose to identify and examine the potential determinants of male and female adolescents' attitudes toward school physical education. Students *(N=4SS)*, randomly selected from four large metropolitan schools, were asked to comment on their school physical education experience from kindergarten through Grade 10. A systematic content analysis was used to categorize these responses. Three main questions were addressed: What factors in the K-10 physical education experience of male/female students contribute to the development of positive/negative attitudes toward physical education? Are these factors different for males and females? Are they different for students electing to take school physical education? Five main determinants of attitude were identified in ranked order: curriculum content, teacher behaviour, class atmosphere, student self-perceptions, and facilities. Overall, male and female students identified the same determinants in the same order of priority.

Isenberger (1962) conducted a research with a purpose to determine the Relationship between the self- attitude of women physical Education major students and those of women Physical teachers, subjects used in the study were 277 women Physical Education major students from the institution and 167 women Physical education teacher. —Who am I?‖ test a twenty statement of self –attitude (TST) was used as a measure of self-attitude. The result of the study indicated that there was a significant difference between the self-attitude of students groups with in a school between schools. It was indicate that the self-attitude of the teacher differed significantly from those of students enrolled in a

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur 591 302 Dist. Belgaum

liberal arts college or a teacher college connected with a university but were similar to those of students in teaching education institution.

Holden (1962) conducted a study on attitudes of high school students toward women's participation in sports. The students were divided into atomic, sex and age group. In general, whites were the most accepting of women in sports, blacks were in the middle, and Hispanics were the least accepting. The biggest difference occurred in white males between the ages of 15 and 18 white females started at the highest level and had only slight differences. Hispanics were reflective of the male dominated culture and supported a strong sex-role stereo type. Black males have viewed sports as an escape from the ghetto and were hesitant about allowing females for the same access to sport.

Onifade (1962) has conducted a study to investigate the relationship among selected demographic factors, physical activity belief and meaning of physical activity (attitude). Kenyan attitude inventory was used to assess students'attitude toward physical activity and the physical activity behaviour scale which was adopted from Zaichkows KY's (1979) of women physical education major students and those of women physical education teachers. Subjects used in the study were 277 women physical education major students from three institutions and 167 women physical education teachers. The —Who Am I‖? Test, a _Twenty Statements Test'of self attitude

(TST), was used as a measure of self-attitudes. The result of this study

Indicated that there was a significant difference between the self-attitudes of students groups with a school and between schools. It was also indicated the self attitudes of teachers differed significantly from those of students enrolled in a liberal art college or a teachers college connected with a university but were similar to those a students in a teacher education institutions.

Merriman (1964) determined the relationship of the influence of social

Systems, attitude toward physical activity and physical education placement to the degree of participation in physical activity of emotionally disturbed high school students. 206 emotionally disturbed male and female students, aged 14-21 attending public school in New York City served as subjects. The degree of participation was measured by the physical activity socialization inventory. Attitude toward physical activity and measured by the Children's physical attitude toward physical activity inventory. The analysis of data revealed that.

1. The influence of social system was related to the degree of participation.

2. The attitude toward physical activity was related to the degree of participation.

3. The influence of social system and attitude toward physical activity, in combination contributed to variance in participation.

4. Attitude toward physical activity and physical education placement in combination contributed to variance in participation.

5. The influence of social system, attitude toward physical activity and physical education placement, in combination contributed to variance in participation.

6. The total variance of participation occurred for the three predictor variables, the influence of social system makes the largest unique contribution. The purpose of research conducted by Brumbach (1985) was to measure the attitude toward Physical Education of all male lower division students entering the University of Bergen in September 1996. The wear attitude inventory short from _A'was the instruments used. The result indicated that as a group, these students had a rather favourable attitude toward Physical Education. By comparing the scores of this group with the mean reported for two somewhat similar groups, the Oregon students score was significantly higher while comparing various such groups. The following conclusion was made athletes have better attitudes than non- athletes.

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Belgaum

Barros (1965) has conducted a study on principal attitude towards physical education; wear inventory (1951) was administered on 352 elementary school principals to assess their attitude toward physical education. The results showed that participations in physical education classes are a matter that has significant influence in attitude toward physical education. The results showed also, that participation in physical education classes and school enrolment had a positive relationship with attitude of elementary school principals toward physical education and length of experience as a school principal had a negative one. The analys is Showed that there were a positive significant relationship of the principal attitude toward physical education with his/her opinion of the importance of physical education and sports in the elementary school curriculum, agreement with the scholastic sports games, and physical education teacher performance.

Applebee (1956) designed a study to identify the relationship between values, attitudes and interests to decisions about participation in interscholastic athletics among selected American Indian Youth. Three role groups were identified for comparison: participants in inter-scholastic athletic, non-participants in interscholastic athletics and dropouts from inter-scholastic athletics. Data were gathered by means of a questionnaire. Non-participants were found to be significantly different from the other two groups. In sports activities they perceived less support from coaches. They were more likely to prefer to watch sports contests than participate and they were less likely to intend to participate beyond high school or college.

Balance (1958) has conducted a study on administrators teachers and

students attitude toward physical education, 25 administrators, 50 teachers and 100 students in the Bertie country school system in NC were given the wear attitude inventory. There was no significance difference between the attitude of administrators and teachers toward had significance higher ($P < .05$) attitudes toward physical education than did the students.

Basu (1958) has conducted a study to determine the attitudes of parents Toward physical education programme and to find out their opinions (negative or positive), if any. The investigator prepared a questionnaire comprising 100 statements based on a very simple pattern viz-a viz Yes/No. which converted 10 aspects of physical education. The study revealed that majority of the parents had a favourable attitude towards all aspects of physical education. Parents had highly favourable attitude toward physical education because it promoted physical health and fitness, mental maturity and alertness, personality development, sociability, efficient use of leisure, their opinion was political interference in sports was undesirable. They wanted physical education programme for all.

Goodson (1960) conducted a study to assess the attitude of adult male community college students toward physical education activity and to develop implication for community college physical education programmes from an analysis of the result, the McPherson - Yuhasz Attitude inventory consisting of fifty statements was administered to106 male ranging in age from forty through sixty five. The inventory consisted of twenty six negative statements and twenty four positive statements.

Ray (1961) conducted a study in order to find out the attitude of high school girls and their parents towards physical education. The evidence indicated that their parents who achieved high fitness scores and their parents viewed to contribution of physical education class for more favourably than did the students who were less physically fit and their parents, and the parents and students differ in their views of the mental, emotional contributions. Parents and students for both groups had similar views about the physical psychological outcome and the social contribution, while with regard to the emphasis placed on physical education in the total school programme. The parents of the low fitness group viewed this more favourable than their daughters. It was just the opposite with the high fitness group. Attitudes toward physical education were positively related to the senior high school girl's achieved physical fitness score. A lower score regulated in a lower attitude towards physical Education.

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur-59 302 Dist. Belgaum

Wright (1966) conducted a study by using wear attitude inventory to the

Nineteen physical education teachers and 1440 tenth grade girl‘s to determine if significant different existed between the expressed attitudes of students and the teacher‘s perception of the student‘s attitudes. Differences between the expressed attitudes of the teachers and the students‘perception of the teachers were also investigated. Analysis revealed that teachers had a better attitude toward physical education than did the classes as a group. There was no significant difference in the attitudes of students and their teachers‘perception in the expressed attitudes of teachers and the students‘perceptions of the teachers‘attitude students perceived a less favorable attitude than the teachers expressed.

Tomik (2007) the purpose of the educational process is to promote pro-fitness lifestyle, which means that an adult will engage in different 1 forms of physical activity on a regular basis, resulting in health enhancement. Several authors have investigated the attitudes of Polish children and adolescents to physical education and sport, and compared their results to those of investigations on instrumental goals. Different aspects of attitudes towards physical education and sport were also studied by researchers from numerous countries using diagnostic questionnaires. The purpose of the present study was to identify the educational effects of school sports clubs (SSC). The differences of attitudes towards physical education and sport were compared between members of SSC and youth of the same age that did not participate in the activities of the clubs. The study questionnaire was sent out to 623 randomly selected school sports clubs in Poland. A cover letter explained the purpose and procedure of testing. Correctly filled questionnaires were obtained from 103 school sports clubs. 2704 questionnaires were selected for statistical analysis. The research tool, (i.e., diagnostic questionnaire), had been developed by Strzyżewski (1990). The obtained results indicate the attitude of questionnaire respondents towards physical education and sport is positive but reserved. Despite the strength of the cognitive component (cognitive scores were highest), the actual participation in out of school sports activities was insufficient (low values of behavioral scores). SSC members have more positive attitudes towards physical education and sport than their non-SSC Counterparts.

Demirhan (1985) conducted a study to assess the attitudes of high school students *toward physical education with regard to sex and sport participation. A total of 440* sport participants (175 girls and 265 boys) and of 427 non-sport participants (227 girls and 200 boys), all of whom were 15 yr. old, voluntarily participated. The Attitudes toward Physical Education Scale was administered to assess participants' attitudes toward physical education. The results of 2 x 2 (Sex x Sports Participation) analysis of variance indicated a significant difference in attitudes toward physical education between sport participants and non-sport participants, with the former scoring higher, and a difference between boys and girls, with boys scoring higher. However, there was no significant interaction between sex and sports participation on attitudes toward physical education. In general, sport participants had more favourable Attitudes toward Physical Education scores than non-sport participants, and high school boys scored significantly higher than girls. There was a significant difference in Attitudes toward Physical Education scores between female and male high school students, with boys having more favourable attitude scores.

Silverman (1987). Psychometric evidence of validity and reliability for the instrument was provided in the pilot study. Participants in the pilot study were 502 urban secondary school students. The results from the pilot study indicated that the G-C alpha reliability coefficient for the factors to assess urban secondary school students' attitudes toward physical education ranged from 0.97 affect (enjoyment) to 0.96 cognition (usefulness). Fit statistics indicated that the scores from the instrument for attitudes toward physical education showed properties of construct validity for high school students. The study to investigate urban secondary school students' attitudes toward physical education consisted of 3656 students from 17 high schools in the New York City Department of Education. The results suggested that students in the 9th grade scored higher than students in the 10th, 11th, and 12th grades.

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur 591302 Dist. Belgaum

Additionally, males scored higher than females for all sub-factors (enjoyment-teacher, enjoyment-curriculum, and usefulness-teacher and usefulness curriculum). Scores for males remained stable as they progressed through grades while scores for females decreased as grade level increased. Scores for students were moderate indicating that these students, may possess less than positive attitudes toward physical education.

Meeriman (2002) determined the relationship of the influence of social systems, attitude toward physical activity and physical education placement to the degree of participation in physical activity of emotionally disturbed high school students. 206 emotion of adjestment disturbed male and female students aged 14-21 attending public schools in New York City served as subjects. The degree of participation was measured by the Physical Activity Socialization Inventory. Attitude toward physical activity was measured by the Children's Physical Attitude toward Physical Activity Inventory. The analysis of data revealed that (1) the influence of social system was related to the degree of participation. (2) The attitude toward physical activity was related to the degree of participation. (3) The influence of social systems and attitude toward physical activity, in combination contributed to variance in participation. (4) Attitude toward physical activity and physical education placement in combination contributed to variance in participation. (5) The influence of social systems, attitude toward physical activity and physical education placement, in combination contributed to variance in participation and (6) the total variance of participation occurred for the three predictor variables, the influence of social system makes the largest unique contribution

Bhullar (2002) in the year 1982 under took a study entitled "A Comparative study of attitude towards physical activity of university male and female students". The purpose of this evaluation was to discover the structure of attitude towards physical activity of male and female students living in the same environment. Subjects for this study included both male and female students. The 200 (100 male & 100 female) subjects who participate were drawn randomly from various teaching departments of the Punjab University campus, Chandigarh. Their age ranged from 16 to 23 years. To measure attitudes, physical activity attitude scale constructed and standardized by the author was used which consisted of 70 items. Scoring was done on the basis of „Scale Product Technique by giving weight for each response category in the Likert fashion and then multiplying the same with scale value of the statement. Derived: A lot of schools had no physical education teachers. There was a serious shortage of physical education teachers. In the boy schools, the mean people teacher ratio was 460: 1 and in the girls schools the same was 988: 1 as against the recommended ratio

Young (2004) studied the relationship between the personal, social adjustment, physical fitness and attitude towards physical education among high school girls with varying socio-economic levels. She concluded that there was no significant difference between socio-economic status groups with reference to physical fitness or attitude towards physical education. There was significant positive correlation between physical fitness and attitudes towards physical education for the entire population at .001level, within the high and low socio-economic groups at the .05 level and within the middle group at the .01 level. There was a significant correlation at .05 level but physical fitness and personal social adjustment for the population and within the low socio-economic status groups; there was an inverse and significant correlation between social adjustment and attitudes towards physical education at .01 level.

Mehta (2004) conducted a study of" A Probe into the Views of Heads of High and Higher Secondary Schools of Patiala District towards the introduction of Physical Education as a Compulsory Subject in Schools" and he found that the attitude of the heads of the institutions was not favorable towards physical education. Most of the heads of institutions did not take interest in promoting physical education. Private schools seemed to provide more facilities for physical activities and a sport to the students than the Government schools in Delhi State.That was the reason that the private schools possessed good and outstanding players. It was found that better and sufficient grounds, coaching

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Dist. Belg...

facilities and incentives were helpful in popularizing and attracting the students for the games and physical activities. The students who got better and sufficient facilities were only helpful to raise the sports standard of higher secondary schools in Delhi State.

Singh Harjinder (2006) evaluated the development of physical education programme in high/higher secondary schools of Bhatinda District during the period 1966 to 1978. The investigator found that: The number and qualifications of physical education staff (teachers and coaches) in any institution were not adequate to co-operate with the work of compulsory physical education and games programme. In some institutions there were no qualified teachers. Almost all the schools did not have adequate grounds. If they had, there were not proper facilities available to maintain them for use. As far as equipment was concerned most of the schools had not sufficient equipment. Medical check up and such other facilities were not provided properly and regularly. Sixty five percent heads of high/higher secondary schools had unhealthy attitude towards physical education activities and games.

Mize (2007) determined the relationship between attitude towards physical activity and sex role orientation of college students. Scores on the Kenyan Attitude toward Physical Activity Inventory (ATPA) and the Bem Sex Role Orientation Inventory (BSRI) were processed by inter correlation, t-test, ANOVA, Duncan's Multiple Range Test and Chi-square. Her subjects were 267 college age students (M=179, F=88). All variables of ATPA were inter related except chance and athletics for the total group. Analysis of the male and female groups yielded some different results for various factors of the ATPA. Significant difference between males and females was found.

Overman and Rao (2009) studied the high school students to determine the most significant factors that influence the extent of participation of youth in organized sports from their initial experience through high school and to determine their motivations for participation in sports and recreation. On the basis of the regression analysis, a general conclusion was that personal attributes of the subjects and the influence of parents as socializing agents both accounted for significant variance in the dimensions of sports participation. The structure of the family as a socializing situation accounted for a very minor proportion of the variance in sport participation.

Nakornkhet (2010) compared the attitude toward the six sub domains of physical activity as proposed by Kenyon (1986 b), among adults from China, Japan, Korea, Malaysia, Thailand and U.S.A. A comparison was also made of the attitude towards the six sub-domains of physical activity are : (1) physical activity as social experience, (2) physical activity for health and fitness (3) physical activity as pursuit of vertigo, (4) physical activity as an aesthetic experience, (5) physical activity as catharsis and (6) physical activity as ascetic experience. The subjects of the study were 606 adults from six different countries who had enrolled in classes at selected university in the state of Indiana. The data were subjected to discriminate analysis technique. The results of the study indicated that the attitude towards physical activity i.e. a function of socio-cultural difference, but it is not a function of gender. The American subjects have a more positive attitude to physical activity than those subjects from East Asia and South-East Asia.

Underwood (2012) investigated the change in attitude toward physical education for students who were enrolled in a one semester, concepts-oriented physical education course at the University of Tennessee. The experimental group consisted of 119 students enrolled in physical education concepts and application in physical education. Further 128 students enrolled in psychology, Introduction to Psychology during the same term served as the control group for this investigation. All the subjects were administered the Wear Physical Education Attitude Inventor (Form A) as a pre-test at the beginning of the semester and again as a post- test at the end of the semester. Analysis of covariance and t-test were utilized to analyze change scores. In conclusion, student attitudes towards physical education indicated positive changes as a result of being enrolled in physical education.

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur 59 302 Dist. Belgaum

CHAPTER-III

METHODOLOGY

The procedure of sample selection from rural and urban areas, are explained in this chapter. Following the selection, the test items and testing procedures are explained and finally the statistical treatment of data is explained in the following section of the chapter.

SELECTION OF SUBJECT

100 students from various 4 schools of Belagavi & Dharwad district (Karnatak) were selected for the present study of which 50 were rural high school boys and 50 were urban high school boys.

Two rural and two urban schools were selected at random and 25 students from each of the schools, during the physical education period with the help of physical education teachers and staffs, as furnished in Table 1.number of subjects selected for the study from rural and urban schools.

Rural school		**Urban school**		**Total**
Name of the school	**No of students**	**Name of the school**	**No of students**	
Govt high school masaguppi	50	Govt high school navalur	50	100
total	50	total	50	100

STATISTICAL TECHNIQUE

The performance in each of test items of the battery was converted to score provided by the author of the test.

TABLE 2. SELECTED VARIANCE AND THERE CRITERION MEASURES

Sl.no	Variables	Criterion measures	units
1	Speed and agility	160 yard potato race	In seconds
2	Explosive power	Standing vertical jump	In cm
3	Shoulder strength	Pull-ups	In numbers

ADAMS QUESTIONNAIR

Object-To provides a means for assessing individual and group attitude towards physical education.

Age and gender- high school for boys and girls.

Validity- 0.77

Reliability-0.71

Direction- This is questionnaire to measures your attitudes physical education. There are a number of statements about physical education below, each one followed by a pair of brackets under two heading, "agree or disagree". You asked to check one of these brackets to show whether you agree or disagree with the statement. Please consider each statement carefully and in you answers indicate your present feeling about physical education as you know it.

Scoring- Consider only the agree item checked. The final score is the sum of all of the statement scores divided by the number of agrees item checked.

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur 59 302 Dist. Belgaum

MOTOR FITNESS TESTS

The Oregon state department of education provides a manual of motor fitness test batteries and norms for age groups. Standing vertical jump, 160 yard potato race and pull-ups for high school students.

1)160 yard potato race- is conducted in an area requiring 70 feet for running plus some space for finishing. There circles arches are drawn on the floor in a line each circle is 1 foot diameter. The first circles id drawn immediately behind the starting line. The second circle is 50 feet and third circle 70 feet away. A small block or eraser 2 by 4 inches is placed in circle two and another circle in three. The subject runs to place in the first circle. He than runs to circle three picks up the block and placed it in the circle he grabs the first block and returns it to circle two runs back and gets the remaining block, and carries it to circle three. He finishes the race by aching across the finish line. The score is in seconds.

2) Standing vertical jump (sergeant chalk jump)-objective to measure the power legs in jumping vertically upward.

Reliability-an of .97 was found for this test.

Validity-an of .80 was found when the distance score test was correlated with the vertical power pull test (work or ti me).

Objectivity-an of .99 indicate high degree of objectivity.

Equipment- a climbing rope, marking tape, a tape measure.

Method-record the performs name and then have him assume a setting position on a chair or bench and grasp as high up the rope as possible without raising the buttocks from the chair or bench seat. Concerning the grasp the hand of the preferred arm should be just above the opposite hand.

Scoring-the tester should allow each performer three trails and disregard any traial where the feet touch the floor during the pull. Measure in cm.

3)Pull-ups-to measure the endurance of the arms and shoulder girdle.

Reliability-the authors failed to find a coefficient of reliability reported for this test.

Objectivity-an of .99 was reported for this test.

Equipment and materials at on the floor.

Directions-from a straight arm front learning rest position, the performer lowers the body until the mat and then pushes upward to the straight arm support. The exercise is continued for as many repetitions as possible without rest.

Scoring-the score is the number of correct pull-ups executed.

CHAPTER - IV

DATA ANALYSIS AND RESULTS

However valid, reliable and adequate the data may be, it does not serve any useful purpose unless it is carefully processed, systematically classified and tabulated, scientifically analyzed, intelligently concluded.

After the data had been collected it was processed and tabulated using Microsoft excel-2007 software. The data collected on attitude questionnaire and 160 yard potato race, standing vertical jump and pull-ups from rural and urban boys of high schools. The main purpose of the study was "A comparative study on rural and urban high school boys' attitude towards physical education and motor fitness". Then data were analyzed with reference to the objectives and hypotheses by using SPSS 21.0 statistical software and the results obtained thereby have been interpreted.

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur 59 302 Dist. Belgaum

It is the intention of the investigator and find the out whether difference in the independent variables namely group (Attitude and Motor Fitness)and Rural and Urban with respect to agility 160 yard potato race, explosive power standing vertical jump and strength pull-ups from rural and urban high school boys and consequently others.

TABLE 3. MEAN AND STANDARD DEVIATION (X -+ SD) OF COMPOSITE SCORE OF ATTITUDE TOWARDS PHYSICAL EDUCATION AND MOTOR FITNESS SCORES OF RURAL AND URBAN BOYS.

Report

Sereal no		160 yard Potato race In second	Standing verticle Jump in cm	Pull-ups In no	Motor Fitness Total Score	Attitude Score
Rural	Mean	29.0746	34.3200	6.6600	8.4000	6.8886
	N	50	50	50	50	50
	Std. Deviation	1.5533	6.6928	2.9389	1.7843	.7557
Urban	Mean	27.2998	33.6276	9.8000	9.7600	7.1946
	N	50	50	50	50	50
	Std. Deviation	2.3489	7.6384	6.3567	2.4207	.5972
Total	Mean	28.1872	33.9738	8.2300	9.0800	7.0416
	N	100	100	100	100	100
	Std. Deviation	2.1727	7.1533	5.1735	2.2233	.6948

HYPOTHESES 1

1) Those are good in motor fitness are also good or positive in attitude towards physical education.

To test have first hypothesis data is subjected to co-efficient of correlation to find whether have fitness of have student is positively and significantly correlated to attitude towards physical education. The students who scored more than fitness composite marks ware considered as physically fit students. Among 100 students 27 students were physically fit according to our criteria. Those 27 students attitude score was correlated with physically fitness composite score. Following table shows that correlation index of physically fit and less fit student's correlation with their attitude towards physical education.

CORRELATION MATRIX (FIT AND LESS FIT STUDENTS) TABLE

Correlations

		fitness index	Atrtitude towards pe
fitness index	Pearson Correlation	1.000	-.040
	Sig. (2-tailed)	.	.842
	N	27	27
Atrtitude towards pe	Pearson Correlation	-.040	1.000
	Sig. (2-tailed)	.842	.
	N	27	27

From above table we can observe that the students who are physically fit are having negative correlation with their attitude towards physical education and it is also not up to have significant level. So have proposed first hypothesis for the study is rejected.

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur-590 302 Dist. Belgaum

Journal of the Asiatic Society of Mumbai
ISSN: 0972-0766 UGC Care Group Journal

HYPOTHESIS 2

Urban boys are higher motor fitness than rural boys.

Mean and Sd table of physical fitness composite score of rural and urban students.

Group Statistics

	Sereal no	N	Mean	Std. Deviation	Std. Error Mean
Motor Fitness Total Score	Rural	50	8.4000	1.7843	.2523
	Urban	50	9.7600	2.4207	.3423

From above table we can observe that the mean score of urban students is higher than the rural students. To test whether heavy are significantly different data is subjected to independent sample T-test.

T-TEST TABLE OF PHYSICAL FITNESS

Independent Samples Test

		Levene's Test for Equality of Variances		t-test for Equality of Means						
									95% Confidence Interval of the Difference	
		F	Sig.	t	df	Sig. (2-tailed)	Mean Difference	Std. Error Difference	Lower	Upper
Motor Fitness Total Score	Equal variances assumed	7.102	.009	-3.198	98	.002	-1.3600	.4253	-2.2040	-.5160
	Equal variances not assumed			-3.198	90.110	.002	-1.3600	.4253	-2.2049	-.5151

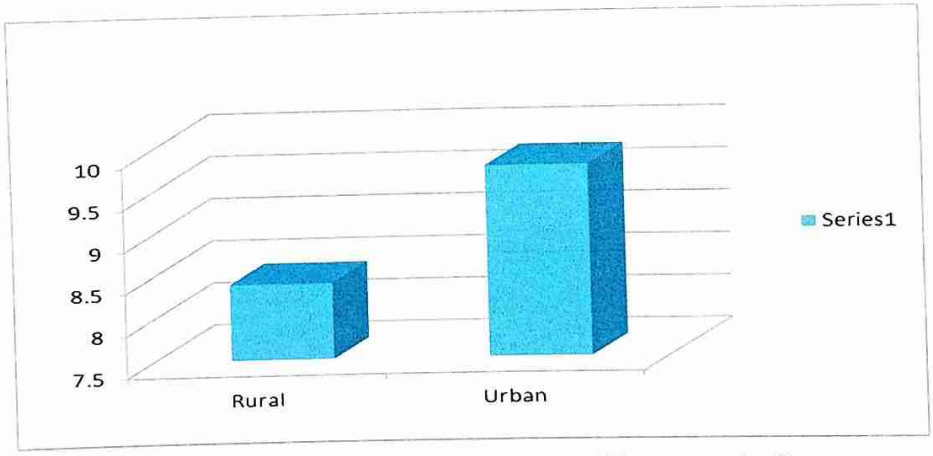

MOTOR FITNESS

From the table we observe that significant difference occurred between the fitness mean score of rural and urban students so scored hypothesis is accepted.

HYPOTHESES 3

1) Urban boy's higher or positive attitude towards physical education than rural boys.

Mean and Sd table urban and rural students attitude towards physical education.

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur-591 302 Dist. Belgaum

Group Statistics

	Sereal no	N	Mean	Std. Deviation	Std. Error Mean
attitude score	Rural	50	6.8886	.7557	.1069
	Urban	50	7.1946	.5972	8.446E-02

From above table we can observe that urban students attitude towards physical education is higher than the rural students. To test whether both are significantly differ from each other data is subjected to indipendent sample t-test.

t-test table of urban and rural students attitude towards physical education.

Independent Samples Test

		Levene's Test for Equality of Variances		t-test for Equality of Means						
									95% Confidence Interval of the Difference	
		F	Sig.	t	df	Sig. (2-tailed)	Mean Difference	Std. Error Difference	Lower	Upper
attitude score	Equal variances assumed	1.111	.294	-2.246	98	.027	-.3060	.1362	-.5763	-3.57E-02
	Equal variances not assumed			-2.246	93.030	.027	-.3060	.1362	-.5765	-3.55E-02

ATTITUDE

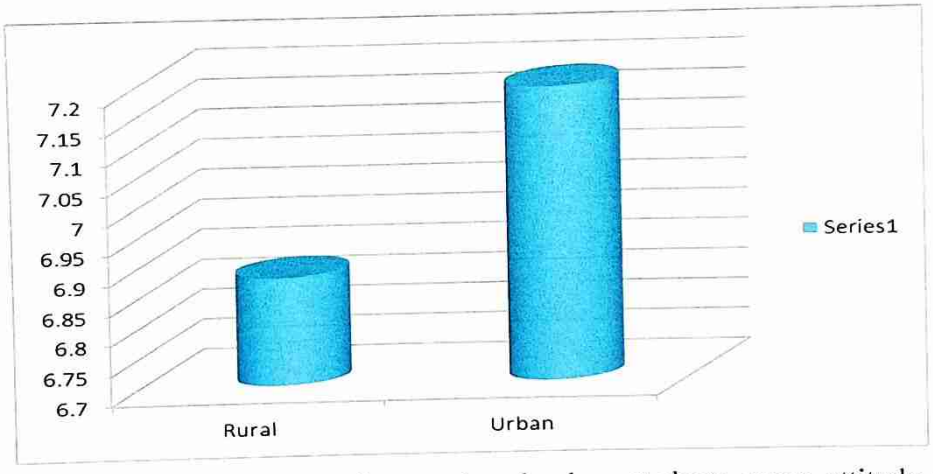

From the above table we can observe that rural and urban students mean attitude score towerds physical education significantly differ from each other. So the proposed third hypothesis is accepted.

CHAPTER - V

SUMMARY, CONCLUSION, DISCUSSION AND RECOMMENDATIONS

A person having better fitness can run, climb, jump dodge, carry loads, lift the weight and can continue the sustained efforts in a variety of activities much more effectively. It is a capacity to do physical work and recover quickly and completely from fatigue including by work.

PURPOSE OF THE STUDY

The broad purpose of the study was to compare the attitude towards physical education and motor fitness of rural and urban high school boys.

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur Dist. Belgaum

STATEMENT OF THE PROBLEM

A study of previous research it was found that urban boys appears to be more physically fit than rural boys and also it found that rural boys appears to be more physically fit than urban boys. Than also urban boys more attitude towards physical education than rural boys.

Rural boys were found to be superior in above motor fitness components than urban boys. But Urban boys appear to better in pull-ups rural boys.

HYPOTHESES

Attitude: Urban boys has more positive attitude towards physical education than rural boys and there is no relationship between attitude and motor fitness.

MOTOR FITNESS

1) 160 yard potato race the rural boys are more superior to urban boys.
2) Standing vertical jump the rural boys are more superior to urban boys.
3) Pull-ups the urban boys are more superior to rural boys.

METHOD

Subject and samples: the data collected for the comparative study of attitude and motor fitness between rural and urban high school boys from various 2 schools of Belagavi & Dharwad district (Karnatak) were selected for the present study of which 50 were rural high school boys and 50 were urban high school boys.

DATA COLLECTION AND DATA TRANSFORMATION

These 100 boys' high school boys tested in the belagavi & dharwad district. Adams Attitude scale (12 statement) and Oregon Motor Fitness Test (3 test)

1) 160 yard potato race (in second)
2) Standing vertical jump (in cm)
3) Pull-ups (in numbers)

STATISTICAL TECHNIQUE

The performance in each of items of the battery was converted to scores by the author of the test. The score each of the test item total score and were subject to analysis of T-test using SPSS (ver.9.0) on computer.

RESULTS

There is not co-relation between attitude towards physical education and motor fitness.

There is significant difference between attitude and motor fitness among rural and urban high school boys.

REFERENCES

1. Bob Carroll, Julia Lou midis (2010) —Children perceived competence and
2. Enjoyment in physical education and physical activity outside
3. Carlson, T.B. (1994) —Why students hate, tolerate, or love gym: A study of
4. Attitude formation and associated behaviors in physical education‖ (Doctoral
5. Dissertation, University of Massachusetts, 1994).Dissertation Abstracts

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur 59 302 Dist. Belgaum

6. International, 55-03, 0502.
7. CananKoca , Hiilya A. F.and GiyasettinDemirhan(2005) —Attitudes toward
8. physical education and class preferences of turkish adolescents in terms of school
9. gender composition‖Adolescence, Volume: 40, No.: 158.
10. harles A. Bucher (1980) Foundation of physical education (3rd Ed.), C. V.
11. Mosby Company, St. Louis.
12. Charles L. Woar. AS Cited by Chaster W. Harris(1989) Encyclopedia of
13. Education Research (3rd Ed.), The Macmillan Company, New York.
14. L. B. Blank (1982) —Critical incident in behavior of secondary school physical
15. education instruction‖ Research Quarterly: 29.
16. Leila Netto, (1979) —Attitude of graduate teacher trainee toward physical
17. education‖ Unpublished Master's Dissertation, JiwajiUniversity, Gwalior.
18. Leung, Sheung-ping Citation (1997) —The Attitudes of secondary school form
19. five students in hongkong towards physical education : implications
20. programmedesign‖ Unpublished Master Dissertation, University of Hong Kong.
21. Lilia L. Bagtas(1990) —The Attitudes towards physical education of thirds
22. years high school students in some selected schools in zone division of nuevaecija.
23. College of Human Kinetics Library‖ Unpublished Doctoral Dissertation. adolescents' attitudes toward school physical education‖Journal of Teaching in
24. Physical Education.
25. Motl, R., Dishman, R., Saunders, R., Dowda, M., Felton, G., & Pate, R.
26. (2001) —Measuring enjoyment of activity in adolescent girls‖ American Journal of
27. Preventive Medicine,21(2),110-117.
28. NazekMostafaSinbel(2001) —Attitudes of sports leaders toward the
29. professional preparation scheme for sports coaches in Egypt‖ Dissertation
30. Abstracts International: 43: 9, P. 2929-A.
31. Paul J. Carpenter & Kevin Morgan, Motivational Climate (1999) —Personal
32. goal perspectives, and cognitive and affective responses in physical education
33. classes‖Physical Education & Sport Pedagogy,Volume: 4, Issue: 1, ,Pp. 31-44.

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur 591302 Dist. Belagavi

JOURNAL of THE ASIATIC SOCIETY OF MUMBAI

CERTIFICATE OF PUBLICATION

This is to certify that the article entitled

A COMPARATIVE STUDY OF RURAL AND URBAN HIGH SCHOOL BOYS ATTITUDE TOWARDS PHYSICAL EDUCATION AND MOTOR FITNESS

Authored By

Prof. Kapildeva Anant Gurav

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce Colleg.
Khanapur-591 302 Dist. Belg...

Published in Vol. 96, No. 01 January 2022
JOURNAL OF THE ASIATIC SOCIETY OF MUMBAI with ISSN : 0972-0766
UGC-CARE List Group I
Impact Factor: 5.29

UGC

Editor in chief

Annals of the Bhandarkar Oriental Research Institute

ISSN: 0378-1143

A STUDY AMONG AGGRESSION OF FOOTBALL AND HANDBALL PLAYERS OF INTER-UNIVERSITY LEVEL

Prof. Kapildeva Anant Gurav

Physical Director, Maratha Mandal's Arts & Commerce Khanapur

CHAPTER-I

INTRODUCTION

It is an emerging field of psychology is viewed as an attempt to understand describe and explain the behavior of sports persons in athletic setting both practice and competitive with a view to enhance performance. Today there is no sport without sports psychology. It is well know that psychology grew out of philosophy and within a few decades of the modern era of science and education, it shaped into a huge banyan tree with hundreds of branches and offshoots making it a recent phenomenon a distinct addition to that ever expanding family of psychology. Known as hybrid science, a fusion of sport, science and psychology-sports psychology is all about sports behavior especially with muscle-mind interaction, there influences and their outcomes in the context of sports, which is basically a form of active reaction, but which has turned intensely competitive on account of growing olympism well over a century.

Sports psychological intervention coping strategies, mental skills such as imagining concentrating, are focusing excreta. Team interaction and convention are all practical tasks in which athlete's teachers/coaches and sports psychologists play reciprocally cooperative but decisive roles. All other things being equal athletic event/sports are winning in the mind. One of the goals of applied sports psychology is to investigate human performance stabilize and to enhance sports performance.

The physical and sports are important factors of common education. Here the education is important but not the only the physical activities. That is the psychological factors should be given as much as important as of physical activities. The overall development of person is an aim of common education. Along with physical education that should be given an equal importance. Initially the people are to spend their leaser-time by involving in physical activities. Which is to bring them and happiness.

As a time-past the people got increased and also the participation in physical activities also got increased. This change to increase in interest and also the competition.

By this the lot of sports persons are becoming professional oriented. Today as there is immense competition among these persons, so a person with just physical abilities, motor abilities, and any other kind of physical abilities at peak-level they sports persons want to become successful he is psychological factors alsoaining plays an important role. So the psychological training is need to be given. That includes motivation, achievement motivation, aspiration levels, anxiety and arousal, aggression and team-cohesion etc.

Therefore a success in the field of sports needs both the physical and psychological factors. This gets us to an understanding that it is default and very much necessary to train the physical education teachers, coaches in these psychological factors as they are directly linked with the people involved in sports.

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur-591302 Dist. Belgaum

ISSN: 0378-1143

Among these psychological factors the "aggression" is important one. And the birth of this factor has different opinions.

- The one opinion says that this comes along with birth and be a survival of the fittest.
- Whereas the other opinion says that it depends on the environment where he grows.

The sports persons get into depression when the factors like fear, worry, socio-inequity, attitudinal factors. Encroach an him. Leading to change in his normal behavior by expressing himself in abnormal behavior is situational. So this person to control on his emotions to balance the aggression factor.

A person also needs to have control on his aggression to much of aggression and also to low of it is dangerous because his low aggression pulls –him back in the participation of the sports itself and that of high aggression leads to an irregular activities such as breaking of rules and non coordinative behavior with his teammates, opponents and others.

Ex:- in the field of cricket the behavior of the player Harbajan Singh with his teammate srishant.

This level of aggression also depends on the sports:- age, his surrounding environment and the different types of sports activities involved in such as.

Physical education trends have developed recently to incorporate a greater variety of activities. Introducing students to activities like bowling, walking/hiking, or Frisbee at an early age can help students develop good activity habits that will carry over into adulthood. Some teachers have even begun to incorporate stress reduction techniques such as yoga and deep-breathing. Teaching non – traditional sports to students may also provide the necessary motivation for students to increase their activity, and can help students learn about different cultures.

Another trend is the incorporation of Health and Nutrition to the physical education curriculum. The Child Nutrition and WIC Re-authorization Act of 2004 required that all school districts with a federally funded school meal program develop wellness policies that address nutrition and physical activity. While teaching students sports and movement skills, P.E. teachers are now incorporating short health and nutrition lessons into the curriculum. This is more prevalent at the elementary school level, where students do not have a specific Health class. Recently most elementary schools have specific health classes for students as swine flu, school district are making it mandatory for students to learn about practicing good hygiene along with other health courses. Many colleges and Universities offer both Physical Education and Health as one certification. This push towards Health education is beginning in the intermediate level, including lessons on bullying, self-esteem and anger management.

In America, the physical education curriculum is designed to allow school pupils a full range of modern opportunities, dozens of sports and hundreds of carefully reviewed drills and exercises, including exposure to the education with the use of pedometer, GPS, and heart rate monitors, as well as state-of-the-art exercise machines in the upper grades. Some martial arts classes, like wrestling in the United States, and Pancake Silt in France, Indonesia and Malaysia, are taught to teach children self-defense and to feel good about themselves. The physical education curriculum is designed to allow students to experience at least a minimum exposure to the following categories of activities: aquatics, conditioning activities, gymnastics, individual/dual sports, team sports, rhythms, and dance. Students are encouraged

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur-59 302 Dist. Belgaum

ISSN: 0378-1143

to continue to explore those activities in which they have a primary interest by effectively managing their community resources.

Sports psychology is the study of the psychological factors that affect participation and performance in sports. It is also a specialization within the brain psychology and kinesiology that seeks to understand psychological/mental factors that affect performance in sports, physical activity, and exercise and apply these to enhance individual and team performance. It deals with increasing performance by managing emotions and minimizing the psychological effects of injury and poor performance. Some of the most important skills taught are goal setting, relaxation, visualization, self-talk, awareness and control, concentration, confidence, using rituals, attribution training, and periodization. Sport psychology defined in laymen's terms: there are many psychology tools you can apply in sports. Some of the psychology tools are mentioned above, but most successful sport psychologists will analyze each individual to determine their learning style. The latest and most effective psychology used in sports today is neuro-linguistic programming (NPL). NPL categorize each individual's learning style whether it's visual learning, auditory (hearing) learning, or kinesthetic (hands on or emotional) learning. For example, if you learn from hearing, you would benefit from imagining in your mind the sound of the crowd cheering your name after you have won a competition. The emotional experience you receive from imagining the sound of the crowd cheering your name is then enhanced by using NLP techniques, also you will be taught to recall this emotion at will while in competition to motivate yourself to perform at a higher level. This type of psychology is popular in sports involving extreme mental situations.

PURPOSE OF THE STUDY

The purpose of the study is to find out competitive aggression among Football and Handball players.

STATEMENT OF THE PROBLEM

The purpose of the study is to find out aggression among Football and Handball players.

HYPOTHESIS

There is a no significant difference between Inter-University level players (Football and Handball) with respect to their aggression.

LIMITATION

The limitation of the present study is as follows

1) The food habits, other regular habits and life style are not controlled.
2) The regular activities of the students will not be controlled.
3) Family background of the subject is not being considered.
4) Environmental factors, which contribute to the mental ability of the players, were not talent into consideration.
5) The response of the subject to the questionnaire might not be honest in all cases and this was recognized as a limitation.

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur-59 302 Dist. Belgaum

ISSN: 0378-1143

DELIMITATIONS

The present study was delimited in the following aspects.

1) The study will be restricted to 40 Football and handball players.
2) The age limit of the subject was 20-28 Years.
3) The study was restricted to the aggression.
4) Only standardized questionnaire was measured the psychological variable.
5) Handball and Football male players.

SIGNIFICANCE OF THE STUDY

The study investigates the existing difference between Football players and Handball players in relation to their of aggression.

- The finding of the study may provide guidance to the physical education teachers and coaches to prepare training programmers on the basis of the study.
- It may further help the researchers who are interested in Football and Handball game.
- The findings of the study may add to the quantum of knowledge in the area of sports and physical education.

OBJECTIVES OF THE STUDY

The research will find out the level of aggression to the Football and Handball players of Inter University meet.

DEFINITION OF TERMS

FOOTBALL

Association football, soccer, or simply football is a team sport played between two teams each consisting of eleven players. It is a ball game played on a rectangular grass (sometimes artificial turf) field with a goal at each and. The object of the game is to score by maneuvering the spheroid ball into the opposing goal. Other than the goalkeepers, players may not use their hands or arms to propel the ball in general play. The winner of the match is the team that has scored most goals at the end of the match. The sport is known by many names throughout the English-speaking world, although football is the most common. Other names, such as association football and soccer, are often used to distinguish the game from other codes of football, since the word football may be used to refer to several quite different games.

HANDBALL

Field Handball is a team sport of the Handball family. The game can be played on synthetic field or Mud field. The game of field Handball is played between two teams of seven players including the goalie.

Hand ballis a popular team game, an exciting game with many dramatic single combats, a competitive sport which requires technical and tactical versatility of the players, a splendid fight between the goal getter and the goal-keeper. A team game played in the whole world.

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur-59 302 Dist. Belgaur

ISSN: 0378-1143

It is a sport where you can play indoors or outdoors on grass or timbered floor. It is where players are encouraged to be athletic be flamboyant and inventive and above all work together as team.

Hand ball is one of the rare game and also Second Fastest game in the world.

It is a game played between two teams of seven players each in an area of 40 x 20 mts under certain rules and regulations.

PSYCHOLOGY

In order to understand where we are going, it sometimes helps to take a look at where we have been. While psychology is a relatively young discipline, it has a rich and colorful history. With iconic figures like Sigmund Frieud and B.F. Skinner, studying the history of psychology provides an intriguing glimpse into the minds of some of the preeminent thinkers of the past century.

AGGRESSION

In psychology, the term aggression refers to a range of behaviors that can result in both physical and psychological harm to oneself, other or objects in the environment. The expression of aggression can occur in a number of ways, including verbally, mentally and physically.

CHAPTER-II

REVIEW OF LITERATURE

Ganapathi analyzed the anxiety, aggression, frustration and stress between in collegiate and university level men and women soccer players for this study 30 men women players each in collegiate level group and university group where selected as subjects. Their age were ranging from 18to23. The data was static ally analyzed using 2x2 factorial ANOVA. It was found that the anxiety, aggression level players were significantly greater than the college players, the anxiety, aggression level of male soccer players were greater than the male soccer players. The indication effect of anxiety, aggression, frustration and stress between in university level male and female soccer players were insignificant.

Onifade (1983) examined the relationship among attitude, physical activity like adjustment and aggression and physical activity belief of Nigerian male (N=217) and female (N=133) University students is U.S.A. Attitudes were assessed through the attitude towards physical activity inventory developed by Kenyon (1968), while physical activity behavior was assumed by the use of a scale developed by ZoichKowsky (1979). Datawas collected on the physical activity belief of subject by a scale development by the researcher. Data was analyzed through the use of univariate and multivariate statistical procedures. Results depicted that there was no relationship among attitudes, physical activity behavior and physical activity belief of subjects. However, there were some relationship between some specific attitudes and physical activity behavior and physical activity belief. Subjects also chose individual physical activities and dual and team activities.

Meeriman (1985) determined the relationship of the influence of social system, attitude toward physical activity and physical education placement to the degree of participation in physical activity of emotionally disturbed high school students. 206 emotion of adjustment disturbed male and female student's age 14-21 attending public schools in New York City served as subjects. The degree of participation was measured by the physical activity.

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur-591302 Dist. Belgaum

Socialization inventory. Attitude toward physical activity was measured by the children's

Physical attitude toward physical activity inventory. The analysis of data revealed that (1) the influence of social system was related to the degree of participation. (2) The attitude toward physical activity was related to the degree of participation. (3) The influence of social systems and attitude toward physical activity, in combination contributed to variance in participation.

Attitude toward physical activity and physical education placement in combination contributed to variance in participation. (5) The influence of social systems, attitude toward physical activity and physical education placement, in combination contributed to variance in participation and

(6) The total variance of participation occurred for the three predictor variables, the influence of social system makes the largest unique contribution.

Hayajneh (1989) investigated sixty five Americans and sixty seven Jordanians related to aggression emotion both samples consisted of male and female sport participants and sport drop outs between the age of 11 and 17 years. He had two purposes. The first purpose was to determine any differences between Americans and Jordanians in their reasons for participating in and dropping out of youth sport programmers. The second purpose was to examine factors in achievement motives that might discriminate from Americans extrinsic/intrinsic motivation and achievement goals. The most important reasons that Americans had for sports participation were liking to have fun, liking to improve skills and liking to learn new skills. For Jordanians liking the team spirit, liking to be popular and liking to travel were the most important reasons for participation. Both Americans and Jordanian drop outs listed emphasis on winning and losing and the lack of fun as a most important reason for dropping out of sports programmers. There were no significant differences between Americans and Jordanians in their factors of achievement motivation and sports participation.

Young (1969) studied the relationship between the personal, social adjustment, physical fitness and attitude towards physical education among high school girls with varying socioeconomic levels. She concluded that there was no significant difference between socio-economic status groups with reference to physical fitness or attitude towards physical education. There was significant positive correlation between physical fitness and attitudes towards physical education for the entire population at .001 level, within the high and low socio-economic groups at the .05 level and within the middle group at the .01 level. There was a significant correlation at .05 level but physical fitness and personal social adjustment for the population and within the low socio-economic status groups; there was an inverse and significant correlation between social adjustment and attitudes towards physical education at .01 level.

Sham (1987) undertook a case study to determine student attitudes towards interscholastic sports participation and factors that affect their attitudes. Data was gathered from high school yearbooks. Pennsylvania department of education, a survey questionnaire administered to 155 high school student and individual interviews of selected students participants, students and individual interviews of selected students participants, student non-participants and community members. Result indicated: (1) level of sports participation remained approximately 25 percent over the period of 165-85. (2) Several factors appear to affects the attitudes of students toward participation in interscholastic sports. Parental influence was the

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur 59 302 Dist. Belgaum

most definite factor. Other factors noted were peer influence and coach influence, perceived athletic ability sport as fun, priority of sports and the relationship of sports to academic achievement. (3) Students especially participants reacted favorably to the schools interscholastic sports programmed and believed that sports were worthwhile because they thought such concepts as cooperation, competition and learning responsibility. Sports were perceived as beneficial for physical fitness and adjustment. Students reacted negatively to the overemphasis on competition and winning pressure from coaches and sports not being fun. (4) Coaches, faculty, parents and community members believed that sports participation was beneficial to students.

The relationship of sport involvement with children's Moral reasoning and aggression tendencies

- Abstract: The relationships between sport involvement variables (participation and interest) and facets of children's morality (reasoning maturity and aggression tendencies) were investigated for 106 girls and boys in grades 4 through 7. Children responded to a sport involvement questionnaire, participated in a moral interview, and completed two self-report instruments designed to assess aggression tendencies in sport-specific and daily life contexts. Analyses revealed that boy's participation and interest in high contact sports and girls participation in medium contact sports (the highest level of contact sport experience they reported) were positively correlated with less mature moral reasoning and greater tendencies to aggress. Regression analyses demonstrated that sport interest predicted reasoning maturity and aggression tendencies better than sport participation. Results and implication are discussed from a structural developmental perspective.
- Copyright of journal of sport psychology is the property of human kinetics publishers, Inc. and its content may not be copied or emailed to multiple sites or posted to a listserv without the copyright holder's express written permission. However, users may print, download, or email articles for individual use. This abstract may be abridged. No warranty is given about the accuracy of the copy. Users should refer to the original published version of the material for the full abstract.

A comparative study of adjustment and aggression of inter university football and handball players.

Physical education trends developed recently to incorporate a greater variety of activities. Introducing students to activities like bowling, walking/hiking, or Frisbee at an early age can help students develop good activity habits that will carry over into adulthood. Some teachers have even begun to incorporate stress-reduction techniques such as yoga and deep-breathing. Teaching non-traditional sports to students may also provide the necessary motivation for students to increase their activity, and can help students learn about different cultures. For example, while teaching a unit about lacrosse (in, say, Arizona, USA), students can also learn a little bit about the native American cultures of the northeast and eastern Canada, where lacrosse originated. Teaching non-traditional (or non-native) sports provides a great opportunityto integrate academic concepts from other subjects as well (social studies from the example above), which may now be required of many P.E. teachers. There are four aspects of P.E. which is physical, mental, social, and emotional. Psychology is the science of mind and behavior. Its immediate goal is to understand behavior and mental processes by researching and establishing both general

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur 591 302 Dist. Belgaum

ISSN: 0378-1143

principles and specific cases. For many practitioners, one goal of applied psychology is to benefit society in this field, a professional practitioner or researcher is called a psychologist, and can be classified as a social scientist, behavioral scientist, or cognitive scientist. Psychologists attempt to understand the role of mental functions in individual and social behavior, while also exploring the physiological and neurobiological processes that underline certain functions and behaviors. Adjustment: in psychology, adjustment is studied especially in abnormal psychology and also in social psychology. In our daily life there has been a continuous struggle between the needs of the individual and the external forces, since time immemorial. According to Darwin's theory of evolution those species which adapted successfully to the demands of living survived and multiplied while who did not died. Therefore adaptation or changing of if one self or one's surrounding according to the demands of external environment became the basic need for our survival. It is as true today with all of us as it was with Darwin's primitive species. In psychology, as well as other social and behavioral sciences, aggression (also called combativeness) refers to behavior between members of the same species that is intended to cause pain or harm. Predatory behavior between members of one species towards another species is also described as "aggression".

CHAPTER-III

METHODOLOGY

SAMPLE OF THE STUDY

The study was formulated based on the simple random sampling. The samples were selected from the 40 Football and 40 Handball players of Inter-University South Zone tournament.

GAMES	SUBJECTS
Football	**40**
Handball	**40**

SELECTION OF VARIABLES

The research scholar reviewed the available scientific literature, books, journals, periodicals, and magazine and research papers pertaining to the study. Taking into consideration of the importance of variable and the feasibility criteria for these are variable was selected of the investigator.

TOOLS USED

- The aggression questionnaire inventory developed by anandkumar and prem Shankar.

AGGRESSION

- The aggression questionnaire inventory of developed by anandkumar and pream Shankar was be administered to crack subject obtain the aggression of football & handball players the aggression questionnaire inventory looniest of 25 items in which 13 items are keyed YES and rest of 12 are keyed NO.
- Aggression was given to all investigation, the computed questionnaire was scored as follows.
- For items 1,4,5,6,9,12,14,16,18,21,22,24, and 25 answer "yes" he scored two point. In the answer "no" get zero point.

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur-59 382 Dist. Belgaum

Annals of the Bhandarkar Oriental Research Institute

ISSN: 0378-1143

- For items 2,3,7,8,10,11,13,15,17,19,20, and 23 answer "no" he scored two point. If he answer "yes" zero point.

(The copy of questionnaire is given in appendix-I)

DATA COLLECTION PROCEDURE

Statistical analysis: 't' test used

The procedure adopted for the selection of subjects, selection of variable collection of data, statistical techniques to be employed for analyzing the data have been described.

The subjects for this study were selected from Inter-University Football and Handball competitions 40 subject of Football and 40 subjects of Handball players were selected.

The research scholar reviewed the available scientific literature pertaining from books, journals and magazines.

Aggression was using with the help of questionnaire test the comparison between the Football and Handball 't' test was applied.

CHAPTER – IV

DATA ANALYSIS AND RESULTS

INTRODUCTION

However valid, reliable and adequate the data may be, it does not serve any useful purpose unless it is carefully processed, systematically classified and tabulated, scientifically analyzed, intelligently interpreted and rationally concluded.

After the data been collected, it was processed and tabulated using Microsoft Excel-2013 software and SPSS V.21.0.1 Software. The data collected on aggression from Football and Handball players Inter-University level. The aim of the study is to **"A STUDY AMONG AGGRESSION OF FOOTBALL AND HANDBALL PLAYERS OF INTER-UNIVERSITY LEVEL".** Then the data were analyzed with reference to the objectives and hypotheses by using unpaired 't' test with respect to aggression. The statistical significance was set at 5% level of significance ($p<0.05$) and the results obtained thereby have been interpreted.

HYPOTHESIS

There is a no significant difference between Inter-University level players (Football and Handball) with respect to their aggression.

To achieve this hypothesis, the t-test was applied and the results are presented in the following table.

TABLE 2: RESULTS OF T-TEST BETWEEN FOOTBALL AND HANDBALL WITH RESPECT TO AGGRESSION SCORES.

Group	n	Mean	SD	t-value
FOOTBALL	40	23.6250	6.29891	.055
HANDBALL	40	20.8750	6.32532	

From the results of the above table, we clearly seen that, a significant difference was not observed between Football and Handball with respect to Aggression scores ($t=.055$, $p<0.05$) at 0.05% level of significance. Hence, the null hypothesis is accepted and alternative

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur 591 302 Dist. Belgaum

ISSN: 0378-1143

hypothesis is rejected. It means that, the Football have significant higher Aggression scores (mean=23.6250) than Handball (mean=20.8750). The mean and SD scores of Aggression is also presented in the following figure 1.

FIGURE 1: FOOTBALL AND HANDBALL AGGRESSION LEVEL

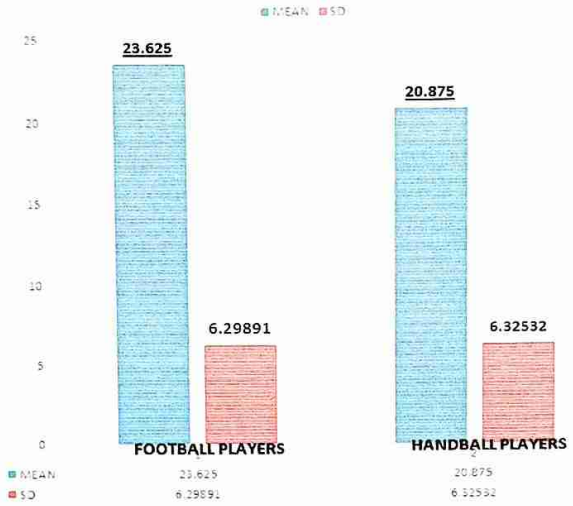

CHAPTER-V

SUMMARY, DISCUSSION, CONCLUSION AND RECOMMENDATION

SUMMARY

The purpose of the study was to find out the Aggression level of Inter-University Football and Handball players.

In order the achieve the purpose of the study 80 selected men Football and Handball players only.

To assess the level of Aggression inventory question was used and the data were collected from subjects.

Then the data was analyzed with reference to the objectives and hypotheses by using independent t-test to find out the difference between Football and Handball by using SPSS V: 21.0.1 statistical software and the results obtained thereby have been interpreted.

DISCUSSION

Football & Handball are similar games with one is having played with foot from one is having played with hand. The rules are also similar. But the area of playing is different. Handball is played in small area so lot of contact has been expected between played in large area so not of free area is there to move. Although in this study significant difference not occurred between football & Handball game players because these games are not popular in these sides accept few areas players are not having enough establishment to tournaments. So aggression remains similar.

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur-590 302 Dist. Belgaum

Annals of the Bhandarkar Oriental Research Institute

ISSN: 0378-1143

CONCLUSION

On the basis of the analysis the researchers is confident arriving at certain conclusions based of the results of the study and are as follows.

1. The University level Football players have significant higher aggression as compare to Inter-university level Handball players.

RECOMMENDATION

While conducting this study the Researcher felt certain related avenues of further Researcher.

1. The similar study may be conducted on age group of Football and Handball players.
2. The similar study may be conducted on national level.
3. Similar study may be conducted on other game.

REFERENCES

1. American association for health, physical education and recration, journal of health physical education and recreation, 40, 1969.
2. Astreidjunge, jiridvorak, dieter rosch, tonigrafbaumann, jirichomiak and Iarspeterson, "psychological and sport-specific characteristics of Football players", the American journal of sports medicine,(2000)
3. Barbara kruk, janchmura, krzysztofkrzeminski, andrzej w. ziemba, krystynanazar, heikkipekkarinen, henna kaciuba-uscilko, "influence of caffeine, cold and exercise on multiple choice reaction time", journal psychopharmacology.2001.
4. Carl will goose, "evaluation in health and physical education", (New York: McGraw Hill Book Company,1961).
5. Sadhashivan Raja, "Comarative Study of Aggression and Anxiety Among Blidn and Normal School Football players in Tamilandu Unpublished master of Philosophy Dissertation Alagappa University,2002

Appendix-I

Aggression Questionnaire

	YES	NO
1. I believe in aggressive playing	( )	( )
2. I never lose temper while playing	( )	( )
3. I never lose temper even if spectator hoot me	( )	( )
4. I become angry while I find myself loosing	( )	( )
5. I am extremely irritated on unfair decisions	( )	( )
6. I like excitement in game	( )	( )
7. I play for fun	( )	( )
8. I never feel excited even when opponent is aggressive	( )	( )
9. I try to hurt the opponent to deprive him from winning	( )	( )

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur-591302 Dist. Belgaum

10. I always accept all the decisions of the referee	( )	( )
11. I never feel angry while playing	( )	( )
12. I forget everything in anger	( )	( )
13. I feel sad if the opponent is injured	( )	( )
14. I do not hesitate to win the game through brawl	( )	( )
15. Good performance of the opponent gladdens me	( )	( )
16. I do not hesitate to inflict utmost harm to the opponent	( )	( )
17. Winning or losing a game is not important to me	( )	( )
18. I get pleasure in harassing the opponent	( )	( )
19. I am not easily annoyed	( )	( )
20. I feel a player must be penalized for inappropriate violence	( )	( )
21. I am not worried to see my opponent hurt and screaming	( )	( )
22. I find myself full of aggression during sports	( )	( )
23. I dislike to win a game by unfair means	( )	( )
24. I can go out of the way to win a game	( )	( )
25. When an opponent does me a wrong I try to pay him back	( )	( )

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur-591302 Dist. Belgaum

Annals of the Bhandarkar Oriental Research Institute

CERTIFICATE OF PUBLICATION

This is to certify that the article entitled

A STUDY AMONG AGGRESSION OF FOOTBALL AND HANDBALL PLAYERS OF INTER-UNIVERSITY LEVEL

Authored By

Prof. Kapildeva Anant Gurav

Published in Vol. XCIX, Issue-11 2022
Annals of the Bhandarkar Oriental Research Institute with ISSN : 0378-1143
UGC-CARE List Group I
Impact Factor: 6.5

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce Colleg
Khanapur

Annals of the Bhandarkar Oriental Research Institute ISSN: 0378-1143

Phalanx: A Quarterly Review for Continuing Debate
Vol-17, No-2, April-June, 2022
(UGC Care Listed Journal) ISSN: 2320-7698

A COMPARATIVE STUDY OF MOTIVATION AND MENTAL TOUGHNESS BETWEEN KARNATAK UNIVERSITY AND TUMKUR UNIVERSITY PHYSICAL EDUCATION GRADUATE STUDENTS

[1]Shri. Kapildeva Anant Gurav

CHAPTER I

Introduction

Sport is an ever expanding avenue of human life. From earliest time to the modern age sport in its various forms has played a vital role in the life of mankind. Sport activities provide a means of emancipation from daily routine and pressures. In modern competitive world every sportsmen is in race of excel better than others. Everyone desires to see himself/herself successful and for which personality plays a major role personality is the set of psychological traits and mechanisms within the individual that are organized and relatively enduring and that influence his or her interactions with and adaptation to the intra-psychic physical and social environments (Watt 2009).

What is motivation?

'Motivation is the answer to the question "why we do, what we do? The motivation theories try to figure out what the "m" is in the equation: "m-motivates P" (motivator motivates the person) it is one of the most important duty of an entrepreneur to motivate people (I strongly believe that motivating people with visionary and shared goals is more favourable than motivating through tactics, incentives and manipulation through simple carrot and stick approaches because motivating with vision is natural whereas the former is artificial and ephemeral).'

'Motivation theories can be classified broadly into two different perspectives: Content and process theories. Content theories deal with "what" motivates people and it is concerned with individual needs and goals, maslow, Alderfer, Herzberg and McClelland studied motivation from a "content" perspective. Process theories deal with the "process" of motivation and are concerned with "how" motivation occurs uroom. Porter and Lawler Adams and Locke studied motivation from a "process" perceptively' (Watt 2009).

Content theories about motivation

- In the first level, physiological ne' 'st which include the most basic needs for humans to survive, such as air, wate ood.
- In the second level, safety need which include personal security, health, wellbeing and safety against accidents remain.
- In the third level, belonging needs exit. This is where people need to feel a sense of belonging and acceptance. It is about relationships, families and friendship; organizations fulfill this need for people.
- In the fourth level, self-esteem needs remain. This is where people looks to be respected and to have self-respect, achievement needs respect of others are in this level.

---

[1] Maratha Mandal's Art's & Commerce College, Khanapur

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur 591302 Dist. Bel.

- In the top level, self-actualization needs exist. This level of need pertains to realizing the person's full potential.

Research has shown the participation in school physical education may affect student's motivation to engage in physical activity because it has the potential to provide both positive and negative experiences for the student population (Hagger *et al.*, 2003; McKenzie, 2007; Pratt *et al.*, 1999). When children and adolescents experience positive outcomes from their involvement in physical activity, they can also be expected to remain involved in physical activity in adulthood (Dishman *et al.*, 2005; Sallis *et al.*, 2000; Telema *et al.*, 2005; Vlachopoulos *et al.*, 1996) previous findings however have indicated that motivation to participate in PE programmes declines over the school years (Mowling *et al.*, 2004; Sallis *et al.*, 1992) suggesting a number of students may demonstrate negative perceptions towards school based physical activity. It is important, therefore, for researchers to acquire a clear understanding of the motivational mechanisms that under lie the positive or negative affective outcomes of PE, such as enjoyment or anxiety.

Mental toughness

'Mental toughness is the primary reason I play racquetball I know it is a great sport. Lost of fun and good exercise, but ultimately I want the ability to think under pressure to keep my composure and to keep finding a way to win a point. In short, "to keep moving forward" I love the rocky series of movies and from the last move came one of the greatest quotes' (Balboa, 2006).

'What is it you said to the kid? The world in it all sunshine and rainbows. It is a very rough, mean place.. and no matter how tough you think you are it will always bring you to your knees and keep you there permanently… if you let it, you or no body ain't never gonna hit as hard as life. But it ain't about how hard you lit… it's about how hard you can get lit and keep moving forward… how much you can take and keep moving forward, if you know what you are worth, go out and get what you are worth. But you gotta be willing to take the lit' (Balboa, 2006).

It is very easy to get caught up in the rush of the match and there are a lot of internal and external factors going on. It is important to take advantage of the break periods in racquetball to plan, recover and give your "real self" some reassurance. Most players want to rush into the next point and hat delays.

Time outs you get three thirty second time outs during each game and two during a tie-breaker. Once the score is called, there is another ten second period.

1. Two minutes between games and five minutes between game 2 and a tie-breaker.
2. Injury time out is fifteen minutes.
3. Equipment time out is upto two minutes.

Normally, I want to keep the momentum going when I am scoring and destroy it if my opponent is on fire. Taking a time out or my allotted time between rallies can help change the momentum of a game. I am a pretty easy going guy, but sometimes the competitive fire burns a little too hot, as Dr. James Loehr wrote in his book about anger "It's like trying to put out a fire with gasoline". "You see, fear keeps you sharp. It keeps you awake it makes you Wanna survive. But the thing is, you gotta Learn how to control it" (Balboa, 2006).

I remember two examples at the same round robin where anger hindered and helped me one game I was totally outclassed and had a one way ticket to the donut shop, but I broke his

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur 59 302 Dist. Belgaum

serve once and did a traditional "Double kill" first pump and yelled at myself "C'mon Joe! Do something!!" There was nothing left of myself. I wanted to serve hard and play hard at any cost. I was blinded by bloodlust.

My next opponent won the lower division last time and I did not care I was angry about getting the donut, but it was not the same out of control anger. It brought a level of focus I always wanted. I wanted the points, I wanted to win. I was the "wounded bear" that Brad Gilbert mentioned in his book my opponent lost and walked away with three points and it was my best racquetball. Anger and fear play an important part in mental toughness without them your body is not really ready to fight, but if they get out of control they ruin your chances for winning and during recreational play anger can ruin friendship.

Tips on keeping composure

1. Accept your lights and lows
2. Always play seriously
3. Give yourself a pep talk between points

Goal # 3 getting the point

Get one point at a time, I thought the score did not matter, but reading broad Gilbert's book showed me how "setup points" can set the stage for a win in tennis. A point at 13-5 is a lot different than at 5-3, so taking advantage of the scores psychological effect is often overlooked.

The past and future points often serve as a distraction and have no place in my thoughts during a rally, but they still keep coming up especially at the worst times.

Tips for getting the point

1. Focus on the ball
2. Keep the ball in play
3. Find more than one serve that works
4. Get your opponent tired and keep them tired

Advantages and disadvantages of motivation

Motivation provides us with energy to purse outcomes. The energy may come from an inside source or an outside source. These sources can be defined as either extrinsic or intrinsic motivation (Rodgers and Loitz, 2009). Extrinsic motivation "lies outside of the individual and the task being performed", whereas, intrinsic motivation "lies within the individual and the task" (Ormond, 2008). The task is found to be enjoyable and worthwhile alone.

Advantages of intrinsic motivation

- Long-lasting
- Self-sustaining

Focuses on the subject rather than the reward or punishment.

Disadvantages of intrinsic motivation

- Slow to change the behaviour
- Requires long the preparation and special attention

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur-591 302 Dist. Belgaum

- A variety of approaches may be needed to motivate students

Advantages of extrinsic motivation

- Quickly changes behaviour
- Requires little effort or preparation
- Requires little knowledge of the student

Disadvantages of intrinsic motivation

- Provides distraction from learning
- Difficulty in determining appropriate rewards and punishment
- Ineffective after a long period of time
- Once the reward is removed, motivation is lost

The Statement of Problem

The purpose of the study was to compare the motivation level and mental toughness between two physical education college students from Karnataka University and Tumkur Universities.

Hypothesis

The hypotheses of the present study are as follows:

- There will be no significant difference in motivation levels between UCPE and SCPE college physical education students.
- There will be no significant difference in mental toughness between UCPE and SCPE college physical education students.

The Limitatins of Study

The delimitations of study were as follows:

- Though the structured and standardized questionnaires are used for this study. The questionnaires have their own constraints; this would be a limitation for the study.
- The students' behavior while responding the questions were beyond the control of the research scholar.
- The health conditions of the respondents at the time of data collection may effect on the responses, this would be a constraint for the study.

The Delimitations of Study

- The study was restricted to two physical education colleges of Karnataka University and Tumkur University jurisdiction.
- The sample size was delimited to 42 physical education students pursuing bachelor's degree in physical education during the academic year 2014-15.
- The study was further delimited to standardized questionnaires related to achievement motivation, mental toughness.

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur-59. 302 Dist. Belgaum

The Significance of Study

- The study helps of find out the level of motivation and mental toughness of SCPE and UCPE students.
- The study may provide psychological variables differences between of SCPE and UCPE students.
- This study will help the coaches & physical education teachers to plan training programmes to improve the students' psychological characteristics, if required.
- The study may throw new light on the existing knowledge in the field of physical education and sports.

The Definitions and Explainations of Terms

Motivation is the answer to the question "why we do, what we do? The motivation theories try to figure out what the "m" is in the equation: "m-motivates P" (motivator motivates the person) it is one of the most important duty of an entrepreneur to motivate people (I strongly believe that motivating people with visionary and shared goals is more favorable than motivating through tactics, incentives and manipulation through simple carrot and stick approaches because motivating with vision is natural whereas the former is artificial and ephemeral) (Balboa, 2006)

Mental toughness is the primary reason I play racquetball I know it is a great sport. Lots of fun and good exercise, but ultimately I want the ability to think under pressure to keep my composure and to keep finding a way to win a point. In short, "to keep moving forward" I love the rocky series of movies and from the last move came one of the greatest quotes' (Balboa, 2006).

CHAPTER II

Review of Litreature

Babied *al.* (2005), studied the effect of psychological interventions such as general relaxation, imagery and combination of both on the mental toughness dimensions of table-tennis players. The study was carried out on 32 national level table–tennis players in the age group of 12-17 years. Loehr psychological performance inventory was administered to assess their mental toughness on seven variables viz. self-confidence, negative–energy, attention control, visual and imagery control, motivational level, positive energy and attitude control. The data obtained was analyzed using ANOVA, t test and percentage distribution. The results indicate that all the 3 psychological interventions enhanced mental toughness dimensions of sports persons. However combined intervention consisting of both relaxation and imagery therapies showed the maximum effect on mental toughness dimensions.

Balaji and Jesudass (2011) studied to find out the differences in Mental Toughness among Cricket Players of different age groups. To achieve this purpose, ninety Cricket players at the age group of 10-21 years were selected from Chennai District, who regularly practice the game and participate in various tournaments. Mental Toughness Questionnaire-a standardized sports psychological inventory designed by Dr. Goldberg, was responded by all the subjects. The collected data was analyzed using simple analysis of variance (ANOVA). The results of the study showed that there was a significant difference in Mental Toughness among Cricket Players group 18-21 years showed significantly greater mental toughness than the other two age groups. This may be due to their experience in the game.

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur-591 302 Dist. Belgaum

Phalanx: A Quarterly Review for Continuing Debate
Vol-17, No-2, April-June, 2022
(UGC Care Listed Journal) ISSN: 2320-7698

Loehr, 1986 studies the mental toughness and its influence on performance outcomes in competition. For this study 72 Male Kabaddi Players of different level competing in All India Invitational Kabaddi Tournament Organized by SahyogKridaMandal, (Registered Sports Organization, Registration no. JN 1531/94) at Sridhar, District Narsinghpur, Madhya Pradesh was selected as sample. The Sample was further divided in two groups as per performance outcomes in competition one is successful kabaddi players as their team had won the first, second and third place and other one is non-successfulkabaddi players as their team had not won any place in All India Invitational Kabaddi Tournament 2010. Psychological Performance Inventory was administered to measures the mental toughness to the both group in this study. Analysis of the fundamental areas of mental toughness revealed that the successful kabaddi players scored significantly higher on all subscale of mental toughness and significant differences were observed between two groups (successful and non-successful) on all subscale of mental toughness (p=0.05). Early stage of the league towards winning among Malaysian football players. The instrument used in this study was the questionnaire of *Psychological Performance Inventory (PPI),* Lower, 1986. The difference between the mental toughness between the categories of elite and non-elite, professional and amateur players was measured. Other than that, the relationship between the players' category, status and achievement with the seven dimension of mental toughness (Self-confident (SC), Negative energy control (NE), Attention control (AT), Visual imagery control (VI), Motivational (MT), Positive energy control (PE) and Attitude control (AC) was evaluated. The results from the descriptive analysis showed that the mental toughness of Malaysian football players is at an excellence level.

Hartsburg, Scherer, Viselike, and Vernon (2009): recently provided support for the psychometric properties and factor structure of the MTQ48, using both exploratory and confirmatory factor analysis, to assess MT. In their study with monozygotic and dizygotic twins (Clough *et al.*2002).

Horsburgh*et al.* (2009) found that the scales of the MTQ48 correlated significantly with the big five factors of personality and that differences in MT were the result of both genetic and non-shared environmental factors. This provides some support for Clough et al.'s hypothesis that MT can be considered a personality trait. Furthermore, good support exists for the construct validity and criterion validity of the MTQ48 in sport

This study investigated the relationship between mental toughness (MT), stress, stress appraisal, coping strategies and coping effectiveness in the context of sport. Most research concerning MT in sport has been exploratory in nature, whereby researchers have explored athletes' understanding of this construct (e.g., Jones, Hinton, & Connaughton, 2007). However, such research has failed to utilize existing psychological theory (Gucciardi, Gordon, &Dim mock, 2009). An exception has been the work of Clough, Earle, and Sewell (2002) who conceptualized MT from both the athlete and established psychological theory. MT in their view is a trait like construct that shares similarities with hardiness (Cobias, 1979). Hardiness is characterized by three main components: control of various life situations; commitment, being when one tends to involve him/herself in the action they are doing; and challenge, the extent to which individuals see challenges as opportunities based upon their research.

Clough *et al.* (2002) extended the work of Kobasa and added a fourth factor: confidence. This addition is consistent with the extant literature on MT, which suggests that self-confidence and the belief in one's ability is considered the most important characteristic of MT in sport (e.g., Gucciardi*et al.*, 2009 and Jones *et al.*, 2007).

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur 591 302 Dist. Bel

Loehr, 1986 studies the mental toughness and its influence on performance outcomes in competition. For this study 72 Male Kabaddi Players of different level competing in All India Invitational Kabaddi Tournament Organized by SahyogKridaMandal, (Registered Sports Organization, Registration no. JN 1531/94) at Sridhar, District Narsinghpur, Madhya Pradesh was selected as sample. The Sample was further divided in two groups as per performance outcomes in competition one is successful kabaddi players as their team had won the first, second and third place and other one is non-successfulkabaddi players as their team had not won any place in All India Invitational Kabaddi Tournament 2010. Psychological Performance Inventory was administered to measures the mental toughness to the both group in this study. Analysis of the fundamental areas of mental toughness revealed that the successful kabaddi players scored significantly higher on all subscale of mental toughness and significant differences were observed between two groups (successful and non-successful) on all subscale of mental toughness (p=0.05). Early stage of the league towards winning among Malaysian football players. The instrument used in this study was the questionnaire of *Psychological Performance Inventory (PPI),* Lower, 1986. The difference between the mental toughness between the categories of elite and non-elite, professional and amateur players was measured. Other than that, the relationship between the players' category, status and achievement with the seven dimension of mental toughness (Self-confident (SC), Negative energy control (NE), Attention control (AT), Visual imagery control (VI), Motivational (MT), Positive energy control (PE) and Attitude control (AC) was evaluated. The results from the descriptive analysis showed that the mental toughness of Malaysian football players is at an excellence level.

Hartsburg, Scherer, Viselike, and Vernon (2009): recently provided support for the psychometric properties and factor structure of the MTQ48, using both exploratory and confirmatory factor analysis, to assess MT. In their study with monozygotic and dizygotic twins (Clough *et al.*2002).

Horsburgh*et al.* (2009) found that the scales of the MTQ48 correlated significantly with the big five factors of personality and that differences in MT were the result of both genetic and non-shared environmental factors. This provides some support for Clough et al.'s hypothesis that MT can be considered a personality trait. Furthermore, good support exists for the construct validity and criterion validity of the MTQ48 in sport

This study investigated the relationship between mental toughness (MT), stress, stress appraisal, coping strategies and coping effectiveness in the context of sport. Most research concerning MT in sport has been exploratory in nature, whereby researchers have explored athletes' understanding of this construct (e.g., Jones, Hinton, & Connaughton, 2007). However, such research has failed to utilize existing psychological theory (Gucciardi, Gordon, &Dim mock, 2009). An exception has been the work of Clough, Earle, and Sewell (2002) who conceptualized MT from both the athlete and established psychological theory. MT in their view is a trait like construct that shares similarities with hardiness (Cobias, 1979). Hardiness is characterized by three main components: control of various life situations; commitment, being when one tends to involve him/herself in the action they are doing; and challenge, the extent to which individuals see challenges as opportunities based upon their research.

Clough *et al.* (2002) extended the work of Kobasa and added a fourth factor: confidence. This addition is consistent with the extant literature on MT, which suggests that self-confidence and the belief in one's ability is considered the most important characteristic of MT in sport (e.g., Gucciardi*et al.,* 2009 and Jones *et al.,* 2007).

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur 591 302 Dist. Bel

Manicure, R. and Panole, S.K. (1977), in their study on "Self-confidence of adolescents in relation to their Academic achievement" revealed that there is no significant correlation between academic achievement and Self Confidence. However, significant differences were observed in the academic achievement to the high and low self-confidence groups.

The purpose of this study is to examine the mental toughness perceived by selected the National football players. A sample of twelve Malaysian footballers (current and ex-players), aged 19 to 57 years old agreed to participate. All of them have been playing in the Malaysia National Football League that consists of four former national footballers, four former state footballers and four currently active footballers. Among them, five individuals are active as a coach. A semi-structure interview scheduled was used in the research. All of the respondents have signed the informed consent letter for tape-recorded during the interviewed. The transcribed verbatim from the tapes were content analyzed by the authors to identify the themes. Results show that eight themes emerged from the interviews, which are motivation, negative energy, self-confidence, positive energy, visual and imagery control, patriotic spirit, perseverance and attention control. Almost all of the themes have been identified by previous researchers (i.e., Fourie & Potgieter, 2001; Jones, Hanton & Connoughton, 2002; 2007; and Lower, 1986), except for patriotic and perseverance. Recommendations for further research also suggested.

Lower (1986) defines mental strength as the ability to perform consistently at the optimum level during the competition when needed. There are seven (7) components of mental toughness, 1) Self-confident 2) Negative energy control 3) Focus control 4) Imagery and visualization 5) Motivation level 6) Positive energy control and 7)Cognitive and behavioral control. However, in Fourier and Potgieter (2001) study done among 131 expert coaches (in certain sports specifically) and 160 athletes from elite groups found that there are 12 components of mental toughness. The components are motivation, coping skill, confident maintenance, cognitive skill, discipline and goal directedness, competitiveness, possession of prerequisite physical and mental requirement, team unity, preparation skill, psychological hardiness and ethics.

Definition and description of mental toughness

In fact, Gould *et al.* (1987) conducted a study in which 82% of coaches rated mental toughness as the most important psychological attribute or characteristic in determining success in wrestlers. Unfortunately, the results also showed that only 9% of those same coaches had been successful in developing mental toughness in their Athletes. "The general lack of clarity and precision surrounding the term mental toughness is unfortunate, since it is arguably one of the most important psychological attributes in achieving performance excellence" (Jones et al., 2002, p. 206). Mental toughness is a term that is used daily in physical activity without a clear understanding of its meaning or components. This lack of clarity regarding the definition and the desired attributes of mental toughness has resulted in wide interpretations and confusion (Jones et al.). Much of the confusion is a consequence of the failure of previous literature to distinguish between mental toughness and the attributes of mental toughness (Jones et al.). In an attempt to address this lack of clarity, a study was done in 2002 by Jones, Hanton and Connaught on. The purpose of this study was to conduct an investigation which attempted to define and identify the key attributes of mental toughness (Jones *et al.*). This study utilized qualitative methods in order to probe the athletes and establish detailed.

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur 591 302 Dist. Belgaum

The mind-body connection is a very powerful one. For everything one thinks in the mind, the body has a reaction; regardless of whether it is real or imagined (Sugar man, 2007). Competition is tight, athletes are physically fit, and the margin for victory is slim. According to Sugar Man (2007):

Managers, coaches and players are realizing that to get ahead they need an added resource, and that resource is a trained mind. When there are two teams that are physically equal, it is the team that works together smoothly and is mentally prepared and confident that will come out on top. However, no mental training will compensate for ineffective technique. Athletes need to be strong, technically and mentally. (p. 1) 6.

Many coaches have progressed as far as they could in the physical aspects of training and are now coming to grips with and beginning to make steady headway in the mental aspects. Coaches desire a mentally tough athlete; mental toughness plays a crucial role in clutch situations (Best, 1999).

According to Creasy, et.al. (2008), the formal definition of mental toughness was described as an athlete having the natural or developed psychological edge that enables them to generally cope better than their opponents with the many demands (competition, training, lifestyle) that sport places on a performer; specifically be more consistent and better than their opponents in remaining determined, focused, confident, and in control under pressure. Mental training toughness is achieved through mental training

Athletes who demonstrate peak performance in sports follow a set of mental processes that allow them to produce excellent results consistently (Dalloway, 2008). To perform at a level that matches their potential, athletes need to understand their mental strengths and weaknesses. Consistency in performance, rate of athletic development, and the joy and sense of achievement from athletic performance and competition are enhanced by awareness of mental strengths and weaknesses. The use of mental training skills serves as powerful techniques in reaching a high level of mental toughness (Lefkowits & McDuff, 2002).

Mental toughness is probably one of the most used but least understood terms used by sporting communities globally (Gordon, 2005). According to the existing literature regarding collegiate athletics' relationship with mental training and motivation have been most commonly associated with the concept of mental training and/or mental toughness (Creasy *et al.,* 2008; Fourier & Potgieter, 2001; Jacobin, Peter, Roper, Whitney, & Burin, 2002; Gordon, 2005; Gould, Dieffenbach, & Moffett, 2002; Hoover, 2006; Jones, Hinton, & Connaughton, 2002; Lower, 1982; Middleton, Marsh, Martin, Richards, & Perry 2004a, b, c).

The foundation of the existing literature on mental toughness dates back seven years to the study conducted by researchers Jones, Hinton, and Connaughton (2002). Ten international performers participated in focus groups or one-on-one interviews from which the definition and attributes of mental toughness emerged. Jones et al. (2002) defined mental toughness as having the natural or developed psychological edge that enables athletes to generally cope better than opponents with the many demands (competition, training, lifestyle) that sport places on a performer. Specifically, the purpose is to be more consistent and better than their opponents in remaining determined, focused, confident, and in control under pressure (2002). As a result of the qualitative study, a list of 12 attributes of the ideal mentally tough performer emerged:

Gould, Dieffenbachia and Moffett (2002) endeavored to define the term mental toughness by researching the psychological characteristics, and their development, of Olympic champions as. Interview data and questionnaire were both used from 10 Olympic champions (who have

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur-Dist. Belgaum

won 32 Olympic medals collectively), their coaches, parents/guardians and/or significant others. The following definition, similar to that of the Jones et al. (2002) definition, emerged as a result of the study:

Mental toughness is having the natural or developed psychological edge that enables athletes to generally cope better than opponents with the many demands (competition, training, and lifestyle) that sport places on a performer; specifically, be more consistent and better than opponents in remaining determined, focused, confident, and in control under pressure. (pg. 209)

Mental toughness is undoubtedly an important ingredient of athletic success, whether athletes are in the pool, on the field, or on the court. Some concepts addressed in the literature that are related to mental toughness include learned helplessness, dispositional optimism, self-efficacy, and resiliency. These themes were used in previous research by Cherry (2003) to develop a mental toughness questionnaire comprised of three components: Competitive desire, self-confidence, and resiliency. In this chapter, previous research on learned helplessness, dispositional optimism, self-efficacy, resiliency, and past measures of mental toughness are discussed. A number of qualitative studies have suggested that mentally tough athletes cope more effectively than less mentally tough athletes (Jones *et al.,* 2007and Thelwell*et al.,* 2005). Indeed, the six professional soccer players in the Thelwell*et al.* (2005) study felt that being mentally tough always helped them to cope more effectively. However, it is unclear whether mentally tough athletes cope more effectively as a consequence of experiencing dissimilar stressors types, interpreting these stressors in a different way (e.g., stress intensity variations or different perceptions of control over the event), use different coping strategies, or the same coping strategies, but more effectively than athletes who are less mentally tough.

James (1890) in his "Principles of Psychology" defined self-esteem as being the sum of our successes divided by our pretentions i.e. what we think we ought to achieve. Self-esteem can be increased by achieving great successes and maintained by avoiding failures. Raised self-esteem could, he argued, also be achieved and maintained by adopting less ambitious goals. Self-esteem was therefore defined as being competence-oriented but also open to change.

CHAPTER III

Methodology

In this chapter selection of the subjects, selection of the variables, procedure followed to collect the data were explained.

Selection of the subjects

Forty two subjects from two colleges of physical education were selected as subjects for study. University College of Physical Education (UCPE) Karnatak University and Sree Siddagangamata Physical Education College (SCPE) were the institutions identified from Dharwad Karnataka Universite and Tumkur Universitie respectively. The students were pursuing BPEd Degree during the academic year 2014-15.

Variables of study

Achievement motivation (html document, 2013) (annexure I), mental toughness(annexure II) developed by Goldberg (1998) and questionnaire (annexure III) formulated by Sullivan and Felts (2005) were used to test the motivation and mental toughness of the selected subject. The questionnaires were standardized questionnaires.

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur 591 302 Dist. Belgaum

Phalanx: A Quarterly Review for Continuing Debate
Vol-17, No-2, April-June, 2022
(UGC Care Listed Journal) ISSN: 2320-7698

Orientation of the study to Subjects

To achieve the purpose of the study subjects were oriented about the test at different stages of administration. The meaning of different words and statement in the questionnaire were explained to the subjects as and when they got they were clarified. The achievement motivation and mental toughness questionnaires were administered to the trainees at the respective colleges during the class hours by taking prior permission from the authorities.

The questionnaires were handed over to the subjects and asked to answer all the questions without omitting any question. Before collecting the questionnaires all the statements were checked whether they have answered or not. The scoring was done by the answer keys suggested by respective authors.

The Analysis of Data

The data collected from the subjects were treated with the statistical techniques. The scores was compared by getting mean difference between two groups. 't' test scores were obtained by using SPSS package (17^{th} Version). The results, interpretations and findings of study discussed in chapter IV.

CHAPTER IV

Analysis, Interpretation and Results of Study

The study was to identify the levels of motivation and mental toughness of Karnatak University, University College of Physical Education, Pavatenagar and Sree Siddaganga College of Physical Education, Tumkur college students pursuing BPEd Degree during the academic year 2014-15.

The descriptive statistics of psychological variables of UCPE and SCPE students are given in table 1.

Table 1. DESCRIPTIVE STATISTICS OF PSYCHOLOGICAL VARIABLES OF UCPE AND SCPE PHYSICAL EDUCATION STUDENTS

Variable	Range	Mean	Std. Deviation
UCPEMOT	8.00	12.83	1.62
SCPE Mot	11.00	10.76	2.26
UCPEMT	12.00	14.30	2.71
SCPEMT	10.00	13.83	2.41
UCPE Anger	15.00	33.73	3.74
SCPE Anger	12.00	36.40	2.92
UCPE Confusion	23.00	33.76	4.76
SCPE Confusion	17.00	36.80	3.65
UCPE Depression	17.00	35.42	3.75
SCPE Depression	22.00	33.90	4.84
UCPE Fatigue	16.00	35.02	3.98
SCPE Fatigue	23.00	33.71	4.43
UCPE Tension V	25.00	32.42	5.46
SCPE Tension V	23.00	32.54	5.14

Analysis of table one reveals that motivation levels of UCPE students average is 12.83 (SD=1.62) range was 8.00. Motivation levels of SCPE students average 10.76 (SD=2.26) range was 11.00 which speaks of normal distribution in favorable of UCPE physical

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur 591302 Dist. Belgaum

education students. Analysis on mental toughness UCPE physical education students average is 14.30 (SD=2.71) range was 12.00. Mental toughness SCPE physical education students average 13.83 (SD=2.41) range was 10.00 which speaks of normal distribution in favorable of UCPE physical education students. Because range & S D was less when compare to UCPE physical education students.

Analysis of table reveals that anger UCPE physical education students average is 33.73 (SD =3.74) range was 15.00 anger SCPE physical education students average 36.40 (SD =2.92) range was 12.00 which speaks of normal distribution in favorable of UCPE physical education students, because range & SD was less when compare to UCPE physical education students.

Analysis of table reveals that confusion UCPE physical education students average is 33.76 (SD =4.76) range was 23.00. Confusion SCPE physical education students average 36.80 (SD =3.65) range was 17.00 which speaks of normal distribution in favorable of UCPE physical education students, because range &SD was less when compeer to UCPE physical education students

Analysis of table reveals that depression UCPE physical education students average is 35.42 (SD =3.75) range was 17.00 depression SCPE physical education students average 33.90 (SD =4.84) range was 22.00 which speaks of normal distribution in favorable of SCPE physical education students, because range &SD was less when compare to SCPE physical education students

Analysis of table reveals that fatigue UCPE physical education students average is 35.02 (SD =3.98) range was 16.00. Fatigue SCPE physical education students average 33.71 (SD =4.43) range was 23.00 which speaks of normal distribution in favorable of SCPE physical education students, because range &SD was less when compare to SCPE physical education students

Analysis of table reveals that tension and vergers UCPE physical education students average is 32.42 (SD =5.46) range was 25.00. Tension and vergers SCPE physical education students average 32.54 (SD =5.14) range was 23.00 which speaks of normal distribution in favorable of UCPE physical education students, because range & SD was less when compare to UCPE physical education students.

Paired sample 't' test results are predicted in table 2.

Table 2. PAIRED SAMPLE T TEST OF UCPE AND SCPE PHYSICAL EDUCATION STUDENTS

VARI ABLE		Paired Differences			95% Confidence Interval of the Difference		T*	df	Sig. (2-tailed)
		Mean	Std. Deviation	Std. Error Mean	Lower	Upper			
Pair 1	UCPEMOT – SCPE Mot	2.07143E0	2.85753	.44093	1.18096	2.96190	4.698E0	41	**.000**
Pair 2	UCPEMT - SCPEMT	.47619	3.87133	.59736	-.73020	1.68258	.797	41	.430
Pair 3	UCPE Anger – SCPE Anger	-2.66667E0	5.17342	.79828	-4.27882	-1.05452	-3.341E0	41	**.002**
Pair 4	UCPE	-	6.34747	.97944	-	-	-	41	**.003**

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur 59 302 Dist. Belg

	Confusion – SCPE Confusion	3.04762E0			5.02563	1.06961	3.112E0		
Pair 5	UCPE Depression – SCPE Depression	1.52381E0	6.10173	.94152	-.37762	3.42524	1.618E0	41	.113
Pair 6	UCPE Fatigue – SCPE Fatigue	1.30952E0	6.38400	.98507	-.67987	3.29892	1.329E0	41	.191
Pair 7	UCPE Tension V – SCPE Tension V	-.11905	6.66700	1.02874	-2.19663	1.95854	-.116	41	.908

't' ratio table value- 2.0 at 0.05 level of significance

Analysis of table two reveals that the physical education students of both the colleges differed significantly in achievement motivation and two sub-variables of there was no significant difference between two college students in mental toughness variable. Introspection of the results depict that the achievement motivation of UCPE students (mean=12.83) was at higher level when compared to SCPE students (mean=10.76). 't'=4.69 value is higher than the table value and hence it was significant.

This is quite natural that the university college has got better system of students' entry into the course than private organization. Mores ever, the faculty, the facilities at Karnatak University are better when compared to SCPE college faculty. Most of the faculty of the university is with doctorate degree holders with lots of experience in the field. Whereas, SCPE faculty are young and upcoming needs lots of experience in the field. This may be the indirect cause for better achievement motivation levels of UCPE students.

The encouragement of staff in both the colleges seems to be very good and both the colleges students had almost similar levels of mental toughness and hence the 't' valued obtained was insignificant in respect of this psychological variable.

In both the variables the UCPE students were better psychologically balanced than SCPE students. Again the aforesaid reasons would give probable answer to the fact. When the students are satisfied with their college as regard their learning process, when their requirements are fulfilled they will not worry much regarding their studies. If any disturbances are there then only they start expressing their anger or sometimes they are confused.

The results clearly depicts that there is no differences in mental toughness variable of UCPE and SCPE college students. There was a significant difference in achievement motivation levels of both the groups of study. Overall variable showed no significant difference between UCPE and SCPE college students, whereas, anger and confusion sub variables did differ significantly with that of UCPE and SCPE students and UCPE students had better control over their anger and they were less confused when compared to SCPE students.

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur 591 302 Dist. Belgaum

Phalanx: A Quarterly Review for Continuing Debate
Vol-17, No-2, April-June, 2022
(UGC Care Listed Journal) ISSN: 2320-7698

CHAPTER - V

Summary, Conclusion and Recommendations

Summary

The purpose of this study was to evaluate and compare the selected psychological variables this purpose the investigation was conducted on (42) forty two Karnatak University, university college of Physical Education students Dharwad and (42) forty two Sree Siddaganga College of Physical Education student of Tumkur University.

The standard questionnaire of motivation and mental toughness was used for the collection of the data .The data thus collected was statistically treated by t-test to know the significant differences between means.

Findings

The results clearly depicts that there is no differences in mental toughness variable of UCPE and SCPE college students. There was a significant difference in achievement motivation levels of both the groups of study. Overall variable showed no significant difference between UCPE and SCPE college students, whereas, anger and confusion sub variables did differ significantly with that of UCPE and SCPE students and UCPE students had better control over their anger and they were less confused when compared to SCPE students.

Conclusions

The following conclusions may be drawn from the result presented in the previous chapter, On the basis of the finding of the study.

The present study examined the motivational characteristics of students involved in physical education at the upper elementary school level. We clearly identifies representative of a highly intrinsically motivated group and a low intrinsically and extrinsically motivated group, significant differences were found between these two profiles in enjoyment.

- There was significant difference in motivation levels between UCPE and SCPE college physical education students.
- There was no significant difference in mental toughness between UCPE and SCPE college physical education students.
- Overall variable showed no significant difference between UCPE and SCPE college students, whereas, anger and confusion sub variables did differ significantly with that of UCPE and SCPE students and UCPE students had better control over their anger and they were less confused when compared to SCPE students.

Recommendations

On the basis of the present research and findings, of the study, below mentioned recommendation are made.

1. It is recommended that similar study may be conducted to deferent age groups
2. Same study may be conducted on larger sample
3. The same study may be conducted on the students who were not considered in this study.
4. Similar study may be conducted deferent levels.

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur-591 302 Dist. Bel

References

1. http://dx.doi.org/10.1016/j.ypmed.2003.12.007, How to Cite or Link Using DOI
2. http://heb.sagepub.com/content/26/1/12.short
3. http://heb.sagepub.com/content/26/1/72.short
4. http://her.oxfordjournals.org/content/3/3/283.short
5. http://journals.lww.com/nursingresearchonline/Abstract/1998/05000/Older_Adults_and_Exercise__Path_Analysis_of.9.aspx
6. http://ozgurzan.com/management/management-theories/theories-about-motivation/
7. http://psychsocgerontology.oxfordjournals.org/content/51B/4/S183.short
8. http://serc.carleton.edu/NAGTWorkshops/affective/efficacy.html
9. http://www.cabdirect.org/abstracts/19981813020.html;jsessionid=91B1C9F1B7A8304950668EC034226BF6?gitCommit=4.13.29
10. http://www.eqp.com/pubs/rb/articles/mentaltoughness.php
11. http://www.gifted.uconn.edu/siegle/selfefficacy/section1.html
12. http://www.ncbi.nlm.nih.gov/pmc/articles/PMC2435261
13. http://www.psychosomaticmedicine.org/content/60/4/473.short
14. http://www.tandfonline.com/doi/abs/10.1080/02701367.2001.10608931
15. Permissions & Reprints

Appendix I

A COMPARATIVE STUDY OF MOTIVATION AND MENTAL TOUGHNESS BETWEEN KARNATAK UNIVERSITY AND TUMKUR UNIVERSITY PHYSICAL EDUCATION GRADUATE STUDENTS

Name :

Age :

College :

Motivation Questionnaire

Read each statement and answers true are false to indicate if that statement generally describes you.

1	People who work so hard they make the rest of us look bad really bother me	True	False
2	I like taking risks	True	False
3	I ask others for advice even if I think I know the answer, because it is always better to be safe than sorry	True	False
4	I like it when people say in front of others that I am doing a good job	True	False
5	I dislike entering a room full of strangers and trying to connect	True	False
6	If you met me, you would say that I get on well with other people	True	False
7	I would be more successful, but others try to disrupt my plans	True	False

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce Colle
Khanap 302 Dist. Be

8	in a tight situation, I like it when I am in charge and the blame or praise will come to me	True	False
9	I enjoy spending much of my time alone	True	False
10	I like being independent	True	False
11	In fantasies about my career, often I am in a group and they are praising me	True	False
12	Life would be better if more people stuck their business so I could stick to mine	True	False
13	I am basically a competitive person and compete just for the sake of competing	True	False
14	people do not like to admit it, but success in life has less to do with hard work and more to do with luck and being in the right place at the right time	True	False
15	Having good friends is important, but I could quickly make new ones If I had to	True	False
16	when it is possible to avoid conflict, I do so	True	False
17	Most people who know me say I am ambitious	True	False
18	If jobs and money are on the line. It is a good idea to let Someone else be in charge, in case things go sour	True	False
19	If I knew others disapproved of my actions, it would cause me to rethink my plans	True	False
20	Being part of a team at work is less important than doing good work on your own	True	False
21	I regularly list my goals where I can see them during the day	True	False
22	Most evenings, I kick back and relax rather than prepare for the next day's tasks	True	False

Appendix II

Mental Toughness Questionnaire

1	I frequently worry about mistakes	True	False
2	I get really down on myself during performance I mess up	True	False
3	Lt is easy for me to let go of my mistakes	True	False
4	lf I start out badly. It's hard for me to turn my performance Around	True	False
5	I get distracted by what the coach thinks whenever I screw up	True	False
6	I bounce back quickly form setbacks, bad breaks and mistakes	True	False
7	I do my best when there's more pressure on me	True	False
8	I get too nervous to really perform to my potential	True	False
9	I do better in practice than I do when it really counts the most	True	False
10	I tend to get easily psyched out or intimidated	True	False
11	I can keep myself calm and composed under pressure	True	False
12	I don't want the ball /dread competing at "crunch time." (Big game /race)	True	False
13	The coach's yelling knocks me off my game	True	False
14	I tend to get easily distracted	True	False
15	Certain opponents can get into my head and throw me off my game	True	False

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur-590 302 Dist. Belgaum

16	Lousy playing conditions (weather, field conditions, temperature, etc.) negatively affect me	True	False
17	I have no trouble focusing on what's important and blocking everything else out	True	False
18	I think too much about what could go wrong right before and during performance, (the "what ifs")	True	False
19	one or two failures do not shake my confidence	True	False
20	I tend to compare myself too much with teammates and opponents	True	False
21	I rather compete against a better opponent and lose than go up against a weaker opponent and win	True	False
22	I am a confident and self-assured athlete	True	False
23	I tend to too negative		
24	I have trouble dealing with negative self-talk (thoughts)		
25	I get more motivated after failures and setbacks		
26	It's easy for me to consistently train at a high level of intensity		
27	I think about how today's practice will help me get to my goals		
28	I find myself just going through the motions a lot on practice		
29	I have clear goals that are important for me to achieve		
30	I am a highly motivated athlete		

Appendix IV

Achievement Motivation Scoring

Interpretation

22-20: high need for achievement

19-17: moderate need for achievement

16-10: average need for achievement

9-6: moderately low need for achievement

<5: low need for achievement.

Mental Toughness Scoring

Section 1, questions 1-6 deal with reboundability or your skill at mentally bouncing back from setbacks and mistakes. Mental toughness depends on your ability to quickly leave your mistakes and failures behind you. Hanging onto your mistakes will get you into big trouble, performance-wise. Athletes, who dwell on their mistakes while the competition continues, end up making more. Score 1 point for each of the following answers

1. F
2. F
3. T
4. F
5. F
6. T

Section 2, questions 7-12 deal with the ability to handle pressure. Without the ability to stay calm in the clutch, an athlete will always underachieve. Peak performance demands that you

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur 591 302 Dist. Belgaum

are relaxed once the performance begins. While a little ousness is critical for getting 'up" for a game/match/race and performing at your I, ("good nervousness") too much nerves ("bad nervousness") will tighten your soles and send your performance down the tubes. Score I point for each of the lowing answers:

7. T
8. F
9. F
10. F
11. T
12. F

Section 3, questions 13-18 deal with your concentration ability. In every sport, your ability to focus on what's important and block out everything else is one of the primary keys to performance excellence. Poor concentration is the major reason why Athletes choke and get stuck in performance slumps. Getting psyched out or intimidated is a direct result of concentrating on the wrong things. Score 1 point for each of the following answers:

13. F
14. F
15. F
16. F
17. T
18. F

Section 4, questions 19-24 deal with your Level of confidence and the factors that affect confidence. One characteristic of the mentally tough athlete is he/she possesses a confidence level that seems to be unshaken by setbacks and failures. Under the pressure of competition, low confidence will neutralize natural ability, hard work and talent. Similarly, high confidence will enhance an athlete's taming and God-given talents, lifting their performance to the next level. Score 1 point for each of the following answers:

19. T
20. F
21. F
22. T
23. F
24. F

Section 5, questions 25-30 deal with motivation. Motivation is the fuel that will drive your training to a successful completion and the accomplishment of your goals. Without adequate motivation athletes get stuck having "permanent potential." Without motivation you won't put in the work necessary to became a winner. Your motivation allows you to pick yourself up after a setback and keep going. Score 1 point for each of the following answers:

25. T

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur 591302 Dist. Belgaum

26. T

27. T

28. F

29. T

30. T

Interpretation

A score of 6 in any one of the five sections indicates a special strength in that area. A 5 indicates solid skill and 4 or less highlights that particular area as a mental weakness that needs to be addressed. For example a "6" in "reboundability" indicates consistent ability to bounce back quickly from mistakes, failures and losses. A score of "2" or 3 in section #2, handling competitive pressure, indicates the need for arousal control/relaxation training. Low scores in each section high light problem areas. These "mental weaknesses" should then form mental training goals for you to help raise your overall performance to the next level. For example, a low score in the concentration section means that some of your poor performance is a direct result of your inability to control your focus of attention before and/or during competition. By puffing some time and energy into practicing concentration exercises you will become a better overall athlete.

A score of 26-30 indicates strength in overall mental toughness. Scores of 23-25 indicates average to moderate skill in mental toughness. Scores of 22 or below mean that you need to start puffing more time into the mental training area.

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur 59 302 Dist. Belgaum

CERTIFICATE OF PUBLICATION

This is to Certify that the article entitled

A COMPARATIVE STUDY OF MOTIVATION AND MENTAL TOUGHNESS BETWEEN KARNATAK UNIVERSITY AND TUMKUR UNIVERSITY PHYSICAL EDUCATION GRADUATE STUDENTS

Authored By

Shri. Kapildeva Anant Gurav

Published in

Phalanx-A Quarterly Review for Continuing Debate

Vol-17, No.2 (April-June) 2022

ISSN: 2320-7698 Peer Reviewed Refereed UGC Care Listed Journal

Impact Factor: 5.6

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

Phalanx
A Quarterly Review for Continuing Debate

International Journal of Early Childhood Special Education (INT-JECSE)
DOI: 10.48047/INTJECSE/V14I2.1024 ISSN: 1308-5581 Vol 14, Issue 02 2022

THE SAILOR'S SOLIDARITY WITH THE SEA IN CONRAD'S MARITIME FICTION

Mrs. Vijayalaxmi M. Tirlapur[1], Dr. Sangavikar NanasahebVasudeo[2]
[1]Research Scholar, Himalayan University,Faculty of English,Itanagar,Arunachal Pradesh.
E-mail: vmtbgm@gmail.com
[2]Research Supervisor, Himalayan University,Faculty of English,Itanagar,Arunachal Pradesh.
E-mail: drnvsangavikar@gmail.com

ABSTRACT
Both the sailor's spiritual growth via his encounter with the sublime and the sailor's separation from nature due to modern technology are discussed in this article as they relate to Conrad's marine fiction. Looks at how Conrad uses the ocean as a metaphor for survival and enlightenment. Conrad is less concerned with the fear that the sea instills in people than he is with the repercussions that the sailor must face after experiencing the sublime. In Conrad's Sea fiction, the objective of the task for the sailor is not only survival but personal development, even when the sailor faces obstacles like bad weather and illness. Conrad's writings foreshadow what has been more apparent during the twentieth and present twenty-first century: that man must alter his perspective on nature and shift his reliance with his environment in order to create a human civilization that is environmentally viable. Changing the way nature is depicted in literature is one way to begin fostering this shift in perspective. Manes claims that for the last 500 years, "Man" has been the topic of most Western discourse. This made-up persona has hidden the natural reality from view, rendering it helpless and unrepresentable.

KEYWORDS: Conrad, maritime, sea, humans, spiritual.

INTRODUCTION

It's no secret that life is tough and perilous on the open sea, the setting of many of Conrad's novels, novellas, and short tales. The vastness of the seas has served as a symbol of might and strength over the ages, but also of mystery and the fear it inspires in people. Despite centuries of exploration, the oceans remain mostly foreign to us. Because of their immense size and depths that have yet to be discovered, as well as their interaction with the equally uncontrolled forces of nature, oceans inspire awe and even dread in people due to their unpredictability and inability to be tamed. While the seas are a sign of death because of the many lives lost to them, they are also a symbol of life because of our modern understanding that all life on Earth started there.

But Conrad's depiction of the sea is optimistic, contemporary, and more sophisticated than that of the past; it is a metaphor of life rather than death. It wasn't until the seventeenth century that the anxieties and superstitions of the past were replaced with a more practical understanding of the economic success and benefits of global maritime commerce, thanks to advances in oceanography and the successful conquest and colonization of far-flung regions (Klein 4). The aesthetics of what is still today known as the sublime swiftly gained popularity in both society and marine literature, as visitors started to take pleasure in what British playwright John Dennis dubbed the "exquisite terror" of the sea.

Conrad is less concerned with the fear that the sea instills in people than he is with the repercussions that the sailor must face after experiencing the sublime. In Conrad's Sea fiction, the objective of the task for the sailor is not only survival but personal development, even when the sailor faces obstacles like bad weather and illness. Conrad's interest in the ocean has less to do with the prospect of bodily death than it does with the possibility of spiritual renewal. The sea in Conrad's writing inspires a mixture of dread and excitement, terror and elation, captivity and independence. The ocean gives Conrad's characters a special sense of independence. The sea allows the sailor to break free from the constraints of land life, test his level of self-assurance, push him to his limitations, and ultimately let him to transcend those limits. By putting the sailor in a vulnerable position, it not only exposes his deepest, darkest anxieties and traumas, but also compels him to feel emotions he has never felt before. Conrad, on the other hand, compares life on land to that of a "caged bird."

Conrad suggests that only a mariner's existence can provide the sense of awe and excitement necessary to really feel alive. Life at sea is full force, and Conrad's writings show how intuition and experience may lead to knowledge. A sailor grows in knowledge of his surroundings, his crew, and himself with each storm he weathers. Every time his spacecraft goes down, he learns again how fragile both his body and technology are. Conrad writes that the sea has more to provide than it takes away, despite the many threats faced by sailors. In light of what has been said, it should come as no surprise that the most significant aspect of a sailor's survival during a storm is not the fear and worry he or she endured during the storm itself, but rather the chance for a fresh beginning after the storm has passed.

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce Colleg
Khanapur

However, according to Conrad, it's not only experience that's important for a sailor to succeed; rather, it's a mix of experience and instinct. For "the man of masts and sails," the sea is "an intimate buddy," as described by Conrad (The Mirror of the Sea). The sailor's teacher is nature, which teaches him not only the skills necessary for maintaining a strong "connection with the sea," but also the limitations and anxieties of his own character (The Shadow-Line 7). The schooner is the foundation for the deep connection between sailor and sea in Conrad's fiction. A sailor's closest friend is his ship, therefore he has to get to know it inside and out and treat it with the respect it deserves. Conrad has learned as a sailor that nature can be both a menace and a boon, allowing him to travel across continents by boat. In the same manner that the sailor in The Shadow-Line is helpless without wind, sailors will always have a deep respect for their natural surroundings.

According to Conrad, the sailor is liberated from the whims of nature once steamships replace sailing ships as the primary means of transoceanic transport. These days, a sailor may get by without knowing how to sail or depending on the wind. While the sailor's increased autonomy helps him make better time at sea, it also removes him from the ocean. Thanks to his or her reliance on wind and favorable weather, sailors tend to be environmentally conscious people. From birth until he no longer needs it, man has a strong sense of belonging to the natural world around him. When man no longer has to rely on the laws of nature to survive, he loses touch with his natural instincts and knowledge of his surroundings. This may lead to exploitation. There is a scene in "The Mirror of the Sea" Conrad says, "[t]he machinery, the steel, the fire, the steam, have stepped in between the man and the sea [and] a] contemporary fleet of ships does not so much make use of the sea as exploit a roadway." Conrad explores the ways in which human civilization influences both nature and the interaction between humans in his writing. His fiction demonstrates how technological developments that at first glance seem like advancement end up being backwards steps.

LITERATURE AND REVIEW

Emelie Jonsson et al (2020) Critics of Joseph Conrad's novels have been at odds for over a hundred years. In general, people have seen him as either a moral relativist or a moralist. In this chapter, we'll look at how the divergent opinions may be explained by combining personality psychology, evolutionary literary theory, and historical analysis. Conrad was a part of an intellectual generation that had to deal with the emotional fallout of Darwinism for the first time. He was especially shaken by the realization that nature is amoral because of his creative neuroticism and great conscientiousness. However, he reacted with remarkable strength. He saw himself as a compassionate outsider to the immoral universe, one who would risk all for the basic moral principles he believed were inherent to all humans. His seeming moral relativism and apparent moralism both stemmed from a naturalistic worldview. He did not want to impose human morality on the natural world, nor did he reject the idea of morality as an inherent part of human nature. Heart of Darkness, Conrad's magnum opus, exemplifies his amazing harmony between human psychology and objective reality. It's a parable about coming to terms with an immoral society and adding some mythology to the post-Darwinian era.

Charlie Wesley (2015) Throughout Joseph Conrad's novella Heart of Darkness, the prospect of native opposition to colonial oppression and the fear of the collapse of colonial "order" are a constant, prolonged dread. Those who have analyzed Conrad's work have typically glossed over or minimized these markings of resistance. According to Patrick Brantlinger, most of the criticism surrounding this novella is concentrated on the European themes of the work, making Africa and its local peoples a type of background. When discussing the African indigenous in Heart of Darkness, literary critics often paint them as helpless victims rather than active characters. It is the imperial administration's duty to constantly tell itself the story of imperialism's inherent stability and superiority, and this underlying dread of local opposition is evidence of this.

Simona Klimkova et al (2015) Joseph Conrad spent twenty of his productive years working on short stories. The diversity of Conrad's canon, which spans both maritime and domestic settings, attests to his adaptability as a writer. The stories vary in quality, length, and subject matter, but they all center on the unpredictability and shadowy depths of the human mind. In this essay, we'll take a look at how Conrad paints a picture of mankind and the heart of human struggle via his fiction. Its primary focus is on Conrad's extensive use of metaphor and other figurative language, and how this contributes to the lyrical nature of his works and helps him to show the suffering and disintegration of his characters.

Victoria Cowan (2014) By applying the feminist critic Judith Fetterley's formulation of resistive reading to the colonial context, this research analyzes Joseph Conrad's Heart of Darkness using a racially ethical reading technique. Feminist practices of resistant reading may easily be adapted to the colonial environment since the structures of patriarchal and colonialist discourses are identical. This article examines Conrad's portrayal of the Congolese as barbarous, dark, animalistic, and devoid of humanity through the lens of colonialism rhetoric. This way of reading Conrad's depiction of black Africans in his novella might be useful and perhaps even important, as it would assist to stop the development of a debilitating discourse "in which the basic humanity of black people is thrown into doubt" (Achebe 346).

Li Wenjun (2022) Joseph Conrad, who was born in Poland but wrote in English, traveled extensively and encountered the culture of many other nations. His entire life he has been on the fringes, a nomadic figure with

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Co... ...rce Colleg...

no permanent home. Conrad's earlier obsession with cultural identification had a significant impact on both his personal and professional life. Even though Conrad's birthplace was Poland, he was not spiritually grown or educated there. He ultimately settled in Great Britain, where he experienced severe culture shock. Because he had dabbled on the fringes of so many various cultures, Conrad was able to evade complete subjugation to any one. His quest to become a complex composite person who draws from and integrates the best features of many different cultures has been aided by the relatively high levels of cultural awareness and sense of self that define his marginal guy. Conrad's exposure to and understanding of a broad range of civilizations allowed him to rise from obscurity to that of a lowly janitor in his conception of dualism. Conrad relies on dualism as the intellectual foundation for his ability to see and analyze the universe. Despite his Polish heritage, Conrad does not see the world just from a Polish perspective; nor does he view it solely through a Russian perspective, a French perspective, an English perspective, or any other single cultural perspective. The portrayal of "self" and "other" in this piece of jungle fiction exemplifies this dichotomy. While contrasting interpretations of Conrad's works might cause friction and misunderstanding, they can also provide useful insights and new discoveries. If we can learn to approach challenges from many perspectives, his concept of dualism may help us make sense of the current world.

THE EXPERIENCE OF ULTIMATE FREEDOM AT SEA

Conrad's appreciation for nature is grounded on his own life experiences. At a young age, he became enamored with the ocean as a means of escaping the problems at home. Joseph Conrad (1857-1924) grew up as the son of Polish nationalists and so had firsthand knowledge of imperialism. His country's territory had been divided among the Russian, Prussian, and Austro-Hungarian empires. Conrad's parents were Polish independence fighters; therefore, he was exposed to the brutality of the Russian rule at an early age. Conrad's early loss of his parents, along with the political turmoil in his family and country, led to his isolation and mental instability. 9 Reading seafaring adventures and heroic deeds as a young boy "strengthened his resolve to become a sailor," as Robert E. Kuehn puts it. Conrad knew by the time he was fourteen that he intended to spend the rest of his life at sea, and much to his uncle's dismay, he did just that in 1875.

Ian Watt writes that Conrad left a hometown "laden with memories of irreparable national and personal loss" in search of something he couldn't find there as a sailor. What Conrad really wanted was freedom, both from his traumatic past and, more likely, his traumatic future. Conrad's father's resistance to Czarist Russia and Conrad's Russian citizenship meant that he would have to serve in the Russian military for at least 25 years. As a location that belongs to everyone and to no one, the ocean provided Conrad with a new place to call home, as well as the personal freedom and tranquility he had been seeking but had been unable to find on dry ground.

Despite the fact that "[t]his liberty is not the sort that puts us beyond the force of nature, and that makes us free from every corporeal influence," the beautiful, according to Schiller's aesthetic essay "On the Sublime" (1801), "is already an expression of liberty" (n.p.). When "we feel ourselves free, since the sensual impulses are in agreement with the rules of reason," as Schiller puts it, "[i]n the presence of beauty," we may really let our guard down (n.p.). According to Schiller, the sublime and the beautiful are like two genies who follow us about "in our existence in this lesser realm" (n.p.). Through the aesthetic, man might realize a sensual and material independence that is yet constrained by nature. After having an encounter with the sublime, a person finds a newfound freedom that Schiller says transcends all bounds and causes them to abandon the material world in favor of the spiritual.

The ideal Schiller saw beauty as

leads us amidst joy and laughter, to the most perilous spots, where we must act as pure spirits and strip ourselves of all that is body [...]. Once when we are there, it abandons us, for its realm is limited to the world of sense [...]. But at this moment the other companion steps upon the stage, silent and grave, and with his powerful arm carries us beyond the precipice that made us giddy. [...] In presence of the sublime we feel ourselves sublime, because the sensuous instincts have no influence over the jurisdiction of reason, because it is then the pure spirit that acts in us as if it were not absolutely subject to any other laws than its own. (n.p.)

Schiller's concept of the beautiful and the sublime may be seen as analogous to Conrad's depiction of the ocean and the sailor's life on the high seas. When a sailor loses sight of land, he experiences a sense of freedom that reflects the exquisite serenity of his surroundings. One of Conrad's later pieces, The Shadow-Line (1915), best captures the sailor's sense of freedom and vigor in the face of an idyllic "unruffled, sun-smitten horizon." In The Shadow-Line, a young sailor must deal with the consequences of his sudden promotion to captain of a schooner, including the inevitable loss of his immaturity. The novella is named A Confession, and the first part of the confession is the narrator's decision to give up a life at sea. Despite his youth, he tries to cut ties with the ocean, but he unexpectedly finds himself at the helm of a historic sailing vessel named the Melita. The narrator concludes that his appointment as captain of the Melita and his relationship with the sea must be his destiny due to the sequence of circumstances that led to his first command.

Even more so than the beautiful, the sublime is incomparable to life on land and presents a unique set of difficulties to the seafarer. In Conrad's novels, the beautiful and freeing adventure at sea becomes a "test of

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce Colleg

manliness" when the sailor is forced to face the sublime and overcome his or her own physical limitations in order to survive (The Shadow-Line 34). Joseph Addison, an English poet and dramatist, wrote the following in The Spectator on September 20, 1712, describing the sublime nature of the ocean:

[When the sea] is worked up in a Tempest, so that the Horizon on every side is nothing but foaming billows and floating mountains, it is impossible to describe the agreeable horror that rises from such a prospect. A troubled ocean, to a man who sails upon it, [...] gives his Imagination one of the highest kinds of Pleasure that can arise from greatness. (My emphasis, qtd. in Corbin 123)

SAILING SHIPS, STEAMSHIPS, AND THE SAILOR'S DISCONNECTION FROM NATURE

Steamships began to completely replace sailing ships in the second part of the nineteenth century (Cohen 179). Conrad joined the navy in 1875, when sailing vessels were already in decline. Though he was opposed to the rise of steam travel's dominance over sail, Conrad gave it a go nevertheless. Throughout his career, Conrad looked for employment aboard steam-powered ships; Cohen claims he even looked for "work as a pilot on the Suez Canal," the man-made canal that contributed to the demise of the sailing ship. After 10 years of planning and construction, the Suez Canal was opened in November 1869, linking the Mediterranean with the Red Sea. Conrad portrays the Suez Canal as a metaphor for the end of the period of the sailing ship, despite the fact that its use as the route of choice for commercial trade ships expanded relatively slowly due to its high cost (Larabee 53-4). An Outcast of the Islands (1896), his second book, has a narrator who blames the canal for the demise of both sailing ships and the ocean's mystique.

The end of an age, represented by the demise of the sailing ship, is reached in one of Conrad's short tales. In "Youth," published in 1902, we follow the young sailor Marlow as he serves aboard the sailing ship Judea. You'll recognize this Marlow from Heart of Darkness and Lord Jim, although the events he recounts in "Youth" take place before his trip to Africa or his stay in Patusan. A young, inexperienced Marlow embarks on a journey of discovery and growth on the Judea. But the Judea is like an ancient sailing ship in her last years, going apart slowly but persistently, while Marlow is in his prime. It's important to realize that it's not mother nature but coal power that sinks the ship. The narrative opens with the Judea crashing into a steamer but escaping harm.

SUSTAINING A CLOSE RELATIONSHIP WITH NATURE

"My goal which I am striving to do is, through the force of the written word to make you hear, to make you feel—it is, above all, to make you see," Conrad writes in the preface to The Nigger of the "Narcissus" (280). Conrad wants his readers to understand the importance of unity among crew members and between the sailor and the sea for a successful journey, as well as the ultimate freedom and transcendence that can only be found at sea and not on land.

Conrad's representation of the sailor's bond with the sea should not be overlooked, despite the fact that other commentators, like Ian Watt and Cedric Watts, have focused on his subject of camaraderie among crewmembers. Conrad portrays the sailor as having a close and mutually beneficial connection with nature, one that is harmed by technological advancement and the attendant loss of sensitivity and expertise. Conrad argues that the connection between a sailor and the sea is just as vital as the link between other sailors. For his own sanity, the sailor should make the most of his innate ability to feel at one with nature. Conrad's works show that a man's sensitivity and, by extension, his femininity, which binds him to nature, is not a drawback but, on the contrary, an advantage. The natural world not only reflects man's true nature but also serves as a trusted confidante who helps him round out his understanding of the world. Ultimately, transcendence for the individual is not to be found in scientific advancement but in the brave exploration of one's own femininity and physical limits.

It's not only that Conrad vividly describes man's encounter with the sublime in his marine fiction that makes it important to us now. What makes his writings relevant now is the way in which they foretell not just modern man's alienation from nature but also the general insensitivity and mental regression that results from this alienation. Conrad's works demonstrate the value of a high sensitivity and regard for the environment and indicate the necessity for a strong interwoven connection between nature and man, not for nature's but for man's sake, rather than supporting modernity and the exploitation of nature. While nature may live independently, Conrad suggests that both physical and mental sustenance for man must come from it.

Conrad's marine novels, novellas, and short tales are environmentally oriented works and crucial for a modern ecologically viable human civilization because of his emphasis on maintaining or, if necessary, reestablishing relationship with nature. Conrad's writings do not indicate that reason should replace the sensual; rather, embracing the beautiful is equally crucial to our experience of the sublime since it is the physical world that binds humanity to nature, as the sailor discovers when confronted with the sublime. As Christopher Manes explains in his essay "Nature and Silence," which provides a brief history of nature's lack of a voice in society's discourse on it, it is not "nostalgia for an animistic past" but rather our inevitable relationship with it that "precludes a speaking world" and thus necessitates a reestablishment of communication. In no way can we discount or reject the fact that humans have always been a part of nature, and not only in the distant past.

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur

Mankind has to overcome its phobia of aligning itself with nature since doing so will not make us more primitive. Conrad shows us the road to a healthy admission and embracing of our basic roots. Conrad acknowledges throughout his writings that human beings retain certain animalistic tendencies and that this is not the condition of humanity he seeks to return to. Rather, the transcendental condition that liberates man without isolating him from his surroundings is the combination of sensation and reason. Conrad's works strive to achieve Schiller's notion of the connection of the sensual and reason since only this union can bring complete harmony to man and his relationship to nature.

CONCLUSION

This dissertation discusses Schiller's Aesthetical Essays, in which he argues that the division between our sensual and moral selves, from which we have suffered for centuries and continue to suffer today, can be healed only by allowing the fusion of our thoughts and feelings, rather than by our reverting to the primitive state of being we experienced as children in our innocent, unselfconscious mind (n.p.). Schiller believed that the ideal human condition would be achieved when both the sensual and intellectual sides of human nature were in harmony (n.p.). Conrad's sailor faces the beautiful and the sublime, exemplifying Schiller's concept of the synthesis of the intellect and the emotions. The sailor in Conrad's literature does not get "perfect knowledge" by a single encounter with the sublime, but rather through a steady diet of beautiful and sublime experiences. Scott Russell Sanders describes the environment as a "energizing medium from which human lives arise and by which those lives are linked and assessed" and authors like Conrad have given it a significant presence in their writings. Conrad established norms for an organic connection between humans and the natural world over a century ago, and maintaining nature's vitality, strength, and voice is a crucial first step on the path toward this ideal.

REFERENCE:

1. Jonsson, Emelie. (2020). Heart of Darkness: Joseph Conrad's Confrontation with Amoral Nature. 10.1007/978-3-030-46190-4_18.
2. Wesley, Charlie. (2015). Inscriptions of Resistance in Joseph Conrad's Heart of Darkness. Journal of Modern Literature. 38. 20-37. 10.2979/jmodelite.38.3.20.
3. Klimkova, Simona. (2015). A man in crisis: selected short fiction of Joseph Conrad. ArsAeterna. 7. 10.1515/aa-2015-0008.
4. Cowan, Victoria. (2014). Reading and Resisting Representations of Black Africans in Joseph Conrad's Heart of Darkness. USURJ: University of Saskatchewan Undergraduate Research Journal. 1. 10.32396/usurj.v1i1.54.
5. Li Wenjun, From Marginalism to Dualism: On Joseph Conrad's Cultural Awareness, International Journal of Literature and Arts. Volume 10, Issue 1, January 2022 , pp. 51-58. doi: 10.11648/j.ijla.20221001.17
6. Nietzsche, Friedrich. Beyond Good and Evil. Trans. Helen Zimmern. Project Gutenberg. Project Gutenberg, 7 Dec. 2009. Web. 13 Sept. 2014.
7. Nixon, Rob. Slow Violence and the Environmentalism of the Poor. Cambridge, MA: Harvard UP, 2011. Print.
8. Goethe, Johann Wolfgang von. Faust: Der TragödieersterTeil. Project Gutenberg. Project Gutenberg, 26 Jan. 2010. Web. 11 Nov. 2013.
9. Torquato Tasso. Project Gutenberg. Project Gutenberg, 9 Dec. 2003. Web. 11 Nov. 2013.
10. Descartes, René. Discourse on the Method of Rightly Conducting the Reason, and Seeking Truth in the Sciences. Project Gutenberg. Project Gutenberg, 1 July 2008. Web. 26 Nov. 2013.
11. DeLoughrey, Elizabeth and George B. Handley. "Introduction: Toward an Aesthetics of the Earth." Postcolonial Ecologies: Literatures of the Environment. Eds. Elizabeth DeLoughrey and George B. Handley. New York: Oxford UP, 2011. 3- 39. Print.
12. Darwin, Charles. The Descent of Man, and Selection in Relation to Sex. Vol. 1. 1st ed. Project Gutenberg. Project Gutenberg, 15 Jan. 2011. Web. 1 Nov. 2013.
13. The Mirror of the Sea. Lexington, KY: n.p., 2012. Print
14. Clark, Timothy. The Cambridge Introduction to Literature and the Environment. New York: Cambridge UP, 2011. Print
15. Byron, Lord. Childe Harold's Pilgrimage. Project Gutenberg. Project Gutenberg, 1 Feb. 2013. Web. 12 Oct. 2014.

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College

Certificate of Publication

INTERNATIONAL JOURNAL OF LAW, MANAGEMENT & SOCIAL SCIENCE (IJLMSS)

(International Peer Reviewed, Open Access Journal)

ISSN: 2581-3498

Ref. No. IJLMSS/014419

Date: 28/06/2022

The Board of

INTERNATIONAL JOURNAL OF LAW, MANAGEMENT & SOCIAL SCIENCE (IJLMSS)

(An Open-Access Peer-Reviewed Refereed International Research Journal)

is hereby awarding this certificate to

Vijayalaxmi M. Tirlapur, Dr. Sangavikar Nanasaheb Vasudeo

in recognition of the publication of the paper entitled

JOSEPH CONRAD'S SHORT NOVELS

Published in Volume 6, Issue 2 (2022)

Impact Factor: 2.897

Paper Code: BHARAT/01301

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur 591 302 Dist. Belgaum

Authorized Signatory

BHARAT PUBLICATION

INTJECSE
International Journal of Early Childhood Special Education

International Journal of Early Childhood Special Education
(INT-JECSE)
ISSN: 1308-5581
https://www.int-jecse.net/

CERTIFICATE OF PUBLICATION

This is to Certify the Paper entitled

THE SAILOR'S SOLIDARITY WITH THE SEA IN CONRAD'S MARITIME FICTION

Authored by

Mrs. Vijayalaxmi M. Tirlapur[1], Dr. Sangavikar NanasahebVasudeo[2]

From

[1]Research Scholar, Himalayan University, Faculty of English, Itanagar, Arunachal Pradesh.
[2]Research Supervisor, Himalayan University, Faculty of English, Itanagar, Arunachal Pradesh.

Has been published in **International Journal of Early Childhood Special Education (INT-JECSE), Vol 14, Issue 02, 2022.**

Regards;

Editorial Manager
INT-JECSE,
ISSN 1308-5581
https://www.int-jecse.net/

Scopus

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur 591302 Dist. Belgaum

ISSN 2250-169X

International Registered & Recognized
Research Journal Related To Higher Education For All Subjects

VISION

RESEARCH REVIEW

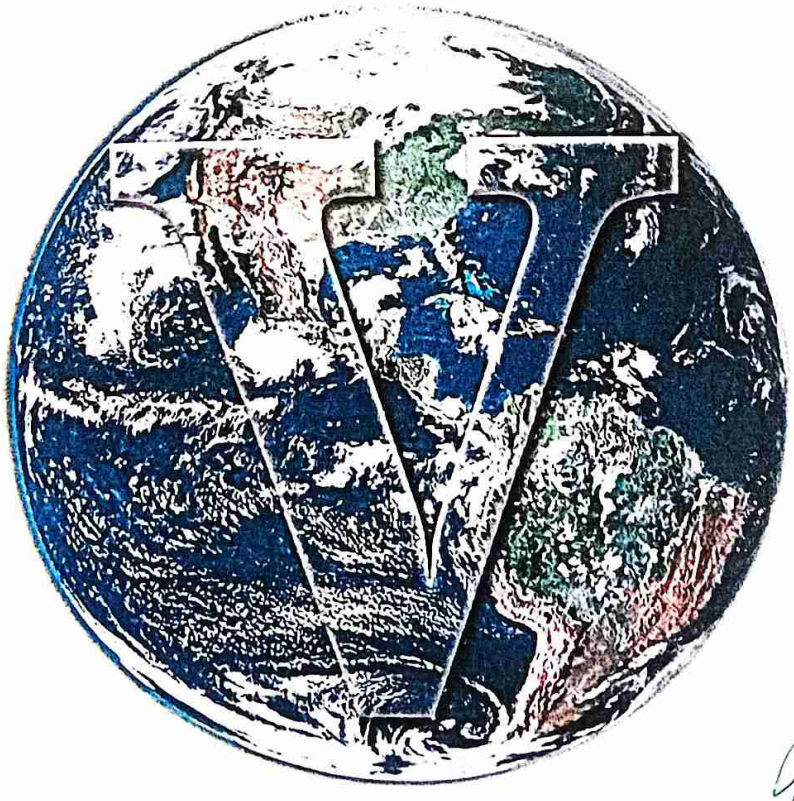

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur 591 302 Dist. Be

Issue : XXIV, Vol. V
VISION RESEARCH REVIEW
IMPACT FACTOR 6.20
ISSN 2250-169X
Dec. 2022 To May 2023

INDEX

Sr. No	Title for Research Paper	Page No.
1	The Influence of Early Blight Disease on biochemical Changes in Different Tomato Varieties **Dr. S. D. Dhavle**	1
2	Effect of Rare Earth Element Substituents (Pr^{3+} and HO^{3+}) on Structural Parameters of Cobalt Ferrites, Synthesized by SolGel-Auto-Combustion Method **Dr. Swanand S. Mukhedkar**	9
3	Evolvulus Alsinoides : An Emerging Anti-Proliferative Medicinal Herb **Dr. Mahesh S. Bachewar**	15
4	Water on Earth : Reality and Status **Dr. Sakharam Waghmare**	23
5	विशेष आर्थिक क्षेत्र आणि भारत **गणेश मधुकर बेद्रे**	30
6	पर्यटनाचे नवीन परिमाण - ग्रामीण पर्यटन **डॉ. अर्चना डी. भैसारे**	38
7	भारतीय अर्थव्यवस्थेतील बदल आणि उद्‌भवणारी आव्हाने **डॉ. मधुकर श्रीराम ताकतोडे**	42
8	निजामकालीन आर्य समाजाची चळवळ **डॉ. सुरेश नांदे**	48
9	माचीगड ते मराठीतील पहिली ऐतिहासिक कादंबरी 'मोचनगड' **प्रा. आय. एम. गुरव**	53
10	भारतीय संस्कृतीतील भाषीक सौंदर्य **डॉ. चंद्रकांत शेरखाने**	57

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur-591302 Dist. Belgaum

Issue : XXIV, Vol.V
VISION RESEARCH REVIEW
IMPACT FACTOR 6.20
ISSN 2250-169X
Dec. 2022 To May 2023

9

माचीगड ते मराठीतील पहिली ऐतिहासिक कादंबरी 'मोचनगड'

प्रा. आय. एम. गुरव
मराठी विभाग,
मराठा मंडळ कला व वाणिज्य महाविद्यालय,
खानापूर,

Research Paper - Marathi

दुर्गमतेची अभेद्य कवचकुंडले लेवून हजारो वर्षापासून मौर्य, नंद, सातवाहन, शिलाहार, चोळ, नाग, कदंब, चालुक्य, यादव, आदिलशाही पुढे मराठा साम्राज्याचा प्रत्यक्ष साक्षीदार असलेला हा खानापूर तालुका आजही अनेक राजवटींच्या असंख्य खानाखुणा जपून आहे.

माचीगड हे खानापूर शहराच्या आग्नेय टोकाकडील एक गाव. मुळात माचीगड असा या गावाच्या नावाचा उच्चार जरी झाला तरी सुज्ञ माणसाला इथे किल्ला असावा असे वाटून जाते. गडाच्या पायथ्याशी असलेले हे गाव लाल काळया कौलारू घरांनी आजही व्यापलेले आहे. गावात सुब्रमण्यम तर वेशीत कालिका, कलमेश्वर अशी प्राचीन देवालये गावाची प्राचिनता लक्षात आणतात. वर गडावर छोटेखाणी दुर्गादेवीचे मंदिर आहे. गडाची रचना अन्य गडासारखीच आढळते. यात मजबूत तटबंदी, कातीव दगडांचा वापर, कोणताच धातू अथवा अन्य गडकिल्ल्यांसारखे तटबंदीचे चुन्यामध्ये बांधकाम झालेले दिसत नाही. शिवाय दगडातच कोरलेले पाण्याचे टाके या बाबी किल्याच्या निर्मितीची प्राचीनता लक्षात आणतात. गडाच्या पूर्वेकडे प्राचीन काळातील कदंबाची दुसरी राजधानी असलेले हलशी अर्थात पूर्वीचे पलासिका हे गाव आहे. दक्षिणेकडे भगवान परशुरामाशी नाते सांगणारे घ्रामतीर्थडआहे. तर पश्चिमेकडे अनगडी, हालसाल व कापोली ही गावे आहेत. तर उत्तरेकडे गडाच्या पायथ्याशी वसलेले घ्माचीगडङ अर्थात बिजगर्णी गाव आहे.

या गावाचे पहिले नाव बिजगर्णी होय. गावात या नावाविषयी एक दंतकथा ऐकावयास मिळते की, पूर्वी बीज नावाचा राजा या माचीगड किल्ल्यावरून राज्य करत असायचा. त्याच्या नावावरून या गावाला बिजगर्णी असे नाव पडले. मात्र या दंतकथेला अनुसरून विचार केल्यास असा कोणताच या नामा संबंधित सबळ पुरावा सापडत नाही. मात्र बीजगर्णी या ग्रामनामाची अधिक चिकित्सा केल्यास ग्रामनामातील प्राचीनता लक्षात येते. मूळ संस्कृत भाषेशी नाते सांगणारा बीज हा शब्द मराठी व कन्नड भाषेत पुढे रूढ झाल्याचे स्पष्ट होते. संस्कृत भाषेतून मराठीत आलेल्या या शब्दाचा अर्थ स्पष्ट

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur-591 302 Dist. Belgaum

करताना प्र. न. जोशी लिहितात, बीज = फळाच्या आतील कठीण भाग, विजांकित, विजाक्षराने अंकित, परिवेष्टित[१] तर कन्नड शब्दकोशात बीज =विजय, विजयी होऊन येणे.[२] यातील कन्नड भाषेतील बीज या शब्दाचा अर्थ अधिक सुसंगत वाटतो. प्राचीन हलशीची ढाल बनून असलेला हा किल्ला कदंब काळात विजयाचे प्रतीक बनला असावा. त्यावरून पुढे बीजगर्णी हे नाव रूढ झाले असावे. शिवाय मराठीत लीळाचरित्रात बीजे केले या शब्दाचा उपयोग वारंवार केलेला आढळतो.

उदा.

ब्राह्मणाचेया घरां बीजे केले
म्हणे घरा बीजे कीजे
म्हणे उसने आणि ते मेळवूनी करावे बिजे शीघ्र[३]

यासारख्या दाखल्यावरून मूळ संस्कृतमधून आलेल्या या शब्दाचा वापर विशेषत्वाने होत असे हे स्पष्ट होते. यावरून कदंब काळात या परिसरात धान्यसाठा आणि तो ही पेरणीला उपयुक्त धान्यसाठा या गावाच्या परिसरात होत असावा आणि त्यावरून पुढे बिजगर्णी हे ग्रामनाम रूढ झाले असावे असे दिसून येते. या गावाचे दुसरे नाव माचीगड या ग्रामनामाची व्युत्पत्ती तपासल्यास यातून अनेक अर्थ स्पष्ट होतात. मराठी व्युत्पत्ती कोशात माची या शब्दाचा अर्थ स्पष्ट करताना माची= उंचावरील भाग[४] असे नमूद केले आहे. तर मराठी शब्दकोशात माची (स्त्री)= पर्वताच्या पायथ्या जवळील किंवा पायथा व शिखर यामधील सपाट जागा, किल्ल्याच्या तटाखालील उतरता भाग, चार खुंटावर आडवी उभी लाकडे ठेवून तयार केलेली चौकट.[५] तर शिवराम कारंत यांनी संपादीत केलेल्या कन्नड शब्दकोशात माची= पर्वताचा खालचा झाडीने व्यापलेला प्रदेश[६] असा अर्थ दिला आहे.

उपरोक्त विविध शब्दांच्या व्युत्पत्तीवरून माचीगड या शब्दाचा अर्थ स्पष्ट होतो. मात्र सुरुवातीला तर्क केल्याप्रमाणे माचीगड या गावाला मिळालेले ग्रामनाम अलीकडचे अर्थात शिवकाळातील अथवा पेशवेकालीन असावे. कारण स्वराज्याच्या साडेतीनशे गडकिल्ल्यापैकी बहुतांश गड किल्ल्यांचा आकार प्रचंड आणि विस्तीर्ण आहे. मात्र कोण्या सरदाराला हा किल्ला प्राचीन हलशी लगत असल्याने शिवाय कदंब काळात वापरला गेला असल्याने महत्त्वाचा वाटला असावा आणि माची अर्थात उंचवट्याचे ठिकाण या अर्थाने पुढे हा शब्द रूढ झाला असावा असा तर्क करता येतो. काही अभ्यासक याला मोहनगड असे नाव देऊन मोकळे झाले आहेत. मात्र पुणे जिल्ह्यात मोहनगड नावाचा किल्ला अस्तित्वात आहे. शिवाय श्री. अशोक देसाई यांनी घ्राचीन हलसी आणि देवालये या ग्रंथात हलशी, पलासिकेच्या पायाशेजारी पश्चिमेला उभा असणारा माचीगड (हणमंतगड)[७] असा उल्लेख केला आहे. मात्र हणमंतगड हा किल्ला पारगडाच्या पलीकडे सावंतवाडी नजीक अस्तित्वात असून तिथे हनुमंताचे मोठे देवालय पहावयास मिळते. त्यामुळे हनमंतगड असे या किल्ल्यास म्हणणे संयुक्तिक वाटत नाही. शिवकाळातील आजच्या उपलब्ध साधनांचा विचार केल्यास कर्नाटक प्रांतातील ७९ किल्ल्यांची यादी

Principal
Maratha Mandal's
Arts & Commerce College
Khanapur-591 302 Dist. Belgaum